

[All rights reserved by the Trustees of the Fund.]

Printed by Harshadram Yenu Shedge at the Nimayagar Press No 26-28 Kollhat Lane, Bombay

Patilbhai Jivani Panchandra Bhagobhai Shri Junalattauri Jaso Bhandar Sarat.

जीवविचारसूची ।

१	मगलापरण	गाथा १	१४	अलक्षरबालारस्यपरस्परिपञ्चौरमनुष्यमेव २० २१ २२ २३
२	जीवकेमेव	२	१५	वेषवाकामेव २४
३	पृथ्वीकायकेमेव	३-४	१६	सिद्धौकामेव २५
४	अप्यकायमेव	५	१७	पौषद्वार २६
५	अग्निकायकामेव	६	१८	क्षरीरप्रमाणद्वारअवगाहना २७-२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३
६	वायुकायकामेव	७	१९	व्यायुप्रमाणद्वार ३४-३५-३६-३७-३८-३९
७	बनस्यसिकायसाधारणमेव	८-९-१०-११-१२	२०	कायस्त्रिप्रमाणद्वार ४०-४१
८	प्रत्येकधनस्यस्त्रिमेव	१३	२१	माज्यप्रमाणद्वार ४२-४३-४४
९	सूक्ष्मवायुअरस्यरूप	१४	२२	बोमिद्वार ४५-४६-४७
१०	वेदत्रिमेव	१५	२३	सिद्धकासरूप ४८
११	वेदत्रिमेव	१६-१७	२४	संसारसरूप ४९-५०
१२	चोखिमेव	१८	२५	जीवविचारवद्वारसरूप इति । ५१
१३	पंचेद्रीमेव नारकीमेव	१९		

नवतत्त्वसूची ।

१ नवतत्त्वनाम	गाथा	१
२ नवतत्त्वभेद		२
३ पीबकामेव		३-४
४ जीवसद्यप्य पर्याप्तिमात्र		५-६-७
५ मजीबभेदस्वभावात्		८-९-१०
६ पुत्रसत्त्वरूप मुहूर्तमें भावलि		११-१२
७ काकसरूप परिलानीगाथा		१३-१४
८ पुण्यतत्त्वभेद		१५-१६-१७
९ पापतत्त्वभेद		१८-१९-२०
१० आद्यनवतत्त्वभेद		२१-२२-२३-२४
११ संवत्त्वभेद		२५ २६ २७-२८ २९ ३० ३१ ३२ ३३
१२ निरजरातत्त्वभेद		३४-३५

१३ वंशतत्त्वभेदकर्मस्वभावस्वितिजसम्बन्धोच्छ्रष्ट		३६-३७
		--३८-३९-४०-४१-४२
१४ मोक्षतत्त्वभेद मार्गणाद्यार		४३-४४-४५-४६-४७
		--४८-४९-५०
१५ सम्पत्कसरूपमाहात्म्य		५१-५२-५३
१६ पुत्रस्यपरावर्पनस्वरूप		५४
१७ १५ भेदसिद्ध		५५-५६-५७-५८-५९
१८ सिद्धिगमनप्रमाण		६०

इति ।

वृद्धकसूची ।

१ मंगलाचरण	गाथा	१
२ २४ वृद्धकनाम		२

३	भारगाथा समष्ट्यी २४ द्वार	गाथा ३-४
४	१ क्षरीरद्वार २ भवगाहनाद्वार वैक्रियसं० प्र० काष्ठ ५	
		-१-७-८-९-१०
५	३ सप्तवणद्वार	११
६	४ संसाद्वार ५ संस्नानद्वार	१२-१३
७	६ कपायद्वार ७ लेखा ८ इन्द्रियद्वार	१४-१५
८	९ १० समुद्रपथद्वार ११ दृष्टिद्वार १५-१६-१७-१८	
९	१२ वृद्धनद्वार १३ ज्ञानद्वार	१९-२०
१०	१४ योगद्वार १५ ऋष्ययोगद्वार	२१-२२
११	१६-१७ ऋष्यपाठपथद्वार	
१२	१८ स्मिदिद्वार १९ पर्योसिद्वार २४ २५-२६ २७-२८	
१३	२० किमाहाराद्वार २१ तीमसंज्ञाद्वार २९-३०-३१	
१४	२२ गसिद्वार २३ आगतिद्वार ३१-३२-३३-३४	
		-३५-३६-३७

१५	२४ वेदद्वार च पुनः अस्याननुत्वद्वार गाथा ३८-३९-४०
१६	स्युति करवामाभ ४१-४२

इति ।

जम्बूद्वीपसघयणीसूची ।

मगलापरज द्वारगाथा १	स्रबणाद्वार गाथा १-२-३-४-५
२ योजनद्वार परबिगणितपद	६-७-८-९-१०
३ क्षेत्रद्वार ४ पर्वतद्वार	११-१२
५ कूटद्वार	१३-१४-१५-१६-१७
६ तीर्थद्वार ७ भेणीद्वार	१८-१९
८ विजयद्वार ९ द्रव्यद्वार	२०
१० नवीद्वार	२१-२२-२३-२४-२५-२६
परवत्प्रमाण	२७-२८-२९

इति ।

आगमसार अनुक्रमणिका ।

विषय	पत्र	विषय	पत्र
१ त्रयकरण समस्थितज्ञाननिश्चयव्यवहारस्वरूप	५१	१ साधु भावककाव्रत "	७१
२ षट्शुभ्यकास्वरूपगुणपर्याय	५२	१० च्यार ध्यान "	७३
३ आठपक्ष स्त्रब्यादि	५४	११ भावना १२-४ "	७६
४ सातनवकास्वरूप "	५७	१२ समस्थित १० रूपि ८ गुण ५ मूयज	७७
५ च्यार निक्षेपा "	६०	१३ मिश्रयव्यवहारस्वरूप	८०
६ च्यार प्रमाण "	६६	१४ पचसमवाय "	८३
७ सप्तमंगी त्रिमगीसामान्यसुभावायतन	६६	१५ प्रस्तावना	८४
८ त्रिगोत्र विचार "	६८	१६ जपना त्रिसेपा त्रिरूपण श्रव्य रयमे अष्टुद्रि	८५

इति सूची ॥

नयचक्रसार अनुक्रमणिका

विषय	पत्र	विषय	पत्र
१ मंगलाचरण । चार छत्रयोग तथा गुणठाणा आ भीजीबन्धमेव और साधारण वैराग्य उपवेश तथा मन्त्री सामान्य विषया और मीमांसारिक अर्प यर्जनोका विचार	११	४ पंचास्त्रिकायका सामान्य विशेष धर्म	१०१
२ द्रव्यका गुणका और पर्यायका छद्मण नय निषे पादिक सहित श्लुके अन्तरभूत अम्यदर्शनीयोक्ती बन्मार्गठा इत्यादिक	१४	५ अस्त्रिस्त्रमावका छद्मण और नास्त्रिस्त्रमावका छद्मण	१०२
३ पंचास्त्रिकायक स्वरूप तथा परकेक द्रव्यका मित्र मित्र छद्मण इत्यादि	१६	६ अर्पित अनर्पितपणे एकधर्म सप्तमंगी देखाइ हे	१०५
		७ अत्यंत विस्मारसहित स्वरूपपणे सप्तमंगी देखाइ हे	१०८
		८ गुणनी सप्तमंगीबा देखाई हे	११३
		९ नित्यानित्यस्त्रमावमें और अस्त्रि नास्त्रि स्त्रमा- वमें हत्याद्वय्यका एक भेद दुसर	११४

विषय	पत्र	विषय	पत्र
१० मेष हीसुण मेष बोबा मेष पांचसा मेष छठा मेष साधना इत्यादि	११५	१२ निक्षेपाधिकार	१२७
११ एकलमात्र अनेकलमात्र मेषकामाव अनेक समाव सम्यकमात्र असम्यकमात्र एकत्र समाव अत्र- एकत्रमात्र परमलमात्र इत्यादिकर्म स्वरूप जूरा जूरा जाण्या	११८	१३ नयनानकरपेक्ष अधिकार	१२८
		१४ प्रमाणका स्वरूपके साध ज्ञानस्वरूपका लोक- काया वाणविकरण इत्यादि	१४४
		१५ पूर्वज्ञान चरित्ररूप मोक्षमार्ग निरूपण	१४७
		१६ स्फुट प्रकाशन	१५१



जीवविचारप्रकरणम् ।



प्रणम्य श्रीधर्ममानं, सर्वज्ञ सर्वदर्शिनं, क्षीयधिषारवोधोघार्यं, क्रियते लोकमापया १ व्याख्या इतिशेषः ।

भुवणपर्दैव वीर, नमिऊण भणामि अबुहवोहरथ । जीवसरूव किंचिवि, जह भणियं पुवसूरीहिं ॥१॥

(भुवणपर्दैव) तीनभुवनरूप संसारमें दीपकके समान, (वीर) भगवान् महावीरको, (नमिऊण) नमस्कार करके, (अपुहवोहरथ) अज्ञ लोगोंको ज्ञान करानेके लिये, (पुवसूरीहिं) पुराने आचार्योंनि, (जह भणियं) जैसा कहा है वैसा, (जीवसरूव) जीयका स्वरूप, (किंचिवि) संक्षेपसे (भणामि) मैं कहता हूँ ॥ १ ॥

प्रभ—जीयका स्वरूप जानतेसे क्या लाभ है ? उत्तर—उनको हम अपनी आत्माके समान समझ कर उनसे प्रतीय करें—उनको तकलीफ न पहुँचावें

1—समझकर करमाण है कि—'पहमें लाभ लगे इषी, पूरे बिहई सन्वर्तजपु । अज्ञाणीकिंचहिं ? किंवा बाहीब सेव पावर्ग ?' पहले ज्ञान होगा तब ही अज्ञिसाधर्मका पावन हो सक्त है ।

प्र०—यदि हम उनको सतावेंगे तो क्या होगा ! उ०—चे मी हूँ सतावेंगे—बदला लेंगे, इस एक कमजोर होनेके सपप ये बदला न ले सकेंगे तो दूसरे जन्ममें लेंगे

प्र०—भगवान्‌को मुयन-प्रदीप क्यों कहा ! उ०—जैसे दीपक घट-पट आदि पदार्थोंको प्रकाशित करता है वैसे भगवान्‌ सारे सत्कारके पदार्थोंको प्रकाशित करते हैं-खुद जानते हैं तथा समयसरणमें औरोंको उपदेश देते हैं-इसलिये उनको मुयन प्रदीप कहते हैं

प्र०—अज्ञ किन्‌को समझना चाहिये ! उ०—जो लोग, जीवके स्वरूपको नहीं जानते उनको आचार्य फौन है ! उ०—गौतम स्वामी, सुधर्मा स्वामी आदि

नसारिणो य, तस थावरा य ससारी । पुढवी-जल-जलण वाऊ, षणस्सई थावरा नेया ॥२॥
जीव, दो प्रकारके हैं (मुष्ठा) १ मुष्ठा (य) और (संसारिणो) २ ससारी है (तस) त्रस जीव, (य)) स्यावर जीव, (संसारी) संसारी दोप्रकारके हैं त्रसके भेद आगे कहेंगे (पुढवी जल जलण याऊ यी, जल, अग्नि, वायु और धनस्पतिको (थावरा) स्यावर (नेया) जानना ॥ २ ॥

भाषार्थ—जीवके दो भेद हैं-मुष्ठा और ससारी संसारी जीवके दो भेद हैं-त्रस और स्यावर स्यावर जीवके पाँच भेद हैं-पृथ्वीकाय, जलकाय-अपकाय, अग्निकाय-तेजःकाय, वायुकाय और धनस्पतिकाय

प्र०—जीव किसको कहते हैं? उ०—जो प्राणोंको धारण करे प्राण दो तरहके हैं, भाय-प्राण और द्रव्य-प्राण कहते हैं। चेतनाको भाव-प्राण कहते हैं। पाँच इन्द्रियाँ—आँसु, जीभ, नाक, कान और त्वचा; त्रिविध बल-मनोबल, बचनबल और कायबल, श्वासोच्छ्वास और आयु ये दस द्रव्य-प्राण हैं।

प्र०—मुक्त किसको कहते हैं? उ०—जिसका जन्म और मरण न होता हो—जो जीव, जन्म-मरणसे छूट गया हो।

प्र०—संसारी किसको कहते हैं? उ०—जो जीव जन्म-मरणके चक्करमें फँसा हो।

प्र०—अस किसको कहते हैं? उ०—जो जीव, सर्वा-गरमीसे अपना ध्याय करनेके लिये बल-फिर सके, यह अस।

प्र०—स्यावर किसको कहते हैं? उ०—जो जीव सर्वा-गरमीसे अपना ध्याय करनेके लिये बल-फिर न सके, यह स्यावर।

प्र०—पृथ्वीकाय आदिका क्या अर्थ है? उ०—कायका अर्थ है शरीर; जिस जीवका शरीर पृथ्वीका हो, यह पृथ्वीकाय; जिसका शरीर जलका हो, यह जलकाय, जिसका अग्निका हो, यह अग्निकाय; जिसका वायुका हो, यह वायुकाय; जिसका धनस्पतिका हो, यह धनस्पतिकाय।

फलित्मणि-न्युण विभुम, द्विगुल हरियाल-मणसिल-रसिदा ।

कणगाइ धाउ-सेवी-वसिअ-अरणेह्य पलेवा ॥ ३ ॥

अभय तूरी-ऊस, मही-याहाण-जाइओ गोगा । सोवीरजण-लूणा-इ, पुढवि मेआइ इच्चाई ॥ ४ ॥

(फटिक (मणि) मणि-चन्द्रकान्त आदि, (रयण) रत्न-वस्तुसम्पत्तन आदि, (विष्णुम) मृगा, (विष्णुल विहुत-शंभुर, (हरियाल) इरताल, (मणसिख) मैनसिख-मनाःशिला, (रसिंद) रसेन्द्र-पारा-पारद, (कणगाइ घाढ) कनक आदि धातु-सोना, चान्दी, साम्या, कोशा, रौंगा, सीसा और जस्ता, (सेढी) साटिका-सङ्ग्रिया, (वज्रिम) पणिका-छात रङ्गी मिट्टी, सोनागेठ (अरणेइय) अरणेइक-पत्थरोंके दुकन्डोंसे मिली हुई पीली मिट्टी, (पलेवा) पलेवक-एक किसका पत्थर ॥ ३ ॥ (अबसय) अब्रक-अबरक, (पूरी) तेजनतूरी (कसं) धारमृमिकी-असरकी मिट्टी, पापडस्थार (मही पाहाण जाइओ गोगा) मिट्टी और पत्थरकी अनेक आवियां, (सोवीरजण) सुरमा, सापरिया (लूणाई) लपण-नमक, (इच्चाई) इत्यादि (पुढविमेकाई) पृथ्वीकाय बीबोंके मेव हैं ॥ ४ ॥

सायार्थ-स्फटिक, मणि, रत्न, मृगा, विंगड, इरताल, मैनसिख, पारा, सोना, चान्दी, ताम्बा, लोहा रौंगा, सीसा-शीशा, जस्ता, लङ्गिया, सोनागेठ पापाणके दुकन्डोंसे मिली हुई पीली मिट्टी, पलेवक नामक पत्थर, अबरक, लाल रंगका सुरमा; साभर आदि नमक, इस प्रकार और भी बहुतसे पृथ्वीकाय बीबोंके मेव समझना चाहिये

प्र०-क्या इन सोने-चान्दीके गहनोंने भी जीव है? उ०-जहाँ, जब तक सोना-चान्दी खानमें रहता है

सब एक दूसरे में जीव रहता है, खानसे निकालने पर गठानसे जीव नष्ट हो जाता है इस तरह पृथ्वी का सारा पदार्थ लने तथा मिट्टियोंको पैसे घठने आदिसे मी जीव नष्ट होते हैं ।

भोमतरिखल-मुदग, ओसाहिम-करग-हरितणू महिआ । हुति घणोदहिमाई, भेआ णेगा य आउस्त ॥ ५ ॥

(भोम) भूमिका-कूआ, तालाय आदिका जल, (अंतरिखल-मुदग) अन्तरिक्षका-आकाशका जल (ओसा) ओस, (हिम) धर्फ, (करग) ओले, (हरितणू) हरित घनस्पतिके-क्षेत्रमें बोये हुए गेहूँ, जय आदिके-बालोंपर जो पानीके बूब होते हैं, वे, (महिया) महिमा-छोटे छोटे जलके कण जो घादलोंसे गिरते हैं, (घणोदहिमाई) घनोदधि आदि, (आउस्त) अप्काय जीवके, (भेआ णेगा) अनेक भेव, (हुति) होते हैं ॥ ५ ॥

भावार्थ—कूआ, तालाय आदिका पानी, घर्षाका पानी, ओसका पानी, धर्फका पानी, ओलोंका पानी, क्षेत्रकी घनस्पतिके ऊपरके जलीय कण, आकाशमें घादलोंके घिरनेपर कमी कमी सूक्ष्म जल-तुपार गिरते हैं, वे, तथा घनोदधि ये सब, तथा और मी अप्काय जीवके भेव हैं

प्र०—घनोदधि कित्से कहते हैं? उ०—स्वर्ग और नरक-पृथ्वीके आधार-भूत जलीयपिण्डको

इगाल जाल-मुम्मुर, -उफ्कासणि-कणग-विज्जुमाईआ । अगणिजिआण भेआ, नायधा निउणबुद्धीय ॥ ६ ॥

(इगाल) अंगार-ज्याहारहित काष्ठकी अग्नि, (जाल) ज्वाला (मुम्मुर) कण्डेकी अथवा भरसौंयकी गरम राक्षमे

रहनेवाले अग्नि-कण, (उष्ण) उष्ण-आकाशसे जो अग्निकी धर्या होती है यह, (असणि) अशनि-घञ्जकी अग्नि, (कणग) आकाशमें उड़नेवाले अग्नि-कण, (विज्जुमाइमा) विज्जलीकी अग्नि इत्यादि, (अगणिलिमाण) अग्निकाय-नीयोक्त (मेआ) भेद (निउणतुदीए) निपुण-दुद्धिसे-सूक्ष्म-दुद्धिसे (नायपा) जानना ॥ ६ ॥

भाषार्थ—काष्ठ आदिकी ग्वाला-रहित अग्नि, अग्निकी ग्वाला, कण्ठेकी अथवा भरसौंयकी गरम राखमें रहनेवाले अग्नि-कण, उष्णकी अग्नि, आकाशीय अग्नि-कण, वज्रकी अग्नि ये तथा अन्य मी अग्निकाय जीवोंके भेद सूक्ष्म-दुद्धिसे जानना चाहिये

उ-भामग-उक्कलिया, मडलि-मह-सुद्ध-गुजवाया य । घणतणु-वायाईया, भेया खलु धाउकायस्स ॥ ७ ॥

(उष्णामग) उष्णामक-नृण आदिको आकाशमें चढ़नेवाला धातु, (उक्कलिया) उक्कलिका-नीचे घड़नेवाला धातु, जिससे धूलिमें रेत्यापे हो जाती है (मडलि) गोलाकार घड़नेवाला धातु, (मह) महाघात-आन्धी, (सुद्ध) शुद्ध-मन्दधातु, (गुंजवाया य) और गुंजधातु-जिसमें गूँजनेकी आयाज होती है, (घणतणुवायाईया) घनघात, तनुघात आदि, खलु (धाउकायस्स) धातुकायके (भेया) भेद निश्चय है ॥ ७ ॥

भाषार्थ—आकाशमें ऊँचा घड़नेवाला, नीचे घड़नेवाला, गोलाकार घड़नेवाला, आन्धी, मन्द-धातु, गुंजाराघ कर-नेवाला धातु, घनघात, तनुघात, ये सप्त, तथा उँ मी धातुकायजीवोंके भेद हैं

प्र०—धनवात और तनुवातमें क्या फर्क है ?

उ०—धनवात जमें हुए घीकी तरह गाढ़ा है और तनुवात सपाये द्रुये घीकी तरह तरल है। धनवात स्वर्ग तथा नरक-पृथ्वीका आधार है और तनुवात नरक-पृथ्वीके नीचे है

साधारण-पचेआ, वणसइजीवा दुहा सुप भणिया। जेसिमणंताण तणु, पगा साधारणा तेज ॥ ८ ॥

(सुप) शुतमें-शाखमें, (वणसइजीवा) धनस्पति-कायके जीव, (साधारण पचेआ) साधारण और प्रत्येक ऐसे, (दुहा) दो प्रकारके (भणिया) कहे गये हैं (जेसिमणताण) जिन अनन्त जीवोंका (पगा) एक (तणु) शरीर हो, (तेज) वे (साधारणा) साधारण कहलाते हैं ॥ ८ ॥

भावार्थ—सिद्धान्तमें धनस्पतिकाय जीवोंके दो भेद कहे गये हैं—साधारण-धनस्पति-काय और प्रत्येक धनस्पति-काय जिन अनन्त जीवोंका शरीर एक हो वे जीव, 'साधारण-धनस्पतिकाय' कहलाते हैं

कदा अकुर किसलय, -पणगा-सेवाल-भूमिफोडा अ । अच्छय तिय-गज्जर-मो, -स्य वत्थुला-येग-पक्कका ९
कोमलफल च सध, गूढसिरादं सिणाइपत्ताइ । थोहरि-कुआरि-गुगुलि, गलोय-पमुद्दाइ-छिन्नरुहा ॥ १० ॥

(कदा) जमीकन्द-आलू, घूरन, मूलीका कन्द आदि (अकुर) अकुर, (किसलय) नये कोमल पत्ते, (पणगा सेवाल) पौध रागी फुलि-जो कि दासी बस वगेरमें पैदा होती है, और सेवाल पाणीपर जमती है (भूमिफोडा) भूमिस्फोट, -धर्पा ऋतुमें छत्रके आकारकी धनस्पति होती है, (अल्लयतिय) अब्रक, हस्वी और कर्चुक, (गज्जर) गाजर,

(मोत्य) नागरमोथा, (घत्तुला) वयुआ, (योग) एक किस्सका कन्द, (पलका) पाठका-याकयिहोप ॥९॥ (कोमलफल) सष तरहके कोमल फल-खिनमें बीज पैदा न हुये हों, (गूढ सिराइ सिगाइ पघाइ) खिनकी नसें प्रकट न हुये हों, वे, तथा सन आधिके पचे, (घोहरि) घूर, (कुआरि) कुधारपाठो, (गुगुलि) गुगुल, (गळोय) गिलोय-गुर्ष, (यमुहाइ) आदि, (छिन्नरुहा) छिन्नरुह-काटनेपर मी कर्गनेवाली कुछ वनस्पतियाँ ॥ १० ॥

भावार्थ—आक, सूरन, मूलीका कन्द, अङ्कुर, नये कोमल पचे, और फुफ्फि जो कि यासी अन्नमें पाँच रग की पैदा होती है और सेबाल, वर्षा ऋतुमें पैदा होनेवाली छत्राकार वनस्पति, अत्रक, हस्वी, कर्पूक, गाअर, नागरमोथा, ययुआ, वेग नामक कन्द, पाठको, खिनमें बीज पैदा न हुये हों, ऐसे कोमल फल, खिनमें नसें प्रकट न हुये हों, वे, और सन आधिके पचे, घूर, बीकृधार, गुगुल तथा काटनेपर धोइ देनेसे कर्गनेवाली गुर्ष नीघगिडोय आवि घन स्पतियाँ, ये सब साधारण-वनस्पतिक्रय कहलाते हैं, इनको भनस्सकाय और धावर निगोइके बीघ मी कहते हैं यहाँ बह समझना चाहिये कि ये सब गीली वनस्पतियाँ ही सहीव होती हैं, सूखी नहीं

इच्छाइणो अणेगे, हवति भेया अणंतकायाण । तेसिं परिजाणणत्थं, लक्खणमेय सुप भणिय ॥११॥

(इच्छाइणो) इत्यादि, (अणेगे) मनेक (भेया) भेद, (अणत्तकायाण) अनन्तकाय जीवोंके, (हवति) है, (तेसिं) उनके, (परिजाणणत्थं) अच्छी तरह जाननेके लिये, (सुप) सुतमें—शास्त्रमें, (पयं) यह (लक्खणे) लक्षण (मणियं) कहा है ॥ ११ ॥

भायार्थ—नव और दसमी गाथाओंमें जो अनन्तकायके भेद गिनाये हैं, उनसे मी अधिक भेद है, उन सबको समझानेके लिये सिद्धान्तमें अनन्तकायका लक्षण कहा है

गूढसिरसधिपथ, समभग-महीरुह च छिन्नरुह । साधारण सरीर, तद्विचरीअ च पत्तेय ॥ १२ ॥

जिनकी (सिर) नसें, (सधि) सन्धियाँ, और (पथ) पर्व-गॉठें, (गूढ) गुह्य हों—देखनेमें न आवें, (समभग) जिनको तोड़नेसे समान टुकड़े हों, (अधीरग) जिनमें तन्तु न हों, (छिन्नरुह) जो काटनेपर मी ऊंगें ऐसी धनस्य त्रियाँ—फल, फुल, पत्ते, मूखियाँ आदि, (साधारण) साधारण, (सरीर) शरीर है (तद्विचरीअ च) और उससे विपरीत, (पत्तेय) प्रत्येक-वनस्पतिकाय है ॥ १२ ॥

भायार्थ—अनन्तकाय वनस्पति उसको समझना चाहिये “जिस वनस्पतिमें नसें, सन्धियाँ और गॉठें न हों, जिसको तोड़नेसे समान भाग हों, जिसमें तन्तु न हों, जिसको काटकर वो देनेसे वह ऊंगें,” जिसमें एक लक्षण न हो, उस वनस्पतिको ‘प्रत्येक-वनस्पति’ समझना चाहिये ।

एगसरीरे एगो, जीवो जेसि तु ते य पत्तेया । फल-फूल-छल्लि-कट्टा, मूलगपत्ताणि धीयाणि ॥ १३ ॥
 (जेसि) जिनके (एगसरीरे) एक शरीरमें (एगो जीवो) एक जीव हो (सि तु) वे तो (पत्तेया) प्रत्येक-वनस्पतिकाय हैं; उनके सात भेद हैं (फल, फूल, छल्लि, कट्टा) फल, पुष्प, छाल, काष्ठ, (मूलग) मूखियाँ, (पत्ताणि) पत्ते, और (धीयाणि) धीजा ॥ १३ ॥

भाषार्थ—जिन धनस्त्वियोंके एक शरीरमें एक शरीरका एक ही जीव, स्वामी हो, उन धनस्त्वियोंको प्रत्येक-धनस्त्विकाय समझना चाहिये, प्रत्येक धनस्त्विकाय जीवके सात भेद हैं—फल, पुष्प, छाल, काष्ठ, मूत्रियाँ, पत्ते और बीज

पत्तयं तरु मोक्षु, पचवि पुढवाइणो सयललोए । सुहुमा हवति नियमा, अतमुहुचाउ अविस्सा ॥ १४ ॥

(पत्तय तरु) प्रत्येक-धनस्त्विकायको (मोक्षु) छोड़कर, (पचवि) पाँचों ही (पुढवाइणो) पृथ्वीकाय आदि, (सुहुमा) सूक्ष्म-स्थावर (सयल लोए) सम्पूर्ण लोकमें (हवति) विद्यमान हैं—रहते हैं—और वे (नियमा) नियमसे (भंतमुहुचाव) अन्तर्मुहूर्त आयुव्यवाले होते हैं, तथा (अविस्सा) अदृश्य हैं—आँसुसे देखनेमें नहीं आते ॥ १४ ॥

भाषार्थ—प्रत्येक-धनस्त्विकायको छोड़कर पृथ्वीकाय आदि पाँचों ही सूक्ष्म-स्थावर सम्पूर्ण लोकमें भरे पड़े हैं उनकी आयु अन्तर्मुहूर्तकी होती है तथा वे इतने छोटे हैं कि आँसु चम्कें नहीं देख सकती

प्र०—अन्तर्मुहूर्त किसे कहते हैं? उ०—नय समयसे लेकर, एक समय कम, दो घड़ी अितना काल अन्तर्मुहूर्त कहलाता है नय समयोंका अन्तर्मुहूर्त सबसे छोटा अर्थात् जब्त्य है। और, दो घड़ीमें एक समय कम हो, तो यह अन्तर्मुहूर्त उत्कृष्ट है। पीवके कालमें, नव समयसे आगे, एक एक समय बढ़ाते जाँय तो, उत्कृष्ट अन्तर्मुहूर्त तक, असंख्य अन्तर्मुहूर्त होते हैं

प्र०—समय किसे कहते हैं? उ०—उस सूक्ष्म कालको, जिसका कि सर्वशुद्धी दृष्टिमें मी विभाग न हो सके

प्र०—मुहूर्त कैसे कहते हैं? उ०—दो घड़ी अर्थात् अबतालीस मिनिटोंका मुहूर्त होता है

विशेष—प्रत्येकयनस्पतिकाय नियमसे धावर है, पाँच स्याधर, सूस्म और धावर दो तरहके हैं, सबको मिजाकर ग्यारह भेद हुये; ये ग्यारह पर्याप्त और अपर्याप्तरूपसे दो तरहके हैं, इस तरह स्यावरजीधके चार्डस भेद हुये

प्र०—पर्याप्त-जीव कैसे कहते हैं? उ०—जो जीव अपनी पर्याप्तियाँ पूरी कर चुका हो, उसे

प्र०—अपर्याप्त-जीव कैसे कहते हैं? उ०—जो जीव अपनी पर्याप्तियाँ पूरी न कर चुका हो, उसे

प्र०—पर्याप्ति कित्ने कहते हैं? उ०—जीवकी उस अफिको-जिसके द्वारा जीव, आहारको ग्रहण कर रस, दारीर और इन्द्रियोंको बनाता है तथा योग्य पुत्रोंकी ग्रहण कर स्वासोच्छ्वास, भावा और मनको बनाता है

सख-कवचुय गड्डुल, जलोय-चदणग-अलस-लहगाई। मेहरि किमि-पूयरगा, घेइदिय माइवाहाई ॥१५॥

(संस) शङ्ख—दधिणाघवं आवि, (कवचुय) कपर्दक-कौडी, (गड्डुल) गण्डोल पेटमें जो मोटे कृमि गंबोला पैदा होते हैं, (जलोय) जर्लाका-ओक, (चदणग) चन्दनक-अक्ष-जिसके निर्जीव शरीरको साधु लोग स्यापनाचार्यमें रखते हैं, (अलस) भूनाग अलसीया जो पर्याप्तनुमें साँप सरीसे लंबे लाल रगके जीव पैदा होते हैं, (लहगाई) लहक-खाली यक-जो घासी रोटी आदि अन्नमें पैदा होते हैं, (मेहरि) काष्ठके फीरेलह, (किमि) कृमि-पेटमें, फोड़ेमें तथा बवासीर आदिमें पैदा होते हैं, (पूअरगा) पूतरक-पानीके फीरे, अिनका मुँह खला और रंग लाल वा श्वेत-प्राय होता है,

मायार्थ—जिन धनस्पतियोंके एक शरीरमें एक जीव हो अर्थात् एक शरीरका एक ही जीव, स्वामी हो, उन धनस्पतियोंको प्रत्येक-धनस्पतिकाय समझना चाहिये; प्रत्येक धनस्पतिकाय जीवके सात मेद हैं—फल, पुष्प, छात्र, काष्ठ, मूछियाँ, पत्ते और धीज

पत्तेय तरु मोक्षु, पचत्रि पुत्रधाइणो सयललोप । सुद्रुमा हवति नियमा, अतमुद्रुचाउ अधिस्सा ॥ १४ ॥
 (पचत्रय तरु) प्रत्येक-धनस्पतिकायको (मोक्षुं) छोड़कर, (पचत्रि) पाँचों ही (पुत्रधाइणो) पृथ्वीकाय आदि, (सुद्रुमा) सूक्ष्म-स्यावर (सयल लोप) सम्पूर्ण लोकमें (हवति) विद्यमान हैं—रहते हैं—और वे (नियमा) नियमसे (अंतमुद्रुचाउ) अन्तर्मुद्रुत आयुष्यवाले होते हैं, तथा (अधिस्सा) महदय हैं—औरसे देखनेमें नहीं आते ॥ १४ ॥

मायार्थ—प्रत्येक-धनस्पतिकायको छोड़कर पृथ्वीकाय आदि पाँचों ही सूक्ष्म-स्यावर सम्पूर्ण लोकमें भरे पड़े हैं उनही आयु अन्तर्मुद्रुतकी होती है तथा वे इतने छोटे हैं कि आँसु उन्हें नहीं देख सकती

प्र०—अन्तर्मुद्रुतं किसे कहते हैं ? उ०—नव समयसे लेकर, एक समय कम, दो घड़ी जितना काल अन्तर्मुद्रुत कहलाता है नव समयोंका अन्तर्मुद्रुत सत्रसे छोटा अर्थात् जयन्त्य है; और, दो घड़ीमें एक समय कम हो, तो यह अन्तर्मुद्रुतं उत्कृष्ट है; बीचके कालमें, नव समयसे आगे, एक एक समय बढ़ाते जाँय तो, उत्कृष्ट अन्तर्मुद्रुतं तक, अर्त्तस्य अन्तर्मुद्रुतं होते हैं

प्र०—समय किसे कहते हैं ? उ०—उस सूक्ष्म कालको, जिसका कि सर्वशुद्धी दृष्टिमें भी विभाग न हो सके-

जो शकर और चावलमें पैदा होती है, (इंदुगोथाई) इन्द्रगोप-जो घषोमें लाल रंगका ज्ञाय पदा होता है जिसे पंजाबी चीजनहोटी, और गुजराती गोकलगाय कहते हैं-मारयाडमें मम्मोलाक० इत्यादि (तेषंद्रिय) त्रीन्द्रिय जीय है ॥ ३७ ॥

भाषार्थ-खिन जीयोंको सिर्फ क्षरीर, जीभ और नाक हो, इनको त्रीन्द्रिय कहते हैं, ये ये हैं-कानखजूर, खट मल, जू, चीटी, दीमक, अनाजमें पैदा होनेवाली इली, मकोड़ा, घीमें पैदा होनेवाली लाल कीटी, शरीरमें पैदा होने वाली चर्मजू, गायके फानचादिमें पैदा होनेवाले कीड़े, गोघालामें पैदा होनेवाले जीव, पिछाके कीड़े, गोघरके कीड़े, अनाजके कीड़े, कुल्लु, गोपालिका, शकर और चावलमें पैदा होनेवाले जीव इली, इन्द्रगोप आदि

अउरिदिपा य विष्टु, हिंकुण-ममराय ममरिया-तिड्डा। मच्छिय-डसा-मसगा, फसारी-कविलडोलाई?८

(विष्टु) विष्टु, (हिंकुण) हिंकुण-पुडसाठ चादिमें पैदा होता है, (ममरा) अमर-भौरा, (ममरिया) अमरिका-बरे, (तिड्डा) मच्छिका-मच्छी, मपुमबन्धी, (डसा) वस-डांस, (मसगा) मशक-

जीव कविलडोलाई

(माइयाहाई) मातृवाहिका-जिसकी गुजरातमें अधिकता है और वहाँके लोग घूरेल कहते हैं, इत्यादि (वैश्विय)
दीन्द्रिय जीव है ॥ १५ ॥

मासार्थ—जिन जीवोंके त्यथा और जीव हो, दूसरी इन्द्रियाँ न हों, वे जीव दीन्द्रिय कहलाते हैं, जैसे घांस,
कौड़ी, पेटके जीव, जोंक, अश्व, भूनाग, लालीयक, काष्ठकीट, कृमि, पृतरक और मातृवाहिका आदि

गोमी-मकण-जूआ, पिपीलि उद्वेहिया य मक्कोडा । इच्छिय-घयमिस्त्रीओ, सावय-गोकीरु जाईओ ॥ १६ ॥
गदहय-चोरकीडा, गोमयकीडा य धस्रकीडा य । कुथु-गुवालिय-इलिया, तेहंदिय इदगोवाई ॥ १७ ॥

(गोमी) गुन्सि-कानस्रजूरा, (मंकरण) मत्कुण-स्रमल, (जूआ) यूका-जू, (पिपीलि) पिपीलिका-बीटी, काली
कीडी (उद्वेहियाय) उपवेहिका-दीमक, और (मक्कोडा) मत्कोटक-मकोडा, (इच्छिय) इच्छिका-ईल्ली, ओ अनाजमें
पैदा होती है, (घयमिस्त्रीओ) घृतेलिका-ओ घीमें पैदा होती है, लाखकीडी (सायय) चर्म-यूका-ओ शरीरमें पैदा होती
है, जिससे भविष्यमें अनिष्टकी सङ्का भी जाती है, (गोकीरु जाईओ) गोकीटकी जातियाँ अर्थात् पशुओंके कान आदि
अवयवोंमें पैदा होनेवाले बीव ॥ १६ ॥ (गदहय) गर्दमक-गोशाला आदिमें पैदा होनेवाले सफेद रंगके जीव, (चोर
कीडा) चोरकीट-विष्टाके कीड़े, (गोमयकीडा) गोमयकीट-गोबरके कीड़े, (धस्रकीडाय) घान्यकीट-अनाजके कीड़े,
और (कुथु) कुन्पु-एक किसका कीडा, (गुवालिय) गोपालिका-एक किसका अप्रसिद्ध जीव, (इलिया) इलिका-

जो शकर और चावलमें पैदा होती है, (इंदुगोषाई) इन्द्रगोप-जो घषोंमें छाल रंगका ज्राय पैदा होता है जिस पञ्चाभा भीजम्होटी, और गुजराती गोक्लगाय कहते हैं-मारषाडमें मम्मोलाक० इत्यादि (वैश्विदिय) श्रीन्द्रिय जीव है ॥ १७ ॥

भायार्थ-—जिन जीवोंको सिर्फ शरीर, जीभ और नाक हो, उनको श्रीन्द्रिय कहते हैं, वे ये हैं-कानलज्जरा, सट मल, जूँ, घीटी, दीमक, अनाजमें पैदा होनेवाली ईंसी, मकोड़ा, घीमें पैदा होनेवाली छाल कीड़ी, शरीरमें पैदा होनेवाली घर्मजूँ, गायके कानआदिमें पैदा होनेवाले कीड़े, गोशालामें पैदा होनेवाले जीष, विष्टाके कीड़े, गोषरके कीड़े, अनाजके कीड़े, कुन्पु, गोपालिका, शकर और चावलमें पैदा होनेवाले जीष ईंसी, इन्द्रगोप आदि

चउरिंदिया य विच्छू, टिकुण-ममराय ममरिया तिष्ठा। मच्छिय ठसा-मसगा, कसारी-कविलडोलाई १८

(विच्छू) विच्छू, (टिकुण) टिकुण-पुङ्गुसाल आदिमें पैदा होता है, (ममरा) अमर-भौरा, (ममरिया) अमरिका-घरे, (तिष्ठा) टिष्ठी-टीड़ी, (मच्छिय) मक्षिका-मक्खी, मधुमक्खी, (ठसा) पंश-ठांस, (मसगा) मसक-मच्छर, (कसारी) कंसारिका-जो उजाड़ अगहमें पैदा होती है, (कविलडोलाई) कपिलडोलक-एक किसका जीव जिसे गुजराती लखमोंकडी कहते हैं, इत्यादि (चउरिंदिया) चतुरिन्द्रिय जीव है ॥ १८ ॥

भायार्थ-—जिन जीवोंको शरीर, जीभ, नाक और आँख हो, वे चतुरिन्द्रिय कहलाते हैं, जैसे-विच्छू, पुङ्गुसालमें पैदा होनेवाला टिकुण नामक जीव, ममरा, घरे, मक्खी, मधुमक्खी, ठांस, मच्छर, टीड़ी, कंसारिका, कपिलडोलक आदि।

पंचिदिया य चउहा, नारय तिरिया-मणुस्स-देवा य । नेरइया सचविहा, नायवा पुढविमेएण ॥-१९ ॥
 (पंचिदिया) पञ्चेन्द्रिय बीष (चउहा) चतुर्धा-धार प्रकारके हे (नारय) नारकिया, (तिरिया) तिर्यञ्च, (मणुस्स)
 मनुष्य (य) और (देवा) देव, (नेरइया) नैरयिकारकमें रहनेवाले जीव (पुढविमेएण) पृथ्वीके मेवसे (सचविहा)
 सप्तविधा-साठ प्रकारके (नायवा) खानना ॥ १९ ॥

भाषार्थ—पञ्चेन्द्रिय बीषके चार मेव हैं;—नारक, तिर्यञ्च, मनुष्य और देव भिन्न भिन्न साठ स्थानोंमें पैदा होनेके
 कारण नारक बीष साठ प्रकारके हैं वन साठ स्थानोंके—नारकोंके नाम ये हैं,—रवाप्रभा, धर्कराप्रभा, वाहृकाप्रभा,
 पङ्कप्रभा, घूमप्रभा, तमःप्रभा और तमस्तमःप्रभा

“पञ्चेन्द्रिय बीषोंमें नारकोंके मेव कहकर भव चार गाथाओंसे पञ्चेन्द्रिय, तिर्यञ्च और मनुष्योंके मेव कहते हैं”
 जलयर-थलयर-स्वयरा, तिविहा पंचेदिया तिरिक्खा य । सुसुमार-मच्छ-कच्छव, गाहा-मगराइ जलचारी
 (जलयर) अलथर, (थलयर) स्वलयर, (स्वयरा) स्वयर (पंचेदिया) पञ्चेन्द्रिय (तिरिक्खा) तिर्यञ्च (तिविहा)
 त्रिपिच अर्थात् तीन प्रकारके हैं (जलचारी) अलमें रहनेवाले (सुसुमार) सिंसुमार-सुरस, जिसका आफार भैस
 बीसा होता है, (मच्छ) मत्स्य-मच्छी, (कच्छव) कच्छप कछुआ, (गाहा) ग्राह-घड़ियाळ, (मगराइ) मकर-मगर
 भाषि है ॥ २० ॥

भाषार्थ—पाण्डुरिय तिर्यक्के तीन भेद हैं—अलघर, स्थलघर और खेघर अलघर जीव ये हैं—सुरित, मछली, कछुमा, प्राह, मकर आदि

चउपय-उरपरिसप्पा, सुयपरिसप्पा य धलयरा तिविहा। गो-सप्प-नउल-पमुहा, बोधवा ते समासेण २१॥
 (धलयरा) स्थलघर जीव (तिविहा) त्रिविध अर्थात् तीन प्रकारके हैं, (चउपय) चतुष्पद-चार परसे चलनेवाले,
 (उरपरिसप्पा) उरपरिसर्प-छातीसे-पेटसे चलनेवाले (य) और (सुयपरिसप्पा) मुजपरिसर्प-भुजाओंसे चलनेवाले,
 (गो) गाय, (सप्प) साँप, (नउल) नकुल नयलिया (पमुहा) प्रमुख-आदि (ते) वे (समासेण) समाससे-सङ्गेषसे
 (बोधवा) जानने ॥ २१ ॥

भाषार्थ—अमीनपर चलनेवाले जीव-जिनको स्थलघर कहते हैं-तीन प्रकारके हैं, (१) चार परसे चलनेवाले गाय, भैंस आदि; (२) पेटसे चलनेवाले सर्पादि; (३) भुजाओंसे चलनेवाले नकुल-स्योला आदि। क्रमशः इन तीनोंकोओंको चतुष्पद, उरपरिसर्प और मुजपरिसर्प कहते हैं

खयरा-रोमय-पक्खी, चम्मयपक्खी य पायढा चेव। नरलोगाओ वाहिं, समुग्गपक्खी विययपक्खी ॥ २२ ॥
 (खयरा) खेघर-आकाशमें उड़नेवाले जीव (रोमयपक्खी) रोमजपक्षी (य) और (चम्मयपक्खी) चर्मजपक्षी
 (पायढा) प्रकट है-प्रतिबद्ध है (नरलोगाओ) नरलोकसे-मनुष्यलोकसे (वाहिं) बाहर (समुग्गपक्खी) समुद्रपक्षी
 और (विययपक्खी) विततपक्षी है ॥ २२ ॥

भाषार्थ—आकाशमें उड़नेवाले तिर्यक, खेचर कहलाते हैं, उनके दो भेद हैं—रोमजपक्षी, और चर्मजपक्षी रोमसे जिनके पंख बने हैं वे रोमजपक्षी, जैसे—तोता, हंस, सारस आदि चामसे जिनके पंख बने हैं वे चर्मजपक्षी, जैसे—घम-गादड़ आदि जहाँ मनुष्यका नियास नहीं है, उस भूमिमें दो तरहके पक्षी होते हैं—समुद्रपक्षी और विततपक्षी सिडुने हुए, जिनके रङ्गके समान पंख हों, वे समुद्रपक्षी जिनके पंख फैले हुए हों, वे विततपक्षी कहालाते हैं

सधे जल-थल-खयरा, संसुच्छिमा गन्धया तुहा हुति । कस्माकम्मगमूमि, अतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
 (सधे) सय (जलथलखयरा) जलधर, स्थलधर, और खेचर (संसुच्छिमा) सम्सुच्छिम, (गन्धया) गर्भज (तुहा) द्विधा-दो प्रकारके (हुति) होते हैं (मणुस्सा) मनुष्य (कस्माकम्मग मूमि) कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज (य) और (अतरदीया) अन्तर्दीपयात्री है ॥ २३ ॥

भाषार्थ—पहले तिर्यकके तीन भेद कहे हैं—जलधर, स्थलधर, और खेचर ये तीनों दो दो प्रकारके हैं—समुच्छिम, और गर्भज जो जीव, मा-धापके बिना ही पैदा होते हैं, वे सम्सुच्छिम कहालाते हैं जो जीव, गर्भसे पैदा होते हैं वे गर्भज मनुष्यके तीन भेद हैं, कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, और अन्तर्दीपनिवासी खेती, व्यापार आदि कर्म-प्रधान भूमिको कर्मभूमि कहते हैं । उसमें पैदा होनेवाले मनुष्य कर्मभूमिज कहालाते हैं। कर्मभूमियाँ पन्द्रह हैं। पाँच भरत पाँच पेरवत और पाँच महाविदेह अहाँ खेती, व्यापार आदि कर्म नहीं होता उस भूमिको अकर्मभूमि कहते हैं, वहाँ पैदा होनेवाले मनुष्य अकर्मभूमिज कहालाते हैं। अकर्मभूमियोंकी संख्या तीस है । वह इस प्रकार—चाईं द्वीपमें पाँच

मेरु है, प्रत्येक मेरुके दोनों तरफ अर्थात् उत्तर तथा दक्षिणकी ओर १ हैमधंत, २ पेरण्यधंत, ३ हरियंपं, ४ रस्मय, ५ देयकुठ और ६ उत्तरकुठ, इन नामोंकी छह छह भूमियाँ हैं, इन छह भूमियोंको पाँच मेरुओंसे गुणनेपर तीस संख्या होती है अन्तर्द्वीपमें पैदा होनेवाले मनुष्य अन्तर्द्वीपनिवासी कहलाते हैं, अन्तर्द्वीपोंकी संख्या छप्पन है, यह इस प्रकार-मरुतक्षेत्रसे उत्तर दिशामें हिमयान् नामक पर्वत है, यह पूर्व दिशामें तथा पश्चिम दिशामें लघणसमुद्रतक छम्भा है, इसकी पूर्व तथा पश्चिममें ईशानादिदिशामें दो दो दंडाकार भूमियाँ समुद्रके भीतर हैं, इस तरह पूर्व तथा पश्चिमकी चार दंडायें हुईं; इसी प्रकार पेरषतक्षेत्रसे उत्तर, शिलरी नामक पर्वत है, यह भी पूर्व तथा पश्चिममें समुद्र तक छम्भा है और दोनों दिशाओंमें दो दो दंडाकार भूमियाँ समुद्रके अन्दर घुसी हैं, दोनोंकी आठ दंडायें हुईं, हर एक दंडामें सात सात अन्तर्द्वीप हैं, सातको आठसे गुणनेपर छप्पन संख्या हुई है

विदेश—कर्मभूमि, अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीप, ये सब बार्हं द्वीपमें हैं जम्बूद्वीप, घातकीलण्ड और पुष्करवर्दी पका आषा भाग, इनको बार्हं द्वीप कहते हैं इस ढाढ़ द्वीपमें ही मनुष्य पैदा होते हैं तथा मरते हैं, इसलिये इसको 'मनुष्यक्षेत्र' कहते हैं, इसका परिमाण पैंतालीस लाख योजन है अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीपमें जो मनुष्य रहते हैं, उन्हें 'युगलिया' कहते हैं, इसका कारण यह है कि स्त्री-पुरुषका युग्म-जोड़ा-साथ ही पैदा होता है और उनका वैवाहिक सम्बन्ध भी परस्पर ही होता है इनकी ऊँचाई आठसौ घनुपक्षी, और आयु, पत्न्योपमका अंशस्थातवों भाग त्रितनी है पन्द्रह कर्मभूमियाँ, तीस अकर्मभूमियाँ और छप्पन अन्तर्द्वीप, इन सबको मिलानेसे एकसौ एक मनुष्य-

भाषार्थ—आकाशमें बढ़नेवाले तिर्यक्, क्षेत्र कहलाते हैं, उनके दो भेद हैं—रोमजपक्षी, और धर्मजपक्षी रोमसे चित्तके पङ्क बने हैं वे रोमजपक्षी, जैसे-तोता, हंस सारस आदि चामसे चित्तके पङ्क बने हैं वे धर्मजपक्षी, जैसे—बमगादड़ आदि जहाँ मनुष्यका निवास नहीं है, उस भूमिमें दो तरहके पक्षी होते हैं—समुद्रपक्षी और चित्तपक्षी सिकुड़े हुए, चित्तके ढब्बेके समान पङ्क हों, वे समुद्रपक्षी चित्तके पङ्क फैले हुए हों, वे चित्तपक्षी कहलाते हैं

सधे जल-थल-स्वयरा, समुच्छिन्ना गठमया बुहा हुति । कम्माकम्मगमूमि, अतरदीवा मणुस्सा य ॥ २३ ॥
 (सधे) सध (जलथलस्वयरा) जलधर, स्थलधर, और क्षेत्र (समुच्छिन्ना) सम्मुच्छिन्ना, (गठमया) गर्भज (बुहा) विधा-धो प्रकारके (हुति) होते हैं (मणुस्सा) मनुष्य (कम्मकम्मग भूमि) कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज (य) और (अंतरदीवा) अन्तर्दीपवासी हैं ॥ २३ ॥

भाषार्थ—पहले तिर्यक्के तीन भेद कहे हैं—जलधर, स्थलधर, और क्षेत्र के तीनों दो दो प्रकारके हैं—समुच्छिन्ना, और गर्भज ओ जीव, मा-धापके विना ही पैदा होते हैं, वे समुच्छिन्ना कहलाते हैं ओ जीव, गर्भसे पैदा होते हैं वे गर्भज मनुष्यके तीन भेद हैं, कर्मभूमिज, अकर्मभूमिज, और अन्तर्दीपनिवासी खेती, व्यापार आदि कर्म-प्रधान भूमिको कर्मभूमि कहते हैं । उसमें पैदा होनेवाले मनुष्य, कर्मभूमिज कहलाते हैं। कर्मभूमियाँ पन्वरह हैं; पाँच भरत पाँच परवस और पाँच महाखिवेह जहाँ खेती, व्यापार आदि कर्म नहीं होता उस भूमिको अकर्मभूमि कहते हैं, वहाँ पैदा होनेवाले मनुष्य अकर्मभूमिज कहलाते हैं, अकर्मभूमियोंकी संख्या तीस है । यह इस प्रकार—बाईं क्षीपमें पाँच

मेरु है, प्रत्येक मेरुके दोनों तरफ अर्थात् उत्तर तथा दक्षिणकी ओर १ हम्बन्त, २ पेरण्यवंत, ३ हरिषर्प, ४ रम्मय, ५ देयकुरु मीर ६ उत्तरकुरु, इन नामोंकी छह छह भूमियाँ हैं, इन छह भूमियोंको पाँच मेरुओंसे गुणनेपर तीस संख्या होती है अन्तर्द्वीपमें पैदा होनेवाले मनुष्य अन्तर्द्वीपनिवासी कहलाते हैं, अन्तर्द्वीपोंकी संख्या छप्पन है, यह इस प्रकार--भरतक्षेत्रसे उत्तर विद्यामें विमवान् नामक पर्वत है, यह पूर्व विद्यामें तथा पश्चिम विद्यामें लवणसमुद्रतक लम्बा है, इसकी पूर्व तथा पश्चिममें इशानाविपिनिमें दो दो दंड्राकार भूमियाँ समुद्रके मीतर हैं, इस तरह पूर्व तथा पश्चिमकी चार दंड्रायें हुईं; इसी प्रकार देरयतक्षेत्रसे उत्तर, शिखरी नामक पर्वत है, यह मी पूर्व तथा पश्चिममें समुद्र तक दंड्रायें हुईं और दोनों विद्याओंमें दो दो दंड्राकार भूमियाँ समुद्रके अन्तर हुआ है, दोनोंकी आठ दंड्रायें हुईं, हर एक दंड्रामें सात सात अन्तर्द्वीप हैं, सातको आठसे गुणनेपर छप्पन संख्या हुई

विशेष—कर्मभूमि, अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीप, ये सब ढाई द्वीपमें हैं जम्बूद्वीप, घातकील्लण्ड और पुष्करवर्दी पका आधा भाग, इनको ढाई द्वीप कहते हैं इस ढाई द्वीपमें ही मनुष्य पैदा होते हैं तथा मरते हैं, इसलिये इसको 'मनुष्यक्षेत्र' कहते हैं, इसका परिमाण पैसालीस लाख योजन है अकर्मभूमि और अन्तर्द्वीपमें ओ मनुष्य रहते हैं, उन्हें 'युगलिया' कहते हैं, इसका कारण यह है कि स्त्री-पुरुषका युग-जोडा-साथ ही पैदा होता है और उनका पैदा किए सम्बन्ध मी परस्पर ही होता है इनकी ऊँचाई आठसौ घनुपकी, और आयु, पस्योपमका अर्धस्थावर्षों भाग जितनी है पन्दरह कर्मभूमियाँ, तीस अकर्मभूमियाँ और छप्पन अन्तर्द्वीप, इन सबको मिलानेसे एकसौ एक मनुष्य-

श्रमियाँ हुए, इनमें पैदा होनेसे मनुष्योंके मी बतने ही मेव हुए, इनके मी पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो मेव है, इखलिये दोसी दो मेव हुए इन गर्मख मनुष्योंके मठ, कफ भादिमें ओ मनुष्य पैदा होते है, वे संमूर्च्छिम कहलाते है तथा वे अपनी पर्याप्ति पूरी किये बिना ही मर जाते है। इनके-संमूर्च्छिम मनुष्यके-एकसौ एक मेवोंके साथ दोसी दोको मिठानेसे मनुष्योंके तीनसौ तीन मेव होते है

दसहा भवणाहिवई, अट्टविहा वाणमतरा हुति । जोइसिया पचविहा, दुविहा वेसाणिया देवा ॥ २४ ॥

(भवणाहिवई) भवनाधिपति देवता, (दसहा) दशधा वस प्रकारके हैं, (वाणमतरा) वानमन्तर देवता, (अट्ट विहा) अष्टविधा-आठ प्रकारके, (हुति) होते हैं, (जोइसिया) ज्योतिष्का-ज्योतिष्क देवता, (पंचविहा) पञ्चविधा-पाँच प्रकारके हैं और (वेसाणिया देवा) वैमानिक देवता, (दुविहा) दो प्रकारके है ॥ २४ ॥

भावार्थ—भवनपति देवताओंके वस मेव हैं—१ असुरकुमार, २ नागकुमार, ३ सुपर्णकुमार, ४ विद्युत्कुमार, ५ अग्निकुमार, ६ श्नीपकुमार, ७ उदयिकुमार, विष्णुकुमार, ९ वायुकुमार, और १० स्तनितकुमार वानमन्तर-वाणव्यन्तर-देवताओंके आठ मेव हैं—१ पिशाच, २ मूत, ३ यक्ष, ४ राक्षस, ५ किलर, ६ किंपुरुष, ७ महोरग, और ८ गान्धर्व वाणव्यन्तर (वानमन्तर) के ये मी आठ मेव हैं—१ अणपत्नी, २ पणपत्नी, ३ इसीवादी, ४ भूतवादी, ५ कन्दित, ६ महाकम्पि, ७ कोहण्ड, और ८ पतङ्ग ज्योतिष्क देवताओंके पाँच मेव हैं—१ चन्द्र, २ सूर्य, ३ प्रह, ४ नक्षत्र, और ५ ज्ञाता वैमानिक देवता दो प्रकारके हैं—१ कस्योपपन्न और २ कस्यातीत कल्प-अर्थात् आचार-

तीर्थङ्करोंके पाँच कल्याणकर्म आना-जाना, उसकी रखा करनेवाले देवता, 'कस्योपपन्न' कहलाते हैं। चक्र आचारके पालन करनेवा अघिकार खि-हैं नहीं हैं, वे देव, 'कस्यातीत' कहलाते हैं। कस्योपपन्न देवताओंके चारह देवलोक हैं। इसलिये स्थानके मेरुसे उन देवोंके मी चारह मेव समझना चाहिये चारह देव लोक ये हैं—१ सौधर्म, २ इशान, ३ सन कुमार, ४ माहेन्द्र, ५ ब्रह्म, ६ छान्तक, ७ शुक्र, ८ सहस्रार, ९ आनत, १० प्राणत, ११ आरण, और १२ अश्वत कस्यातीत देवोंके चौदह मेव हैं। नयप्रवेयकमें रहनेवाले तथा पाँच अनुत्तरविमानमें रहनेवाले नयप्रवेयकोंके नाम ये हैं—१ सुदर्शन, २ सुप्रसुद्ध, ३ मनोरम, ४ सर्वतोभद्र, ५ विशाल, ६ सुमनस, ७ सौमनस, ८ प्रियङ्कर, और ९ नन्दि कर पाँच अनुत्तरविमानोंके नाम ये हैं—१ विजय, २ वैजयन्त, ३ जयन्त, ४ अपराश्रित, और ५ सर्वार्यसिद्ध अथ चक्र देवोंके स्थान-रहनेकी अगह-संक्षेपमें कहते हैं। मेरु पर्वतके मूलमें समभूतल पृथ्वी है, उससे नीचे रदाप्रमा नामक प्रथम नरकका दल एक लाख अस्सी हजार योजन मोटा है, उसमें तेरह प्रतर हैं, उन प्रतरोंमें चारह आन्तर-स्थान हैं, प्रथम और अन्तिम आन्तर-स्थानोंको छोड़कर बाकीके दस आन्तर-स्थानोंमें, हर एकमें, एक एक भयनपति देवोंके निकाय रहते हैं प्रत्येक निकायमें दक्षिणकी तरफ एक, और उत्तरकी तरफ एक, ऐसे दो इन्द्र होते हैं, इस तरह दस निकायोंके बीस इन्द्र हुए।

पहले कहा गया है कि रक्षप्रमाका दल एक लाख अस्सी हजार योजन मोटा है, ऊपर एक हजार और नीचे एक हजार योजन मोटा है। छोटेकर बाकीके एक लाख अठारस हजार योजनमें पर्वतक तेरह प्रतर हैं, यिनमें कि दस

प्रकारके भयनपति देव रहते हैं, ऊपरके वचे हुए एक हजार योजनमें सी योजन ऊपर, और सी योजन नीचे छोड़
 दिये जानेपर बाकी आठसौ योजन वचे, उनमें आठ अन्तर मिकाप है, प्रत्येक निकायमें, भयनपति मिकायकी तरह,
 दक्षिणमें एक, और उत्तरमें एक, ऐसे दो इन्द्र रहते हैं, इस तरह आठ अन्तर निकायके सोलह इन्द्र हुए, ऊपर जो
 सी योजन छोड़ दिये गये थे, उनमेंसे दस योजन ऊपर, और दस योजन नीचे छोड़ दिये जानेपर अस्ती योजन वचे,
 उनमें आठ प्रकारके षणमन्तर देव रहते हैं; प्रत्येक निकायमें पहलेकी तरह एक दक्षिणमें, और एक उत्तरमें ऐसे दो
 इन्द्र रहते हैं, इस प्रकार आठ मिकायोंके सोलह इन्द्र हुए, दोनों प्रकारके अन्तरोंके वसीस इन्द्र हुए, इन्तमें मयन
 पतिके वीस इन्द्रोंके मिलानेपर बाधन इन्द्र हुए अब ज्योतिष्क देवोंकी रहनेकी जगह कहते हैं पहले ज्योतिष्क देवोंके
 पाँच भेद कह चुके हैं, उनके और भी दो भेद हैं, एक 'घर' और दूसरे 'स्थिर', मनुष्य-क्षेत्रमें जो ज्योतिष्क देव हैं,
 वे घर हैं, अर्थात् इनेसा घूमते रहते हैं और मनुष्यलोकसे बाहरके ज्योतिष्क देव, स्थिर हैं अर्थात् उनके विमान एक
 ही जगह रहते हैं, जहाँपर कि वे हैं, अग्नि, सूर्य, ग्रह, नक्षत्र और तारा, इन पाँच ज्योतिष्क देवोंमें, अग्नि और सूर्य,
 इन दोनोंकी इन्द्र-पत्नी है अर्थात् ये दोनों, ज्योतिष्कोंमें इन्द्र कहलाते हैं, दूसरोंको इन्द्र-पत्नी नहीं है, मेरुके सम-
 मूल-मूलसे ऊपर सात सी नख्खे योजनकी ऊँचाईपर ताराओंके विमान हैं, वहाँसे दस योजनकी ऊँचाईपर सूर्यका
 विमान है, वहाँसे अस्ती योजनकी ऊँचाईपर अन्द्रका विमान है, वहाँसे चार योजनकी ऊँचाईपर नक्षत्रोंके विमान हैं,
 वहाँसे सोलह योजनपर दूसरे दूसरे प्रहोंके विमान हैं, तात्पर्य यह है कि मेरुके मूलकी सपाट-भूमिसे सातसौ नखे

योजनाके ऊपर एकती दस योजनाओंमें ज्योतिष्क देव रहते हैं। अब वैमानिक देवोंके स्थान कहते हैं। सम्पूर्ण लोक-जिसे त्रिभुवन कहते हैं—उसका आकार पुरुषके समान है, और उसकी छम्माई चौदह राजू है, नीचेकी सात राजुओंमें सात नरक हैं। नामिकी जगह—मध्यमें—मनुष्यलोक है। मेरुकी सपाटभूमिसे सातसौ नवे योजनापर ज्योतिष्क देवोंके विमान हैं, वहाँसे छगभग एक राजू ऊपर, दक्षिण दिशामें तीसरा देवलोक और उत्तर दिशामें ईशान देवलोक परस्पर जुड़े हुए हैं। वहाँसे कुछ दूर ऊपर, दक्षिणमें तृतीय देवलोक सनत्कुमार और उत्तरमें षीया देवलोक माहेन्द्र, एक दूसरेसे उगे हुए हैं। वहाँसे ऊपर पाँचवाँ ब्रह्मलोक, छठा लान्तक, सातवाँ शुक्र, आठवाँ सहस्रार ये चार देवलोक, कुछ कुछ अन्तरपर, क्रमसे एकपर एक, ऐसी स्थितिमें हैं। वहाँसे कुछ ऊँचाईपर नववाँ आनत और दसवाँ प्राणत, दक्षिण और उत्तरमें, एक दूसरेसे उगे हुए हैं। वहाँसे कुछ ऊँचाईपर, ग्यारहवाँ आरण और बारहवाँ अभ्युत, दक्षिण तथा उत्तर दिशाओंमें, एक दूसरेसे जुड़े हुए हैं। प्रथमके आठ देवलोकोंके आठ इन्द्र हैं अर्थात् हर एक देवलोकका एक एक इन्द्र है। पर नववें और दसवें देवलोकका एक तथा ग्यारहवें और बारहवें देवलोकका एक, इस प्रकार अन्तिम चार देवलोकोंके दो इन्द्र हैं। प्रथमके आठ मित्रानेसे कस्योपपन्न वैमानिक देवताओंके दस इन्द्र हुए पुरुषाकार लोकके गलेके स्थानमें नवमीवेक है, वहाँसे कुछ ऊपर पाँच अनुत्तरयिमान हैं। लोकस्य पुरुषके ललाटकी जगह सिद्धशिला है, जो स्फटिकके समान निर्मल अर्जुनखोनेकी है, वहाँसे एक योजनापर लोकका अन्त होता है, लोकके अन्तिमभागमें सिद्ध महाराजका निवास है। अब तीन प्रकारके किस्बिपिक देव तथा नव प्रकारके लोकान्तिक देवोंका निया

सस्यान कहते हैं प्रथम प्रकारके किस्विकोकी तीन पस्योपम आयु है और वे पहले तथा दूसरे देवलोके नीचे रहते हैं दूसरे प्रकारके किस्विकोकी आयु, तीन सागरोपमकी है और वे तीसरे तथा चौथे देवलोके नीचे रहते हैं तीसरे प्रकारके किस्विकोकी आयु तेरह सागरोपम है और वे पाँचवें तथा छठे देवलोके नीचे रहते हैं ये सब किस्विकोके देव, बाण्डालके समान, देवोंमें नीच समझे जाते हैं लोकान्तिक देव, पाँचवें देवलोके अन्तमें ब्रह्मर-पूर्वावि कोणमें रहते हैं चाँसठ इन्द्र-भवनपति देवोंके बीच, ब्यन्तरोके वशीस, स्योतिषियोंके दो और वैमानिक देवोंके षस, सबकी संख्या मिथानेपर इन्द्रोंकी चौंसठ संख्या होती है

शास्त्रमें देवोंके १९८ भेद कहे हैं, उनको इस तरह समझना चाहिये-भवनपतिके षस, चर ज्योतिष्के पाँच, स्थिर ज्योतिष्के पाँच, शैताव्यपर रहनेवाले तिर्यक् अस्मक देवोंके षस भेद, नरकके जीर्वाको दुःख देनेवाले परमाधामीके पन्धरह भेद, ब्यन्तरके आठ भेद, धानव्यन्तरके आठ भेद, किस्विकियोंके तीन भेद, लोकान्तिकके नव भेद, बारह देवलोकीके चारह भेद, नव प्रीवेयकोंके नव भेद, पाँच अनुचरविमानोंके पाँच भेद, सष मिलाकर ९९ भेद हुए, इनके भी पर्वास और अपर्वास रूपसे दो भेद हैं, इस प्रकार १९८ भेद देवोंके होते हैं मनुष्योंके ३०३ भेद पहले कह चुके ।

अब तिर्यक्के ४८ भेद कहते हैं-पाँच सुस्मस्थावर, पाँच वायुस्थावर, एक प्रत्येक वनस्पतिकाय और तीन विक-सेन्द्रिय सब मिलाकर चौबह हुए ये चौबह पर्वास और अपर्वास रूपसे दो प्रकारके हैं, इस तरह अष्टादश हुए जब चर, क्षेत्र, तथा स्थलचरके तीन भेद-चतुष्पद, त्रिपदिसर्य तथा मुखपरिसर्य, ये प्रत्येक संसृष्टिम और गर्भज होनेसे

इस मेद हुए ये दसों पर्याप्त और अपर्याप्त रूपसे दो प्रकारके हैं, इसलिये भीस मेद हुए, इनमें पूर्वोक्त अठ्ठाइस मेदोंके मिजानेपर तिर्यङ्गोंके ४८ मेद होते हैं ।

नारक जीवोंके सात मेद कह चुके हैं, वे पर्याप्त तथा अपर्याप्त रूपसे दो तरहके हैं, इस तरह नारक जीवोंके चौबह मेद होते हैं देवोंके १९८, मनुष्योंके १०१, तिर्यङ्गोंके ४८ और नारकोंके १४ मेद, इन सबको मिलानेसे ५६३ मेद, संसारी जीवके हुए ।

सिद्धा पनरसमेया, तित्थ-अतित्याइ सिद्ध मेएणं । एए सखेवेण, जीवविगप्या समक्खाया ॥ ३५ ॥
(तित्थ अतित्याइ सिद्ध मेएणं) तीर्थ-सिद्ध, अतीर्थ-सिद्ध आदि मेदोंसे, (सिद्धा) सिद्ध-जीवोंके (पनरस मेया) पन्दरह मेद हैं (सखेवेणं) सत्तेपसे, (एए) ये-पूर्वोक्त, (जीवविगप्या) जीव-विकल्प-जीवोंके मेद, (समक्खाया) कहे गये ॥ ३५ ॥

भाषार्थ—तीर्थ-सिद्ध, अतीर्थ-सिद्ध आदि सिद्धोंके पन्दरह मेद “नवतत्त्व” में कहे हैं, उसे देखलेना चाहिये सत्तेपमें जीवोंके मेद इस ग्रन्थमें कहे गये हैं

एप्सिं जीवाण, सरीरमाऊ-ठिईं सकायमि । पाणा जोणिपमाण, जेसिं ज अस्थि त मणिमो ॥ ३६ ॥
(एप्सिं) इन-पूर्वोक्त (जीवाणं) जीवोंके, (सरीरं) शरीर-प्रमाण, (आऊ) आयुः-प्रमाण, (सकायमि) स्व-

कायमें, (ठिई) स्थितिका प्रमाण अर्थात् स्वकायस्थिति-प्रमाण, (पाणा) प्राण-प्रमाण और (जोणिपमाण) योनि-प्रमाण, (वेत्ति) चिन्तके, (अं अत्थि) चिन्तने हे, (त) उसे, (मम्मिमो) कहते हे ॥ २६ ॥

भाषार्थ—पहले एकेन्द्रिय आवि जीव कहे गये हे, उनके शरीरका प्रमाण, आयुका प्रमाण, स्वकायस्थितिका प्रमाण—एकेन्द्रियादि जीवोंका सर कर फिर उसी कायमें पैदा होना, 'स्वकायस्थिति' कहलाता हे उसका प्रमाण। प्राण-प्रमाण—दस प्राणोंमेंसे अमुक जीवको कितने प्राण हे इसकी गिनती; योनि-प्रमाण—चौरासी लाख योनियों मेंसे किन् किन् जीवोंकी कितनी कितनी योनियाँ हे इस विषयकी गिनती,—ये बातें आगे कही जायँगी

अगुलअसखमागो, सरीरमेगिंदियाण सवेत्तिं । जोयणसहस्समहिय, नवर पत्तेयरुक्खाण ॥ २७ ॥

(सवेत्तिं) सम्पूर्ण (गिंदियाण) एकेन्द्रियोंका (सरीर) शरीर (अंगुलअसखमागो) बँगलीके अंसस्यावधे भाग चिठना हे, (नवर) इतनाधिशेषहे लेकिन (पत्तेयरुक्खाण) प्रत्येकयनस्पतियोंका शरीर, (जोयणसहस्समहिय) हजार योजनसे कुछ अधिक हे ॥ २७ ॥

भाषार्थ—सूक्ष्म तथा वादर पृष्ठीकाय आवि एकेन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण, बँगलीके अंसस्यावधे भाग चिठना हे, लेकिन प्रत्येक धनस्पतिकायके जीवोंका शरीरप्रमाण, हजार योजनसे कुछ अधिक है; यह प्रमाण समुद्रके पद्मना छका तथा वाइ द्वीपसे पाहरकी सुताभोंका हे

धारस जोयण तिन्ने, व गाउआ जोयण च अणुकमसो । वेइदिय तेइदिय, षडरिदिय देहमुच्चत्त ॥ २८ ॥
 (षडरिदिय) द्वीन्द्रिय, (तेइदिय) त्रीन्द्रिय और (षडरिदिय) षडरिन्द्रिय जीवोंके, (देहमुच्चत्त) शरीरका प्रमाण,
 (अणुकमसो) क्रमसे (धारस जोयण) धारस योजन, (तिन्नेय गाउआ) तीन गम्भूत-तीन कोस-और (जोयणं)
 एक योजन है ॥ २८ ॥

मायार्थ—द्वीन्द्रिय जातिके जीवोंका शरीर-प्रमाण, अधिकसे अधिक, धारस योजन हो सकता है, इससे अधिक
 नहीं । इसका मतलब किसी द्वीन्द्रिय जातिसे है, संलहोता है कुछ द्वीन्द्रियोंसे नहीं; ऐसा ही त्रीन्द्रिय जीवोंका
 शरीर-प्रमाण कानसजुरा तीन कोस और षडरिन्द्रिय जीवोंका शरीर-प्रमाण ममरोका एक योजन है

प्र०—योजन किसे कहते हैं ? उ०—चार कोसका एक योजन होता है

प्र०—गम्भूत किसे कहते हैं ? उ०—एक कोसको

धणुसयपचपमाणा, नेरइया सत्तमाइपुठवीप । तत्तो अच्चद्धूणा, नेया रयणप्पहा जाव ॥ २९ ॥

(सत्तमाइ) साठवीं (पुठवीप) पृथ्वीके (नेरइया) नारक-जीय, (धणुसयपचपमाणा) पौचसी धनुष प्रमाणके
 है, (रयणप्पहा जाव) रत्नप्रमा नामक प्रथम पृथ्वीतक, (तत्तो) वससे (अच्चद्धूणा) आधा २ कम प्रमाण (नेया)
 जाणना ॥ २९ ॥

मायार्थ—मातृयै नरकके जीयोंका शरीर—प्रमाण पाँचसौ धनुष, छठे नरकके जीयोंका शरीर—प्रमाण षाड़सौ प, पाँचयै नरकके जीयोंका एकसौ पचीस धनुष, चौथे नरकके जीयोंका साढ़े षासठ धनुष, तीसरे नरकके जीयोंका इक्कीस धनुष, दूसरे नरकके जीयोंका साढ़े पन्द्रह धनुष और बारह अङ्गुल, तथा प्रथम नरकके जीयोंका शरीर गण पाने भाठ धनुष और छह अङ्गुल है नारकोंके रचरचैकिय शरीरका प्रमाण, चक्र प्रमाणसे दुगुना समझना चाहिये १०—धनुषका प्रमाण क्या है! उ०—बार हाथका एक धनुष समझना चाहिये

गणसहस्तमाणा, मच्छा उरगा य गवमया हुति । धणुअपुहुत्त पक्खिसु, सुयचारी गाउअपुहुत्त ॥३०॥
 रा धणुअपुहुत्त, सुयगा उरगा य जोयणपुहुत्त । गाउअपुहुत्तमिच्चा, समुच्छिमा चउप्पया भणिया ३१

—पया) समुच्छिम या गर्मज (मच्छा) मत्स्य-मछलियाँ, (य) और गर्मज (चरगा) साँप यह अधिकसे जोयणसहस्तमाणा) हजारयोजन प्रमाणयाले (हुति) होते हैं (पक्खिसु) पक्षियोंमें शरीर प्रमाण (धणुअपुहुत्त) गणुअपुहुत्त है तथा (सुयचारी) सुयचारी-मुज्ज्वारी (गावअपुहुत्त) गम्भूत-गृधकत्व-प्रमाण के हैं ॥ ३० ॥

छमा) समुच्छिम (क्षयरा) खेपर जीय (सुयगा) और मुज्ज्वारोंसे चलनेवाले जीव (धणुअपुहुत्तं) धनुष प्रमाणयाले होता है (य) और (चरगा) साँप आदि (जोयण पुहुत्तं) योजन-गृधकत्व शरीर-प्रमाणके (चउप्पया) चतुष्पद जीव (गावअपुहुत्तमिच्चा) गम्भूत-गृधकत्वमात्र (भणिया) कहे गये हैं ॥ ३१ ॥

भायार्थ—समुच्छिद्यमओर गर्भज मत्स्य ओर गर्भज सर्पका शरीर-मान एक हजार योजनका है। इस प्रकारके मत्स्य स्वयम्भूरमण समुद्रमें होते हैं तथा सर्प मनुष्य-क्षेत्रसे बाहर होते हैं गर्भज पक्षियोंका शरीर-मान धनुष-पृथक्त्व है अथात् दो धनुषसे लेकर नय धनुष तक है गर्भज म्योला, गोह आदि मुजपरिसर्प जीयोंका शरीर-मान, गब्यूत-पृथक्त्व है अर्थात् दो कोससे लेकर नय कोस तक है

सम्मुच्छिद्यम खेषर तथा मुजपरिसर्प जीयोंका शरीरमान, धनुष-पृथक्त्व है सम्मुच्छिद्यम उरगपरिसर्प जीयोंका शरीर-मान, योजन-पृथक्त्व है सम्मुच्छिद्यम षतुष्पव-चार पैरवाले-जीयोंका शरीर-मान गब्यूत-पृथक्त्व है

प्र०—पृथक्त्व किसको कहते हैं? उ०—दोसे लेकर नय तककी संख्याको पृथक्त्व कहते हैं

छत्रेव गाउअइ, चउप्पया गवभया मुणेयवा । कोसतिग च मणुस्ता, उक्कोससरीरमाणेण ॥ ३२ ॥

(षट्पया गवभया) षतुष्पद गर्भजोंका शरीर-मान (छत्रेय गावआइ) छह कोसका (मुणेयवा) जानना (ष) और (मणुस्ता) मनुष्य (उक्कोससरीरमाणेण) बल्कट शरीरमानसे (कोसतिग) तीन कोसके होते हैं ॥ ३२ ॥

भायार्थ—देयकुरु आदि क्षेत्रोंमें षतुष्पद गर्भज हाथीका शरीर-मान छह कोसका है तथा देयकुरु आदिके युग-लीया मनुष्योंके शरीरकी ऊँचाई, अधिकसे अधिक तीन कोसकी होती है

ईसाणत सुराण, रयणीओ सत्त हुति उच्चत्त । दुग-दुग-दुग-चउ-नेवि, ज्जणुत्तरे इक्किक्क परिहाणी ॥ ३३ ॥

(ईसाणठ) ईशानान्ध—ईशान देवलोक—सकके (सुराणं) देवताओंकी (उच्चरं) ऊँचाई (सप्त) सात (रयणीओ) रसि—हाथ (हुंति) होती है। (युग—युग—युग—घट गेविष्मणुचरे) दो, दो, दो, चार, नवम्रैवेयक और पाँच अनुत्तरवि मानोंके देवोंका शरीर—मान (इक्षिक परिहाणी) एक एक हाथ कम है ॥ ३३ ॥

भाषार्थ—दूसरा देवलोक, ईशान है, वहाँके देवोंका तथा भवनपति, व्यन्तर, ब्योतिपी और सौधर्म देवोंका शरीर सात हाथ ऊँचा है। सनत्कुमार और माहेन्द्रके देवोंका शरीर छह हाथ ऊँचा है। ब्रह्म और लाम्तकके देवोंका पाँच हाथ। ध्रुव और सहस्रारके देवोंका चार हाथ। आनत, प्राणत, आरण और अश्रुत इन चार देवलोकोंके देवोंका तीन हाथ। नवम्रैवेयकके देवोंका दो हाथ और पाँच अनुत्तर विमानवासी देवोंका एक हाथ ऊँचा है

यहाँ जीवोंका शरीर—मान उत्सेषाङ्गुलसे समझना चाहिये

प्र०—उत्सेषाङ्गुल किसको कहते हैं? उ०—आठ धवोंका एक उत्सेषाङ्गुल होता है

वावीसा पुढवीय, सत्तय आउस्स तिसि वाउस्स। वास सहस्सा दस तरु, गणाण तेऊ तिरचाऊ ॥ ३४ ॥

(पुढवीय) पृथ्वीकाय बीवोंका आयु (वावीसा) बाईस हजार वर्षका है (आउस्स) अपफाय जीवोंका आयु (सत्तय) सात हजार वर्षका (वाउस्स) वायुकाय जीवोंका आयु (तिसि) तीन हजार वर्षका (तरुणाण) प्रत्येक धनस्पतिकायके जीव—समुदायके आयु (वास सहस्सा दस) वर्षसहस्र—दश वर्षोंका दस हजार वर्षका (तेऊ) तेज—काय जीवोंका (तिरचाऊ) तीन अहोरात्रका आयु है ॥ ३४ ॥

मायार्थ—पृथ्वीकाय जीवोंका अधिकसे अधिक आयु—उत्कट आयु—चार घर्ष, अप्काय जीवोंका आयु
 सात हजार घर्ष; वायुकाय जीवोंका तीन हजार घर्ष, मत्स्यक घनस्पतिकाय जीवोंका दस हजार घर्ष और तेजाकाय
 जीवोंका तीन अहोरात्र आयु है यह तो दुई उत्कट आयु, लेकिन अपम्य आयु सघका अन्तर्मुद्वर्तका है
 वासाणि चारसाऊ, विइदियाण तिइदियाण तु । अउणापन्न विणाइ, चउरिदीण तु छम्मासा ॥ ३५ ॥
 (विइदियाणं) द्वीन्द्रिय जीवोंका (आठ) आयु (पारस) पारह (वासाणि) घर्षका है, (तिइदियाणं तु) त्रीन्द्रिय
 जीवोंका तो (अउणा पन्न विणाइ) वनघास विनका आयु होता है (चउरिदीणं तु) और चउरिन्द्रिय जीवोंका आयु
 (छम्मासा) छह महीनेका है ॥ ३५ ॥

मायार्थ—द्वीन्द्रिय जीवोंका उत्कट आयु पारह घर्षका, त्रीन्द्रियोंका वनघास विनका और चउरिन्द्रियका छह
 महीनेका है यह सघका उत्कट आयु है, जयम्य आयु अन्तर्मुद्वर्तका समझना चाहिये
 सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तिचीसं । चउपय तिरिय-मणुस्सा, तिस्रिय पलिओवमा वुत्ति ॥
 (सुर-नेरइयाण) देव और नारक जीवोंका (उक्कोसा) उत्कट-अधिकसे अधिक (ठिई) स्थिति-आयु (सागराणि
 तिचीसं) तेतीस सागरोपम है, (चउपय-तिरिय) चार पैरवाले तिर्यग और (मणुस्सा) मनुष्योंका आयु (तिस्रिय)
 तीन (पलिओवमा) पन्धोपम (वुत्ति) है ॥ ३६ ॥

(ईसाणत) ईशानान्त—ईशान देवलोक-चक्रके (सुराण) देवताओंकी (उच्छ्रत) ऊँचाई (सप्त) सात (रयणीओ) रश्मि-हाथ (हुंति) होती है। (पुग-सुग-सुग-घव गेधिजणुचरे) दो, दो, दो, चार, नवमैवेयक और पाँच अनुचरविमानोंके देवोंका शरीर-मान (इकिक्क परिहाणी) एक एक हाथ कम है ॥ ३३ ॥

भाथार्थ—दूसरा देवलोक, ईशान है, वहाँके देवोंका तथा भवनपति, व्यन्तर, ज्योतिषी और सौचर्म देवोंका शरीर सात हाथ ऊँचा है। सनत्कुमार और माहेन्द्रके देवोंका शरीर छह हाथ ऊँचा है। ब्रह्म और छान्दके देवोंका पाँच हाथ। शुक्र और सहस्रारके देवोंका चार हाथ। आनत, प्राणत, आरण और अभ्युत इन चार देवलोकोंके देवोंका तीन हाथ। नवमैवेयकके देवोंका दो हाथ और पाँच अनुचर विमानवासी देवोंका एक हाथ ऊँचा है

यहाँ जीवोंका शरीर-मान उत्सेघान्हुसे समझना चाहिये

प्र०—उत्सेघान्हुल किसको कहते हैं? उ०—आठ यवोंका एक उत्सेघान्हुल होता है

धावीसा पुढवीप, सत्तय आउस्स तिसिन्नि वाउस्स। वास सहस्सा वस तरु, गणाण तेऊ तिरत्ताऊ ॥ ३४ ॥

(पुढवीप) पृथ्वीकाय जीवोंका आयु (धावीसा) वाईस हजार वर्षका है (आउस्स) अप्काय जीवोंका आउ (सत्तय) सात हजार वर्षका (वाउस्स) धातुकाय जीवोंका आयु (तिसिन्नि) तीन हजार वर्षका (तरुगणाण) प्रत्येक वनस्पतिकायके जीव-समुदायकी आयु (वास सहस्सा वस) वर्षसहस्र-वस अर्थात् वस हजार वर्षका (तेऊ) तेजःकाय जीवोंका (तिरत्ताऊ) तीन महोरारात्रका आयु है ॥ ३४ ॥

भायार्थ—पृथ्वीकाय जीवोंका अधिकसे अधिक आयु—वत्कष्ट आयु—श्रावण हजार वर्ष, अप्काय जीवोंका आयु सात हजार वर्ष, वायुकाय जीवोंका तीन हजार वर्ष; मत्स्यक पनस्पतिकाय जीवोंका दस हजार वर्ष और तेजकाय जीवोंका तीन अहोरात्र आयु है यह तो हुई बत्कष्ट आयु, लेकिन अपन्य आयु सबका अन्तर्मुद्वर्तका है

वासाणि चारसाऊ, त्रिद्विद्याण तिद्विद्याण तु । अउणापन्न विणाइ, चउरिर्वीण तु छम्मासा ॥ ३५ ॥
 (त्रिद्विद्याणं) त्रीन्द्रिय जीवोंका (आठ) आयु (चारस) बारह (यासाणि) वर्षका है, (तिद्विद्याण तु) त्रीन्द्रिय जीवोंका तो (अउणा पन्न विणाइ) वनचास दिनका आयु होता है (चउरिर्वीणं तु) और चउरिन्द्रिय जीवोंका आयु (छम्मासा) छह महीनेका है ॥ ३५ ॥

भायार्थ—त्रीन्द्रिय जीवोंका वत्कष्ट आयु बारह वर्षका, त्रीन्द्रियोंका वनचास दिनका और चउरिन्द्रियका छह महीनेका है यह सपका वत्कष्ट आयु है, अपन्य आयु अन्तर्मुद्वर्तका समझना चाहिये

सुरनेरइयाण ठिई, उक्कोसा सागराणि तिच्चीस । चउपय तिरिय-मणुस्सा, तिम्रिय पलिओवमा हुति ॥
 (सुरनेरइयाण) देव और नारक जीवोंका (उक्कोसा) वत्कष्ट—अधिकसे अधिक (ठिई) स्थिति—आयु (सागराणि तिच्चीसं) तेतीस सागरोपम है, (चउपय-तिरिय) चार पैरघाले तिर्बच्च और (मणुस्सा) मनुष्योंका आयु (तिम्मिय) तीन (पलिओवमा) पन्थोपम (हुति) है ॥ ३६ ॥

भायार्थ—देव और नरकवासी जीव, अधिकसे अधिक, तेतीस सागरोपम तक भीते हैं और चतुष्पद तिर्यञ्च तथा मनुष्य तीन पत्न्योपम तक; ये तिर्यञ्च तथा मनुष्य देयकुठ आदि क्षेत्रोंके समझना चाहिये देव तथा नारक जीवोंका अपन्य आयु—कमसे कम आयु—दस हजार वर्षका है। मनुष्य तथा तिर्यञ्च जीवोंका अधन्य आयु, अमृतमुद्गर्तका है

जलयर-उरमुयगाण, परमाज होइ पुषकोठीऊ । पक्खीण पुण भणिओ, असखभागो अ पलियस्स ३७
 (जलयर-उरमुयगाण) जलधर, सरःपरिसर्प और मुञ्जपरिसर्प जीवोंकी (परमाज) वस्कृष्ट आयु (पुषकोठीऊ) एक करोड़ पूर्व है, (पक्खीण पुण) पक्षियोंकी आयु तो (पलियस्स) पत्न्योपमका (असखभागो) असंख्यातवर्षों भाग जितनी (भणिओ) कहा है ॥ ३७ ॥

भायार्थ—गर्भज और सम्मूच्छिम ऐसे दो प्रकारके जलधर जीवोंका तथा गर्भज, सरःपरिसर्प और मुञ्जपरिसर्प जीवोंकी वस्कृष्ट आयु एक करोड़ पूर्व है। गर्भज पक्षियोंका आयु पत्न्योपमका असंख्यातवर्षों भाग स्थितना है

सधे सुहुमा साहारणा य, समुच्छिमा मणुस्सा य । उक्कोस जहक्षेणं, अतमुहुत्तं चिय जियति ॥ ३८ ॥
 (सधे) सम्पूर्ण (सुहुमा) पृथ्वीकाय आदि सूक्ष्म (य) और (साहारणा) साधारण वनस्पतिकाय (य) और (समुच्छिमा मणुस्सा) सम्मूच्छिम मनुष्य (उक्कोस जहक्षेणं) वस्कृष्ट और अधन्यसे (अंतमुहुत्तं चिय) अस्तमुद्गर्त ही (जियति) नीते है ॥ ३८ ॥

भाथार्थ—सूक्ष्म पृथ्वीकाय आदि जीव, सूक्ष्म और घावर साधारण घनस्यतिकार्यके जीव और सम्मूर्छिम मनुष्य, चरकर्यसे और अपन्यसे सिर्फ अन्तर्मुद्रित तक जीते हैं

प्रश्न—पस्योपम किसको कहते हैं ? उ०—असंख्य पर्पोंका एक पस्योपम होता है

प्र०—सागरोपम किसे कहते हैं ? उ०—दस क़ोड़ा क़ोड़ी पस्योपमका एक सागरोपम होता है

प्र०—पूर्य किसको कहते हैं ? उ०—सत्तर लाखक़ोड, छप्पन हजार करोड़ पर्पोंका एक पूर्य होता है

ओगाहणाउमार्ण, एव सखेत्रओ समक्खार्यं । जे पुण इश्य विसेसा, विसेस सुत्ताउ ते नेया ॥ ३९ ॥

(एव) इस प्रकार (ओगाहणाउमाण) अयगाहना-शरीर और आयुका मान (संक्षेपओ) सङ्घेपसे (समक्खार्यं) कहा गया (जे पुण इश्य) यहाँ जो घातें (विसेसा) विशेष हैं, (विसेस सुत्ताउ) विशेष सूत्रोंसे (ते) इनको (नेया) जानना ॥ ३९ ॥

भाथार्थ—देह-मान तथा आयु-मानके विषयमें विशेष घातें जानना हों, तो “संग्रहणी,” “प्रज्ञापना” आदि सूत्रोंसे जानना चाहिये

एगिंदिया य सधे, असंख उस्सप्पिणी सकायमि । उववज्जति चयतिअ, अणतकाया अणताओ ॥४०॥

(सधे) सप (एगिंदिया) एकेन्द्रिय जीव (असंख उस्सप्पिणी) असंख उस्सप्पिणी तथा अवसर्पिणी तक (सका

यंमि) अपनी कायामें (स्रववज्जति) उत्पन्न होते हैं (अ) और (चर्यति) मरते हैं। (अर्णतकाया) अनन्तकाय जीव (अर्णताओ) अनन्त उत्सर्पिणी तथा अवसर्पिणी तक ॥ ४० ॥

भाषार्थ—पृथ्वी, अप, तेज, वायु और प्रत्येक घनस्पतिकार्यके जीव, वसी पृथ्वी आदिकी अपनी कायामें, असंस्य उत्सर्पिणी—अवसर्पिणी तक पैदा होते तथा मरते हैं। अनन्तकायके जीव तो वसी अपनी कायामें अनन्त उत्सर्पिणी—अवसर्पिणी तक पैदा होते तथा मरते हैं

प्र०—उत्सर्पिणी किसको कहते हैं ? उ०—इस क्रोड़ा क्रोड़ी सागरोपमकी एक उत्सर्पिणी तथा चतनेकी ही एक अवसर्पिणी होती है

सखिज्जसमा विगला, सत्तट्ट भवा पर्णिदि तिरि-मणुया। उववज्जति सकाप, नारय देवा अ नो चेव ॥४१॥
(विगला) विक्लेन्द्रिय जीव (सखिज्जसमा) संख्यात हजार वर्षों तक (सकाप) अपनी कायामें (उववज्जति) पैदा होते हैं, (पर्णिदि-तिरि-मणुया) पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च और मनुष्य (सत्तट्ट भवा) सात-आठ भय तक, लेकिन (नारय देवा) नारक और वेव (नो चेव) नहीं ॥ ४१ ॥

भाषार्थ—ईन्द्रिय, त्रीन्द्रिय और चतुरिन्द्रिय जीव, स्वकायामें संख्यात हजार वर्षोंतक पैदा होते तथा मरते हैं। पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च तथा मनुष्य छगातार सात तथा भाठ भव करते हैं अर्थात् मनुष्य, छगातार सात-आठ धार, मनुष्य-धारीर धारण कर सकता है, इस प्रकार पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्च मी लेकिन वेयवा तथा नारक जीव मरकर फिर तुरन्त

अपनी योनिमें नहीं पैदा होते अर्थात् वेच मरकर फिर पुरन्त वेचयोनिमें नहीं पैदा हो सकता । इस प्रकार नारक जीव मरकर पुरन्त नरकमें नहीं पैदा होता । हाँ एक दो अन्म दूसरी गतियोंमें विचरकर फिर वेच या नरक-योनिमें पैदा हो सकते हैं इसी तरह वेच मरकर पुरन्त नरकयोनिमें नहीं जाता और नारक जीव मरकर पुरन्त वेच-योनिमें नहीं पैदा हो सकता

दसहा जियाण पाणा, इदि-उससाउ-जोगयलरूवा । एगिंविद्यसु चउरो, विगलेसु छ सत्त अट्टेव ॥ ४२ ॥
 (जियाण) जीवोंको (वसहा) दस प्रकारके (पाणा) प्राण होते हैं—(इदि-उसासाउ-जोगयलरूवा) (प) इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, आयु और योगयलरूप, तीनयल (एगिंविद्यसु) एकेन्द्रियोंको (चउरो) चार प्राण हैं, (विगलेसु) विक छेत्रियोंको (छ सत्त अट्टेव) छह, सात और आठ ॥ ४२ ॥

‘मायार्थ—प्राणोंकी संख्या दस है—पाँच इन्द्रियों, श्वासोच्छ्वास, आयु, मनोबल वचनयल और कायबल इन दस प्राणोंमेंसे चार-स्वप्ना, श्वासोच्छ्वास, आयु और कायबल एकेन्द्रिय जीवोंको होते हैं। इन्द्रिय जीवोंको छह प्राण-स्वप्ना, रसना (जीम), श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और वचनयल; त्रीन्द्रिय जीवोंको सात प्राण-स्वप्ना, जीम, नाक, श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और वचनयल; चतुरिन्द्रिय जीवोंको आठ प्राण-पूर्योफ सात, और आँख असन्नि-सन्नि-यत्ति, विपसु नव दस कमेण बोधवा । तेहिं सह विप्पओगो, जीवाणं मण्णए मरण ॥ ४३ ॥

(असन्नि-सन्नि-पंचिदिपसु) असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय तथा संज्ञी पञ्चेन्द्रिय जीवोंको (कमेण) क्रमसे (नव दस) नव र दस प्राण (बोधबा) आणना (तेहिं सह) उनके साथ (विष्यजोगो) विप्रयोग-वियोग, (जीवाणं) जीवोंका (रणं) मरण (भण्णप) कहलाता है ॥ ४३ ॥

भाषार्थ—असंज्ञी पञ्चेन्द्रियोंको त्वचा, जीम, नाक, भौल, कान, श्वासोच्छ्वास, आयु, कायबल और धचनबल ये प्राण होते हैं और संज्ञी पञ्चेन्द्रियोंको पूर्योक नव और मनोबल, ये दस प्राण होते हैं जिनको जितने प्राण कहे उन प्राणोंके साथ वियोग होना ही उन जीवोंका मरण कहलाता है देव, नारक, गर्भज तिर्यञ्च तथा गर्भज , ये संज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहलाते हैं सम्पूर्णिम तिर्यञ्च और सम्पूर्णिम मनुष्य, असंज्ञी पञ्चेन्द्रिय कहलाते हैं

1 मनुष्योंको मनोबल और वाक्बल नहीं है, इसलिये उनके आठ प्राण, और, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति पूर्ण न कारण साढा साठ प्राण होते हैं

, अणोरपारे, ससारे सायरमि भीममि । पत्तो अणतलुत्तो, जीवेहिं अपसधम्ममेहिं ॥ ४४ ॥

अपसधम्ममेहिं) नहीं पाया है धर्म जिम्होंने ऐसे (जीवेहिं) जीवोंने (अणोरपारे) आर-पार-रहित-आदि-त-रहित (भीममि) भयङ्कर (ससारे सायरमि) संसाररूप समुद्रमें (एवं) इस प्रकार-प्राण-वियोग-रूप मरण (पत्तो अणतलुत्तो) अनन्त धार (पत्तो) प्राप्त किया ॥ ४४ ॥

मायार्थ—संचारका आदि नहीं है, न अन्त है, अनन्तवार बीच मर चुके हैं और आगे मरेगे सुदैयसे यदि उन्हें धर्मकी प्राप्ति हुई तो जन्म-मरणसे मुक्तकारा होगा

तह चउरासी लक्ष्वा, सखा जोणीण होइ जीषाण । पुढवाईण चउण्ह, पत्तेय सत्त सत्तेष ॥ ४५ ॥
(जीषाणं) जीवोंकी (जोणीण) योनियोंकी (संखा) सङ्घा (चउरासी लक्ष्वा) चौरासी लाख (होइ) है (पुढ-
वाईण चउण्ह) पृथ्वीफाय आदि चारकी प्रत्येककी योनि-सङ्घा (सत्त सत्तेष) सात सात लाख है ॥ ४५ ॥

भायार्थ—जीवोंकी चौरासी लाख योनियाँ हैं, यह बात प्रसिद्ध है । इसको इस प्रकार समझना चाहिये—पृथ्वीका
सात लाख, अप्फायकी सात लाख, तेजःकायकी सात लाख और वायुकायकी सात लाख योनियाँ हैं, सबको
मिला कर अष्टाईस लाख हुईं

प्र०—योनि किसको कहते हैं ? उ०—पैदा होनेवाले जीवोंके जिस उत्पत्ति-स्थानमें वर्ण, गन्ध, रस और
गर्भ, ये चारों समान हों, उस उत्पत्ति-स्थानको इन सब जीवोंकी एक योनि कहते हैं

इस पत्तेयतरुण, चउदस लक्ष्वा हवति इयरेसु । विगळिदियेसु दो दो, चउरो पच्चिदितिरियाण ॥ ४६ ॥
(पत्तेयतरुणं) प्रत्येक वनस्पतिकायकी (दस) दस लाख योनियाँ हैं, (इयरेसु) प्रत्येक वनस्पतिकायसे इतर-सा
कारण वनस्पतिकायकी (चउदस लक्ष्वा) चौदह लाख (हवति) हैं, (विगळिदियेसु) विकलेन्द्रियोंकी (दो दो) दो
ती लाख हैं, (पच्चिदितिरियाणं) पंचेन्द्रिय विर्यघोंकी (चउरो) चार लाख हैं ॥ ४६ ॥

भाषार्थ—प्रत्येक पनस्पतिकायकी दस छाल; साधारण धनरपतिकायकी चौदह छाल; द्वीन्द्रियकी दो छाल; त्रीन्द्रियकी दो छाल; चतुरिन्द्रियकी दो छाल और पञ्चेन्द्रिय तिर्यञ्चोकी चार छाल योनियाँ हैं
 घउरो चउरो नारय, सुरेसु मणुआण चउदस हवति । संपिडिया य सबे, चुलसी लक्खाउ जोणीण ॥४७॥
 (नारय सुरेसु) नारक और देवोकी (चउरो चउरो) चार चार छाल योनियाँ हैं, (मणुआण) मनुष्योकी (चउदस) चौदह छाल (हवति) हैं, (सबे) सब (संपिडिया) इकट्ठी की साथ-मिलाई साथ तो (जोणीण) योनियोकी सङ्ख्या (चुलसी लक्खाउ) चौरासी छाल होती है ॥ ४७ ॥

भाषार्थ—नारक जीवोकी चार छाल, देवोकी चार छाल और मनुष्योकी चौदह छाल योनियाँ हैं योनियोकी सब संख्या मिळानेपर चौरासी छाल होती है

सिद्धाण नत्थि देहो, न आउ कम्म न पाण जोणीओ।साइ-अणता तेसि, ठिई जिणिदागमे भणिया ॥४८॥
 (सिद्धाण) सिद्ध जीवोको (देहो) शरीर (नत्थि) नहीं है, (न आउ कम्म) आयु और कर्म नहीं है, (न पाण जोणीओ) प्राण और योनि नहीं है, (ठेसि) उनकी (ठिई) स्थिति (साइ अणता) साथि और अनन्त है, यह बात (जिणिदागमे) जैन सिद्धान्तमें (भणिया) कही गई है ॥ ४८ ॥

भाषार्थ—सिद्ध जीवोको शरीर नहीं है इसलिये आयु और कर्म भी नहीं है, आयुके न होनेसे प्राण और योनि

मी नहीं है, प्राणके न होनेसे मृत्यु मी नहीं है। वनकी स्थिति सादि-अनन्त है अर्थात् जय वे लोकके अप्रभागपर अपने स्वरूपमें स्थित हुए, यह समय वनकी स्वरूप-स्थितिका भावि है तथा फिर वहाँसे श्रुत होना नहीं है इसलिये स्वरूप-स्थिति अनन्त है। यह बात जैन सिद्धान्तमें कही गई है ॥ ४८ ॥

काले अणाइनिहणे, जोणीगहणमि मीसणे इत्थं । भमिया भमिहिति चिरं, जीवा जिणवयणमलहता ४९

(भणाइ निहणे) आदि और अन्त-रहित अर्थात् अनादि-अनन्त (काले) कालमें (जिणवयणं) जिनेन्द्र भगवा
नके उपदेशरूप पचनको (अडांता) न पाये हुए (जीवा) जीव, (जोणी गहणमि) योनियोंसे फलेशरूप (मीसणे)
भयङ्कर (इत्थं) इस संसारमें (चिरं) बहुत काल तक (भमिया) क्षमण कर चुके और (भमिहिति) क्षमण करेने

भाषार्थ—घौरासी लाख योनियोंके कारण बुद्धदायक तथा भयङ्कर इस संसारमें, जिनेन्द्र भगवान्के वतलाये हुए
मार्गको न पाये हुए जीव, अनादि कालसे अन्तमरणके चक्रमें कैसे हुए हैं तथा अनन्त कालतक कैसे रहेंगे

ता संपइ सपत्ते, मणुअचे दुल्लहे वि सम्मत्ते । सिरिसत्तिसूरिसिदुठे, करेह भो उज्जम धम्ममे ॥ ५० ॥

(ता) इसलिये (संपइ) इस समय (दुल्लहे) दुर्लभ (मणुअचे) मनुजत्व-मनुष्यजन्म और (सम्मत्ते) सम्यक्त्व
(सपत्ते) प्राप्त हुआ है वो (सिदुठे) शिष्ट-सज्जन पुरुषोंसे सेवित ऐसे (धम्ममे) धर्ममें (भो) अहोभव्यप्राणियो !
(उज्जमे) उद्यम-पुरुषार्थ (करेह) करो, ऐसा (सिरिसत्तिसूरि) श्रीशान्तिस्वरि उपदेश देते हैं ॥ ५० ॥

भाषार्थ—जय कि संसार भयङ्कर है और घौरासीलाख योनियोंके कारण इससे पार पाना मुश्किल है और

वचिit सामग्री-मनुष्य-जन्म और सम्यक्त्व-सच्ची श्रद्धामी प्राप्त हुई है इसलिये हे भव्य जीवो! प्रमाद न करके, महापुरुषोंने जिस धर्मका सेवन किया है उसका तुम भी सेवन करो, क्योंकि बिना धर्मकी सेवा किये तुम जन्म-मरण-के ज्वालसे नहीं छूट सकोगे

पसो जीववियारो, सखेवरुईण जाणणाहेउ । सखित्तो उच्चरिओ, रुवाओ सुयससुवाओ ॥ ५१ ॥
(संखेवरुईण) सङ्गेपरुषियोंके-अल्पमतियोंके (जाणणा हेउं) जाननेकेलिये (रुवाओ) रुद्र-अतिविस्तृत (सुयस मुदाओ) श्रुतसमुद्रसे (एसो) यह (जीववियारो) जीवविचार (संखित्तो) सङ्गेपसे (उच्चरिओ) निफाठा गया ॥५१॥
'भाषार्थ-सिद्धान्तोंमें जीवोंके मेवआदि विस्तारसे कहे गये हैं इसलिये अल्प बुद्धिवाले छाम नहीं बठा सकते; उनके जाननेकेलिये सङ्गेपमें यह "जीवविचार" सिद्धान्तके अनुसार धनाया गया है, इसके धनानेमें अपनी कल्पनाको स्थान नहीं दिया गया

जीवविचारसार्थ समाप्तः ।

॥ अथ नवतत्त्वप्रकरणप्रारंभः ॥

ध्यात्वा नवपदी भक्त्या, नवतत्त्वानां विषरण, धालानां सुखबोधाय, क्रियते लोकभाषया ॥ १ ॥

जीवाऽजीवापुण्य पावाऽसवसवरोय निज्जरणा । वधोमुख्लोय तथा नवतत्त्वा द्रुति नायथा ॥ १ ॥

(जीवा) जीयतस्व १ द्रव्य और भाषप्राणको धारण करनेवाला (अजीवा) ज्ञान-बैतनासे रहित सो अजीय तस्य २ (पुण्यं) शुभ फलका जो भोगना यह पुण्य तत्त्व ३ (पाया) अशुभ फलको जो भोगना यह पापतत्त्व ४ (आसय) जो शुभाशुभ कर्मका आना यह आश्रयतत्त्व ५ कहलाता है (सयरो) जो शुभाशुभ कर्मको रोकना यह संयततत्त्व ६ कहलाता है । (य) और (निज्जरणा) जो आत्मध्यानसे शुभाशुभ दोनों कर्मको षालके भस्मीभूत करके सर्वथा नहीं छेकीन देससे बहावेना यह निर्जरातत्त्व ७ (वंधो) जो शुभाशुभ कर्मका स्त्रीरनीरकी तरह आत्मप्रवेशकी साथ बंधहोना यह बंधतत्त्व ८ (मुख्लो) सर्वथा कर्मोंसे जो मुक्तहोना सो मोक्षतत्त्व ९ (य) फिर (तथा) ऐसे (नय) नय (तथा) तत्त्व याने रहस्य (हुति) है (नायथा) जानना ॥ १ ॥

चउदसचउदसयायालीसा थासीयद्रुतिवायाला । सत्तावन्नधारस चउनवमेयाकमेणेसि ॥ २ ॥

(चउदस) जीयतस्य १ का चौदह भेद (चउदस) अजीयतस्व २ का मी चौदह भेद (थायालीसा) पुण्यतत्त्व ३

के बयालीस भेद (पासीय) पापतत्त्व ४ के ब्यासी भेद (द्रुति) है (घापाडा) आभवतत्त्व ५ के बयालीस भेद है (सचायम) सवरतत्त्व ६ के सचायन भेद (वारस) निर्क्षरात्त्व ७ के चारह भेद (चत) बंधतत्त्व ८ के चार भेद (नव) और मोक्षतत्त्व ९ कर नव (मेया) भेद है (कमेकेसि) अनुक्रमसे नवे तत्त्वका सव मिलकर २७६ भेद है ॥२॥

एगविहदुविहतिविहा, घउषिहापचछविहाजीवा । चेयगत्तसइयरेहिं, वेयगई करणकापहिं ॥ ३ ॥

(एगविह) चेतना लक्षणसे सब जीवो एक प्रकारे है (दुषिह) बस और स्वावरपणेसे क्षीर्षके दो भेद है (तिविहा) क्षीर्षेद पुरुषेय और नपुंसक्येदसे क्षीर्षके तिन भेद है (चतविहा) देव मनुष्य तिर्यच क्षीर नारक इसप्रकारसे जीव चार तरहका (पंच) एकेन्द्रि आविसे क्षीय पौष तरहका (छविहा) पृथ्वी भावि छेकर छे तरहका (जीवा) क्षीय है (येयण) ज्ञानावि चेतना सहित (तस) ब्रस इल्लते षडते सो (इयरेहिं) इतर स्थिर रहे सो स्वाधर (धेय) तीन वेद (गई) चार गति (करण) इंद्री पौष (कापहिं) काया छ ॥ ३ ॥

परिगिदियसुहुमियरा सन्नियरपरिणिदियायसवितिचउ । अपजसापज्जत्ता कमेणचउवसजियठाणा ॥ ४ ॥

(परिगिदिय) एकेन्द्रि क्षीर्षके दो भेद है (सुहुमियरा) एक सूक्ष्म और दुसरा बावर (सन्नि) मन सहित (इयर) दुसरा असलि मन रहित पेसे (परिणियाय) पंचेन्द्रिके दो भेद है (स) वस पूर्वका चारकी साय (वि) वेदंद्रीका एक भेद (ति) वेदंद्रीका एक भेद (चर) शौरिद्रीका एक भेद यह तीन मिलानेसे साठ हुवा (अपजसापज्जत्ता) यह

सात अपर्याप्ता और दुसरा सात पर्याप्ता (कमेणचचदस) अनुक्रमसे ऐसे सव मिलकर चौदह (शिय) जीयोका (गणा) स्थान घाने भेद है ॥ ४ ॥

नाणचदसणचेव चरित्तचतवोत्तहा । वीरियउयओगोय पयंजीवस्सलक्खण ॥ ५ ॥

(नाण) ज्ञान आठ प्रकारे पाँच ज्ञान सम्यक्त्व आसरे और तीन अज्ञान मिथ्यात्व आसरे (च) और (दसणं) दर्शनका चार भेद (वेय) निम्ने (चरिच) चारीचका सात भेद सामायक आदि निम्नय व्ययहार (च) फिर (तवो) तपके चारह भेद (सहा) सेसेही (वीरियं) धीर्य दो प्रकारके (चयओगो) चपयोगके चारह भेद (य) और (पयं) ये (जीयस्स) जीवका (उस्सणं) छक्षण है ॥ ५ ॥

आहारसरीरइदिय पज्जतीआणपाणमासमणे । चउपचपचछप्पिय इगविगलासद्विसप्पीण ॥ ६ ॥

(आहार) आहारपर्याप्ति १ (सरीर) शरीरपर्याप्ति २ (इदिय) इन्द्रियपर्याप्ति ३ (पज्जप्पी) ऐसे तीन पर्याप्ति (आणपाण) स्वासेस्वास ४ (भास) भाषा ५ (मणे) मनपर्याप्ति ६ (चव) आहारादि चार (पच) मन छोटकर पाँच (छप्पिय) मन सहित संपूर्ण छे पर्याप्ति (पण) एक इंद्रीको चार (विगळा) विगलेंद्रीको मन छोटकर पाँच (असत्ति) असंती पंचेन्द्रिको मन छोटके पाँच (सप्पीणं) संती पंचेन्द्रिको छे है ॥ ६ ॥ अब जो इस अपनी अपनी पर्याप्ति पूरी करके मरे सो जीय पर्याप्ता और पिना पूरी कीए मरे सो जीव अपर्याप्ता कहलाता है ॥

पर्णिविद्यतिवल्गुसा—साजदसपाणचउछसगमट्ट । इगदुतिचउरिंवीण असमिसस्रीणनवदसय ॥ ७ ॥

(पर्णिविद्य) पाँच इंद्रियों (विषल) मनादि तीन बल (कसास) स्वासोस्वास (आऊ) आयु (वस) ऐसे दस (पाण) प्राण है (चत) स्पर्शनेंद्रिय कायबल स्वासोस्वास और आयु ऐसे चार (छ) पूर्वका चारकी साथ रसना और घबन ऐसे छे (सग) पूर्वका छेकी साथ नासीका ऐसे सात, (अठ) आठ प्राण, पूर्वका सातकी साथ चक्षु (इग) पूर्वकीको पूर्वका चार (दु) वेइंद्रीकी पूर्वका छे (ति) तेइंद्रिको पूर्वका सात (चचरिंवीण) चौरिंद्रीकी पूर्वका आठ (असधि) असनी पंचेन्द्रिको (सस्रीण) और संनी पंचेन्द्रिको (नवदसय) अनुक्रमसे नव और दश प्राण आन लेना जैसेकी पूर्वका आठकी साथ श्रोत मिलानेसे नव और नवकी साथ मन मिलानेसे दस । चार भावप्राण तो सबकाही समान है ॥ ७ ॥ इति जीवतत्त्वम् ॥

धम्माऽधम्माऽगासा तियतियमेयातहेवमद्धाय । खधावेसपप्सा परमाणुअजीवत्वउदसहा ॥ ८ ॥

(धम्मा) धर्मास्तिकाय (अधम्मा) अधर्मास्तिकाय (आगासा) और आकाशास्तिकाय (तियतिय) प्रत्येक प्रत्येक का सधादि तीन तीन (मेया) मेव है ऐसे नव (सहेव) तेसेही (अजाय) कालका एक मेव इस प्रकारसे पूर्वका नव और कालका १ सब मिलकर दश हुआ सो अरुपी है (संघा) और संघ (देस) देश (पप्सा) प्रवेश (परमाणु) परमाणु यह चार पुद्गलका रूपी कहा (अजीव) रूपी अरुपी दोनु मिलकर अजीवका (वतदसहा) चौदह मेव है ॥ ८ ॥

धम्माऽधम्मापुग्गल न्हकालोपंचहुंतिअजीवा । चलणसहाधोधम्मो थिरसठाणोअहम्मोय ॥ ९ ॥

(धम्माऽधम्मा) धर्मास्तिकाय और अधर्मास्तिकाय (पुग्गल) पुत्रलास्तिकाय (नह) आकाशस्तिकाय (कालो) और काठ (पंच) यह पांच (हुति) है (अजीवा) अजीव द्रव्य (चलणसहाधो) चलन स्वभावगुणवाला (धम्मो) धर्मास्तिकाय है (थिरसठाणो) और स्थिरस्वभावगुणवाला (अहम्मोय) एक अधर्मास्तिकाय है ॥ ९ ॥

अवगाहोआगास पुग्गलजीवाणपुग्गलाचउहा । स्वधादेसपप्सा परमाणुचेवनायवा ॥ १० ॥

(अवगाहो) अयकाश स्वभावगुणवाला (आगासं) आकाशस्तिकाय है, यह (पुग्गल) पुत्रलको (जीवाण) और जीयको अयकाश देता है (पुग्गला) पुत्रलके (चउहा) चार भेद है (संघा) संघ (वेस) वेश (पप्सा) प्रवेश (परमाणु) और परमणु ऐसे (येय) निम्बे (नायवा) जानना ॥ १० ॥

सइधयारउज्जीय पमाछायातवेहिआ । वणणगधरसाफासा पुग्गलाणतुलस्खण ॥ ११ ॥

(सइं) जीय शब्दादि तीन (अंधयार) अंधकार (उज्जीय) प्रकाश (पमा) ज्योति (छाया) छाया (तवेहिआ) सूर्यका तांपडा (वणण) पाँचोही वर्ण (गंध) दोनु गन्ध (रसा) पाँचरस (फासा) आठ स्पर्श (पुग्गलाणंतु) पुत्रलका ऐसे (उस्खण) उखण है ॥ ११ ॥

पगाकोडिसतसट्टि लस्खासचहुचरीसहस्ताय । दोयसयासोलहिया आवलियाइगमुहुत्तम्मि ॥ १२ ॥

(एगाकोटि) एक कोट (सप्तसहस्रिका) सडठ ठाल (सप्तशुचरीसहस्राय) सिचोतर ह्यार (दोयसयासोल-
 शिपा) दोसो सोलह अधिक (आयलिया) १६७७७२१६ आयलिक (इग) एक (मुद्रुचम्मि) मुद्रुचके विपे होती है ॥१२॥
 समयायलीमुद्रुचं दीहापस्व्हायमासवरिसाय । भणिओपलिआसागर उस्सपिणीसपिणीकालो ॥१३॥

(समय) समय, अतिसुस्स कालको समय कहते है ऐसे असंख्य समयकी (आवली) एक आयलिका होती है
 (मुद्रुचं) दो घडीका मुद्रुचं मुद्रुचकालका प्रमाण आयलीकी सख्यासे पूर्वकी घारषी गायसे आणलेना (वीहा) ऐसे
 तीस मुद्रुचका एक अहोरात्री दिन (पस्सा) ऐसे पंद्रह दिनका एक पख (थ) और (मास) ऐसे दो पखका एक मास
 (धरिसा) ऐसे धारह मासका एक वर्ष (प) और (मणिओ) कहा है (पलिआ) ऐसे असंख्य वर्षका कूपट्टांतकरके
 एक पस्योपम, ऐसे दस कोडाकोडी पस्योपमका (सागर) एक सागरोपम, ऐसे दस कोडाकोडी सागरोपममिलनेसे
 एक (बस्सपिणी) बस्सपिणी और ऐसे दस कोडाकोडी सागरोपमकी एक (सपिणी) अवसर्पिणी होती है (कालो)
 ऐसे बस्सपिणी और अवसर्पिणी मिकर २० कोडाकोट सागरका एक कालषक और ऐसे अनंते कालषक ज्ञानेपर
 एक पुत्रुळ परायरतन होता है । ऐसा अनंता पुत्रुळ परायरतन होचुके और आने होवने इति कालब्रह्मका मान कहा ॥१३॥

परिणामिजीवमुच सपप्साएगस्वित्किरिआय । णिच्चकारणकत्ता सबगयइयरअप्पवेसे ॥ १४ ॥

(परिणामि) छ ब्रह्मने परिणामी क्खिना और अपरीणामी क्खिना निच्चयनयसे तो छेही ब्रह्म परिणामी है और

व्यवहारनयते तो एक जीव दुसरा पुत्रल यह दो परिणामी घाकीके चार अपरिणामी है १ (जीव) यह छ द्रव्यमें एक जीवद्रव्य चेतन है शेष पाँच द्रव्य अजीव अचेतन्य है २ (मुत्तं) यह छे द्रव्यमें एक पुत्रल जो है यह मूर्तिमंत है घाकीके पाँच द्रव्य अमूर्त अरूपी है (सपप्सा) यह छे द्रव्यमें पाँच द्रव्यस प्रवेशी है और एक कालद्रव्य अप्रवेशी है (पग) यह छे द्रव्यमें घर्म अधर्म और आकाश ये तीन द्रव्य एक है शेष तीन अनेक है (स्थित) यह छ द्रव्यमें एक आकाश द्रव्य जो है यह क्षेत्र है शेष पाँच क्षेत्री है (किरिआय) इस छे द्रव्यमें जीव और पुत्रल यह दो द्रव्य सक्रिय है शेष चारद्रव्य अक्रिय है (जिम्नं) ये छे द्रव्यमें व्यवहारसे तो घर्म अधर्म आकाश और काल यह चार नित्य है घाकीके दो द्रव्य अनित्य है और निश्चयसे छेही द्रव्य नित्य है (कारण) जीवको छोडकर पाँच द्रव्य कारण है और जीवद्रव्य अकारण है (कत्ता) ये छे द्रव्यमें जीव तथा पुत्रल व्यवहारसे कर्ता घाकीके चार अकर्ता (सवगय) ये छ द्रव्यमें एक आकाशद्रव्य छोकाछोक व्यापक है और घाकीके पाँच द्रव्य छोकव्यापी है (इयर) इतर (अप्पवेसे) कोई द्रव्य कोईसे मिले नहीं ॥ १४ ॥ इति अजीवतत्त्वम् ॥

साउचगोअमणुग सुरवुगपंचिदिजाइपणदेहा । आइतितयुणुवगा आइमसधयणसठाणा ॥ १५ ॥

(सा) साधा वेदनी कर्म १ (उच्चगोअ) उंच गोत्र कर्म २ (मणुग) मनुष्यगति ३ और मनुष्यानुपूर्वी ४ (सुरवुग) देवगति ५ और देयानुपूर्वी ६ (पंचिदिजाइ) पंचेन्द्र जातीनाम कर्म ७ (पणवेहा) औवारिकाधि शरीर पाँच

१२ (आइतितणु) आदिके तीन शरीरका (पुंभंगा) अंगोपाग १५ (आइमसंधयणसंठाणा) आवि षअरिपमनाराच सघयण १६ और प्रथम सस्यान समचोरस १७ ॥ १५ ॥

घणचउकागुरुलुहु परधाऊसासआयबुज्जोय । सुमस्वगइनिमिणतसवस सुरनरतिरियाउतितययर ॥ १६ ॥
 (यणचवक्का) शुभघर्णाविचार २१ (अगुरुलुहु) अगुरुलुहु २२ (परघा) पराघातनाम कर्म २३ (ऊसास) स्वासो स्वास नामकर्म २४ (आयय) आताप नामकर्म २५ (लज्जोयं) उद्योतनामकर्म २६ (सुमस्वगइ) शुभविद्यायोगति विस कर्मके उदयसें जीवकी हंससमान षाली हो २७ (निमिण) निर्माण नामकर्म २८ (तसवस) ब्रस दशक ३८ इस दशकेका मेव आगेकी गायासें कहेंगे (सुर) देवआयु नामकर्म ३९ (नर) मनुष्यआयु नामकर्म ४० (तिरियाउ) तिर्यचआयु नामकर्म ४१ (तित्ययरं) और तीर्थकरनामकर्म ४२ ॥ १६ ॥

तसवायरपज्जत्त पत्तेयथिरसुमचसुमगच । सुस्सरआइज्जस तसाइवसगइमहोइ ॥ १७ ॥

(तस) ब्रसनामकर्म १ (वायर) वावरनामकर्म २ (पज्जत्त) पर्याप्तनामकर्म एक छवधि पर्याप्ता बुआकरणपर्याप्ता पेसे दो मेव ३ (पत्तेय) प्रत्येकनामकर्म ४ (थिर) स्थिरनामकर्म ५ (सुमं) शुभनामकर्म ६ (च) और (सुमगं) सोभाग्यनामकर्म ७ (च) और (सुस्सर) सुस्वरनामकर्म जिसका स्वर कोफ्लिकाकी तरह मधुर हो ८ (आइज्जा) आदेयनामकर्म ९ (जसे) यशकीर्तिनामकर्म १० (वसाइ) ब्रस आदिक (दसग) दशक (इमंहोइ) इस प्रकारसे हे ॥ १७ ॥ इतिपुण्यतत्त्वम् ॥

नाणतरायदसग नवधीयनीयसायमिच्छत् । थावरदसनरयतिग कसायपणवीसतिरियुग ॥ १८ ॥

(नाण) पाँच ज्ञानायरणी मतिज्ञानायरणी १ श्रुतज्ञानायरणी २ अयधिज्ञानायरणी ३ मनापर्ययज्ञानावरणी ४ और केयल ज्ञानायरणी ऐसे पाँच (असराय) अन्तराय दानान्तराय १ छाभान्तराय २ भोगान्तराय ३ उपमोगान्तराय ४ और धीर्यान्तराय यह पाँच अन्तराय (दसग) ऐसे दश भेद कहे (नवधीये) और नव दूसरा दर्शनायरणी कर्मके निद्रा १ निद्रानिद्रा २ मूचला ३ मूचलाप्रचला ४ धिणद्धी ५ चक्षुदर्शनायरणी ६ अचक्षुदर्शनायरणी ७ अवधिदर्शनायरणी ८ और केयलदर्शनायरणी ९ ऐसे नव और पूर्वकादशमिलकर ओगुणीस (नीय) मिचगोत्र २० (असाय) असावावेदनीकर्म २१ (मिच्छत्) मिष्यात्व मोहनीनामकर्म २२ (थावर) स्थावरको (दस) दशको इस दशकेका भेद आगे कहेंगे ३२ (नरयतिग) नरकत्रिक नरकगती नरकानुपूर्वी और नरक आयु ऐसे तीन ३५ (कसायपणवीस) कसाय पणवीस सो देखलाते है अनन्तानुबंधी आदि क्रोधके चार तथा अनन्तानुबंधि आधि मानके चार फिर अनन्ता नुबंधि आदि मायाके चार और अनन्तानुबंधी आधि लोभके चार यह सोल कपाय अथ नवनो कपाय कबूते है हास्य १ रति २ अरति ३ शोक ४ मय ५ युगंछा ६ स्त्रीवेद ७ पुरुषवेद ८ नपुंसकवेद ९ पूर्वके सोल कपाय और यह नय नोकशाय सय मील २५ तथा पूर्वके ३५ सब मिल साठ (तिरियुग) और तिर्यंचद्विक इस लिये तिर्यंचगति ६३ और तिर्यंचानुपूर्वी ६२ ॥ १८ ॥

इगचित्चउजाईओ कुखगइउवघायहुतिपावस्त । अपसत्यवणचउ अपढमसंधयणसठाणा ॥ १९ ॥

(इग) एकेन्द्रिजाति (वि) वेद्विन्द्रिजाति (ति) तेरिन्द्रिजाति (चत) और चोरिन्द्रिजाति (जाईओ) ऐसे चार जाति नामकर्म यह सब मिलके छःसठ (कुल्लगइ) अशुभ विहायोगति नामकर्म इस नामकर्मसे शीव गधेकी नाइ चले सो १७ (उवघाय) उपघात नामकर्म १८ (इतिपायस्स) यह सय पापके भेद है (अपसत्थयण्णचच) अशुभयर्णादि चार ७२ (अपढमसंघयणसंठाणा) प्रथमका संघयनको छोडकर ऋपमनाराच १ नाराच २ अर्धनाराच ३ कीलीका ४ और सेयठा यह पांच संघयन और प्रथमका संस्थान छोडकर न्यग्रोध १ सादि २ कुब्ज ३ घामन ४ और हुंडक यह पांच संस्थान सब मिलकर पापतत्त्वका व्याप्ती भेद हुआ ॥ १९ ॥

थावरसुहुमअपज्ज साधारणमथिर मसुभदुभगणि । बुस्सरणाइज्जस थावरदसगविवज्जत्थ ॥ २० ॥

(थावर) स्थावर नामकर्म १ (सुहुम) सूक्ष्म नामकर्म २ (अपज्जं) अपर्याप्ति नामकर्म ३ (साधारणं) साधारण नामकर्म ४ (अथिर) अस्थिर नामकर्म ५ (असुम) अशुभ नामकर्म ६ (दुभगणि) दुर्भाग्य नामकर्म ७ (बुस्सर) दुःस्वर नामकर्म ८ (अणाइज्ज) अनावेय नामकर्म ९ (अजसं) अपयथा नामकर्म १० (थायरदसगविवज्जत्थं) यह स्थावरको दशको प्रससे विप्परित खान लेना ॥ २० ॥ इतिपापतत्त्वम् ॥

इंदिकस्तायअवय जोगापचचउपंचतिभीकमा । किरिआओपणवीस इमाओताओअणुकमसो ॥ २१ ॥

(इविअ) इन्द्रियो पांच (कस्ताय) क्लोधादि फयाय चार (अवय) प्राणातिपासादि अप्रत पाँच (ओगा) मनावि

करनेसे जो क्रिया लगती है यह अपत्याख्यासिद्धि क्रिया १० (विद्धि) जो अशुभ दृष्टिसे देखना, सो दृष्टीकी क्रिया ११ (पुष्टि) जो रागादिकसे कष्टपितृषिक्तकरके स्त्री आदिकके भंगका स्पर्श करना सो स्पृष्टीकी क्रिया १२ (पाशुच्चिअ) जो अपने मनसे स्वरका बुरा विचारना सो प्रातीत्यकीक्रिया १३ (सामंतोयणीअ) अपना अश्व प्रमुखकी प्रसन्नतासे ईर्ष्य करना सो अथवा बुध दृष्टी घी भादिके भाजन छुड़ा रखनेसे वसमें जो व्रसआदि जीवपटकर मरे वससे उगे सो प्रामंतोपनिपातीकी क्रिया १४ (नेसत्थि) नैशस्त्री क्रिया १५ (साहत्थि) स्वहस्त्रिकी क्रिया १६ ॥ २३ ॥

प्राणुविआरपिआ अणमोगाअणवकल्पघइआ । अन्नापओगसमुदा-णपिज्जदोसेरिआवहिआ २४

ने) जो भीष अश्वीयको खाने केआनेसे क्रिया उगे वसको आनयनिकी क्रिया कहते हैं १७ (विआरणिआ) शीषको विदारनेसे विदारणि उगेसो विदारणकी क्रिया १८ (अणमोगा) विना उपयोगसे जो भीज रकम ना तथा हलने चलनेसे जो क्रिया उगे वसे अनामोगिकी क्रिया कहते हैं १९ (अणवकल्पघइआ) इस लोफ 'से जो विरुद्ध आचरण करना वसे अनवकांक्षप्रत्ययिकी क्रिया कहते हैं २० (अन्नापओग) बुसरी प्रयोगिकी क्रिया (समुदाण) समुदायकी क्रिया २२ (पिज्ज) माया और लोभ करनेसे जो क्रिया उगे वसे प्रेमकी क्रिया २३ (दोसे) क्रोध और मानसे जो क्रिया उगे वसे द्वेषकी क्रिया कहते हैं २४ (इरिआयहिआ) रस्ते चलने के व्यापारसे जो क्रिया उगे वसे इर्यापयिकी क्रिया कहते हैं २५ पक्षीसमी क्रिया अग्रमचसापुसेलेके तथा शीषबंदको मी लगति है ॥ २४ ॥ इति आश्रयतत्त्वम् ॥

समिर्द्दगुत्तिपरीसह जइधम्मोभावणाचरित्ताणि । पणत्तिदुवीसदसधार पचभेपहिंसगवन्ना ॥ २५ ॥

(समिद्द) समति (गुत्ति) गुत्ति (परीसह) परिसह (अइधम्मो) यत्तिधम्म (भावणा) भायना (चरित्ताणि) चारित्र (पण) समिति पाच (ति) गुत्तितीन (दुवीस) परिसह पावीश (दस) दशविध यत्ति धम्म (धारस) धारह भायना (पच) चारित्र पाँच (भेपहि) ऐसे सष मिलके संयरके भेद (सगवन्ना) ससायन कहै खिसमें दो भेद है एक द्रव्य संयर भीर बुसरा भायसंघर ओ आते हुये नवीनकर्मकोरोकदेना आत्मस्वरूपमे रहकर उसको भायसंघर कहते है और कर्म पुत्रलकी रुक्कयटकी द्रव्यसंयर कहते है ॥ २५ ॥

इरियाभासेसणादाणे उच्चारेसमिर्द्दसुअ । मणगुत्तिवयगुत्तिकायगुत्तित्तेवय ॥ २६ ॥

(इरिया) यतनापूर्वक रस्तेमें चलना उसको ईर्यासमिति कहते है १ (भास) निर्दोष मापाका जो धोलना उसे मापास मिति कहते है २ (एसणा) निर्दोष आहारको जो ग्रहण करना सो एपणासमति ३ (वाणे) दृष्टिसे और पुजनीसे प्रमार्जन करके बीजको उपगरणको ठठाना और रखना उसको भावानन्निक्षेपणसमिति कहते है ४ (चच्चारे) कफ मल मूत्र आदिको जतनापूर्वक परठना उसे पारिष्ठापनिका कहते (समिर्द्द) पाँचसमिति (सुअ) यह ५ (मणगुत्ति) और मनोगुत्तिके तीन भेद है १ असत्कल्पनाधियोग २ समताभावकी और ३ आत्मविचार ४ (वयगुत्ति) वचनगुत्तिसिके तीन भेद है १ अशुद्ध २ मिथ और ३ शुद्ध व्ययहार ७ (कायगुत्तित्तेवय) कायगुत्ति अशुभ करणीसे कायाको गापरखना ८ ॥ २६ ॥

खुहापिवासासीउण्ह दसाचेळारइत्थिओ । चरिआनिसिद्धियासिआ अक्कोसवहजायणा ॥ २७ ॥

(खुहा) घुघापारिसह १ (पिवासा) प्यासको सहन करना बह पिपासा पारिसह २ (सी) शीत पारिसह ३ (वण्ह)
चण्ण पारिसह ४ (दसा) बंधा पारिसह ५ (वेला) अचेळक पारिसह ६ (अरइ) अरति पारिसह ७ (स्थिओ) स्त्रीके
अगवर्णोंको सराग इटिसें न वेसे सो स्त्री पारिसह ८ (चरिआ) चलनेका पारिसह ९ (निसिद्धिया) नैयेचिकी इस
लिये सशान और सिहकी गुफा आदि स्थानोंमें ध्यानके समय नाना प्रकारके कष्टको सहता हुवा मी निपिइ न फरे
सो १० (सिआ) संघारेकी भूमी कहाँही रंभी निची मिळजानेपरमी मुनि चढेग न फरे सो सब्या पारिसह ११
(अक्कोस) आक्कोश इस लिये कोइ गाडी वेवे तोमी सहन करे १२ (घह) घघ इस लिये कोई पुट जीव मुनिको मारे
पीटे या जानसे मारडाले सो मी धीतरागी साधु क्रोध न करे १३ (आयणा) थाचना पारिसह १४ ॥ २७ ॥

अलामरोगतणफासा मलसक्कारपरीसहा । पद्माअभ्राणसम्मच इअवावीसपरीसहा ॥ २८ ॥

(अलाम) लामान्तराय कर्मके बदयसे जो मागने परमी बीख न मिले तोमी समठा रखे और विचारे कि अन्त
रायकर्मकाबदय है सो अलाम पारिसह १५ (रोग) श्वरावि अतिरोग आने परमी साधु चिकीत्सा करानेकी इच्छामी
न करे किन्तु समभावसे सहनकरे सो रोगपारिसह १६ (तणफासा) तृणस्पर्शपारिसह साधुको तृणआदिको जो
संघारो मिले तोमी शात विचसे वेदना सहन करे १७ (मळ) मळपारिसह इस लिये घरीरपर जो पसीनेसे मेळ बह

जावे तोमी खानादिककी इच्छा न करे १८ (सकारपरीसहा) सत्कारपारसह, उत्कृष्ट न भावे, स्तुति करणेपर सम्-
परिगाम रले १९ (पत्ना) प्रज्ञा इस लिये बही विद्वत्ता होनेपरमी मुनि घमण्ड न रखे २० (अज्ञान) अज्ञानपरि-
सह अज्ञानके लदयसे मुनि बुद्ध्यां न करे २१ (सम्मर्ष) सम्पत्कथपरिसह (इअ) इस प्रकारसे (भावीसपरीसहा)
भावीसपरिसह जाणना २२ ॥ २८ ॥

स्वतीमहवअज्वव मुचीतवसजमेअबोधे । सच्चसोअअर्किचणच धर्मंचजइधम्मो ॥ २९ ॥

(खंती) क्षमा सय प्राणीमात्रपर सम हठी रले किन्तु यति कोइपर क्रोध न रखे १ (महय) मानका त्याग करना
वसको मार्ययधर्म कहते है २ (अज्वव) किरीके साथ कपट नहि रलना सो आर्षवधर्म ३ (मुषी) निरलोभता ४
(तय) तप जो इच्छाका निरोध करना यही तप ५ (संजमे) सचरे प्रकारे संयमका आराधनकरना वही संयम ६
(अ) और (योचये) जानना (सर्ध) सत्यधर्म ७ (सोअं) मनभाविको पवित्ररलना यह शीषधर्म ८ (अर्कि-
घण) बाह्य अम्यगतर परीग्रहका त्याग सो अर्किचनधर्म ९ (च) और (बंभं) द्रव्यसे और मायसे जो मैयुनका
त्याग करना यह ब्रह्मचर्यधर्म १० (अइधम्मो) ऐसे दशप्रकारे यतिधर्म पाळे बसको यति कहना योग्य है ॥ २९ ॥

पढममणिच्चमसरण ससारोपगयायअन्नच । असुइत्तंआसवसवरोज तहनिजरानवमी ॥ ३० ॥

(पढममणिघ) प्रथम अनित्यभाषना इस भावनामें मव्यजीव पेसा विषारे कि घन यीयन आदि सब पदार्थ अनित्य

है आत्माका मूलधर्म अधिनाशी है ? (अक्षरार्ण) अक्षरार्ण भावना कि मृत्युके समय इस जीवको संसारमें धर्म बिना कोई भी शरणभूत नहीं है एक धर्मही शरण है ऐसा विचारना सो २ (संसारो) संसारभावना इस भाषनामें भव्य ऐसा विचारे कि मेरे जीवनें बीरारी छाल धोनिमें परिभ्रमण करते अमन्थेकालचक्र होगये है इस संसारमें पिता सो पुत्र और पुत्र सो पिता ऐसा बलट सुलट अन्ती बेर होता है ऐसा विचारना सो संसार भावना ३ (पगयाय) एकत्व भावना इस भाषनामें भव्य ऐसा चिंतवे कि मेरा जीव अकेलाही आये है और अकेलाही आवेगा सुलडुःख भी अकेलाही भोगेगो ४ (असर्ध) अन्यस्व भावना इसमें भव्य ऐसा विचारे कि मेरा आत्मा अनन्त ज्ञानमयी है और शरीर जब पदार्थ है शरीर आत्मा नहीं है न आत्मा शरीर है ऐसा सर्वेष विचारे ५ (असुश्रुषं) अशुचि भावना यह शरीर खून मौंस हड्डी मलमूत्र आदिसें भरारुमा पसा जो विचारना यह अशुचित्व भाषना ६ (आसव) आसव भावना रागद्वेष और अज्ञान मिथ्यात्व आदिके जोरसे नये नये कर्मका जो धाना अर्थात् शुभाशुभका विचार यह आसव ७ (संयरोअ) संवर भावना शुभाशुभ विचारको छोडकर स्वस्वरूपमें छीन रहना अर्थात् नवीन कर्मको धाने नहीं देना यह निबध्य संवर और अकेला अशुभ विचारको रोकवेना सो व्यवहार संवर भावना ८ (तह) तेसेही (निज्जराज वमी) नयमी निर्जरा भावना निर्जराके दो भेद है एक सकाम निर्जरा और पुसरी अकाम निर्जरा ९ ॥ ३० ॥

लोगसहावोचोही बुद्धश्रवणमस्तसाहगाअरिहा । एजाओभावणाओ भावेअद्यापयत्तेण ॥ ३१ ॥

(लोगसहावो) वरामी लोकत्वभाव भावना इसमें बीवहारअवोकका स्वरूप विचारना (बोहीपुछवा) ३१ मी

सम्यक्स्थयी प्राप्ति होनी पड़ती है ऐसा विचारना यह बोधिवुर्धभभाषना (धम्मस्स) धारणी धर्मभाषना इसमें मध्य ऐसा विचारे कि संसारसमुद्रसे पार होनेके लिये जो विनेस्वरमहाराजने कहा हुआ धर्म है उसका (साह गाअरिहा) साधक कहनेवाला अरिहंसादि मिलना दुर्लभ है (एआओ) इस प्रकारसे कही हुई (भाषणाओ) भाषनाओ (भाषेअपा) विचारनी (पयसेण) प्रयत्नसे ॥ ३१ ॥

सामाअदरथपदमं छेओवट्टावणभवेवीअ । परिहारविमुद्धिण सुट्टमंतहत्सपरायच्च ॥ ३२ ॥

(सामाअ) सामायिक चारित्रद्रव्य और भाषसे (अत्थ) इहां (पदमं) पहिला है १ (छेओवट्टावणमवेपीअं) छेदो पस्यापनीयचारित्र दुसरा है २ (परिहारविमुद्धिण) परिहारविमुद्धि चारित्र ३ (सुट्टमंतहत्सपरायच्च) फिर बोधा सुत्स संपराय चारित्र ४ यह चारित्र वधाना गुणस्थानवाले मुनिको होता है ॥ ३२ ॥

तत्तोअअहस्स्वायं स्वायसव्वस्मिजीवलोगम्मि । जंचरिजणसुविदिआ वच्चतिअयरामरठाण ॥ ३३ ॥

(तत्तोअअहस्स्वायं) उस पीछे पौंचमा यथाख्यात चारित्र (स्वायसव्वस्मिजीवलोगम्मि) यह चारित्र सब जीवलोगमें प्रसिद्ध है (जंचरिजणसुविदिआ) जिसका सेवन करनेसे सुविधित साधु लोगो (वच्चतिअयरामरठाण) अजरामरस्थान कको पावे है ॥ ३३ ॥ इति संयर तत्त्वम् ॥ ३३ ॥

अणसणमूणोअरिआ विचीसखेवणरसच्चओ । कायकिलेसोसलीण—यायवज्जोयतवोहोइ ॥ ३४ ॥

(अणत्सर्ण) सर्वथा आहारका त्याग सपवासादिक सो अनशन तप १ (कणोअरिजा) आहार कमकरना सो अनोदरी तप २ (विषीसंक्षेयण) वृत्तिका संक्षेप करना सो वृत्तिसंक्षेप तप ३ (रसचाओ) विगयका त्याग करना सो रस त्याग तप ४ (कायफिलेसो) लोपादि जो कष्ट करना यह कायक्षेप तप ५ (संलीणयाय) सब इन्द्रियोका वसन करना यह संलीनता तप (बन्धोयतवोहोइ) इस प्रकारसे पाषा सपके छ मेव कई ॥ ३४ ॥

पायच्छिचविणओ वेयावच्चतहेवस्तज्झाओ । झाणउस्सगोविअ अप्मितरओतवोहोइ ॥ ३५ ॥

(पायच्छिचं) जो शुद्ध मनसे गुरु महाराजके पास आलोचना लेना सो प्रायश्चित तप १ (विणओ) विनय तप २ (वेया वधं) वेयावृत्त्य तप ३ (वहेयसग्गाओ) वेसेही स्वाध्याय तप ४ (झाणं) ध्यान तप प्यानका स्वरूप गुरुगमसे धारना ५ (वस्सगोविअ) और कायोत्सर्ग तप (कावसग) ६ (अप्मितरओतवोहोइ) ऐसे छ प्रकारसे अम्यन्तर तप कहा ॥ ३५ ॥

चारसविहंतवोनिज्जाराय वंधोचउविगप्पोअ । पयईठिइअणुभागो पप्समेपहिंनायवो ॥ ३६ ॥

(चारसविहं) ऐसे सब मिलकर चारह मेदे (वो) तप (निज्जाराय) निर्जराके लिये है । इति निर्जेरातस्यम् (बंधो) अथ वयतस्य (वविगप्पोअ) चार मेव है (पयई) १ प्रकृतिबन्ध (ठिइ) स्थितिबन्ध (अणुभागो) २ अनुभाग-बन्ध (पप्स) और प्रवेसबन्ध ४ (मेपहिं) ऐसे चार मेदसे (नायवो) जानना ॥ ३६ ॥

पयइसहावोवुत्तो ठिईकालावहारण । अणुभागोरसोनेओ पप्सोवलसंघओ ॥ ३७ ॥

(पयइसहायोबुधो) प्रकृतियन्ध इसलिये कर्मोंका स्वभाव (ठिईकाखायहारण) कर्मोंका स्थिति-कालका निश्चय यह स्थितियन्ध २ (अणुभागो) ३ अनुभाग षन्ध सो (रसोनेजो) कर्मोंका रस जानना (पपसो) ४ प्रवेशषन्ध (दलसे षओ) कर्मोंके दलका संघय ॥ ३७ ॥

पठपडिहारसिमज हृदचिचकुलालभङ्गारीण । जहएएसिमावा कम्माणविजाणतहमावा ॥ ३८ ॥

(पठ) पाठा, जैसे किसीके आँसोंपर षन्धे हुए पाठोंके संयोगसे कुछ नहीं बेलार देता तेसे ही ज्ञानायरणीय कर्मके स्वभावसे आत्माको अनन्त ज्ञान नहीं होता है १ (पठिहार) द्वारपालकेसमान दर्शनावरणीय कर्मका स्वभाव है जैसे राजाको दर्शन चाहनेवालेको द्वारपाल रोक देते हैं वसी तरह आत्माके दर्शनगुणको दर्शनावरणीय कर्म रोक देता है २ (असि) तरघाट, वेदनी कर्मका स्वभाव ऐसा है कि जैसे सब्ब खरबी तलघारकी धारको घाटनेसे अच्छा लगता है मगर जब जीम कटजाति है तब बुरा होता है वसीही तरह शातावेदनीसे जीवको सुख होता है और अशा तावेदनीसे जीवको दुख होता है ३ (मज्ज) मयराकीछाक समान मोहनीयकर्मका स्वभाव है जैसे मविरासे जीव बेमान होजाते हैं तेसेही मोहनीयकर्मके उदयसे जीव संसारमें मुक्ताते हैं यह कर्म आत्माका सम्यग्दर्शनको और सम्यक् चारित्र गुणोंको रोकता है अर्थात् ढक देता है ४ (हट) खोटासमान आयुर्कर्म है जैसे खोटेमें पडे हुए थोर राजाके हुकम बिन नहीं निकट शकते हैं तेसे ही आयुर्कर्मके जोरसे जीव गतीसे नहीं निकट शकते है ५ (चिच) इस नामकर्मका स्वभाव चित्रकार जैसा है यह कर्म आत्माके अरुपि धर्मको रोकता है जैसे चितारा अच्छा बुरा नाना प्रकारका चित्राम

बनाता है तेसे ही यह नामकर्म आत्माको अही पुरी गतियोमे पहुँचा देता है नाना प्रकारके स्वरूपको धारण करा देता है १ (कुलाड) यह गोत्रकर्म कुमार जैसा है जैसे कुमार अछे और बुरे नाना प्रकारके धरतन बनाते हैं तेसेही इस कर्मके उदयसे शीव ऊँच निच कुलको धारण करते है ७ (मङ्गरीणं) इस अन्तराय कर्मका स्वभाव भङ्गरी जैसा है क्योंकि अय राजा किसीको दान देनेके लिये मङ्गरीको कहे परन्तु मङ्गरी इसको वेचे नहीं तेसेही इस कर्मके उदय यसे जीव दानदि नहीं कर शकते है ८ (अहप्यसिमावा) जैसे इलुका भाव जैसा यह आठोही वस्तुका स्वभाव है (कम्माण) तेसेही आठोही कर्मोंकामी (विजाण) जानो (ठहमावा) तेसेही कर्मोंका स्वभाव ॥ ३८ ॥

इहनाणवत्सणात्रण वेयमोहाउनामगोआणि । विग्धंचपणनवदुअठवीस चउतिसयदुपणविह ॥ ३९ ॥

(इहनाण) यह ज्ञानायणीयकर्म १ (वत्सणात्रण) और दुसरा दर्शनायणीकर्म २ (वेयमोहाउनामगोआणि) तीसरा वेदनीयकर्म ३ ४ मोहीनीकर्म ५ आयुकर्म ६ नामकर्म ७ और सातमा गोत्रकर्म ७ (विग्धं) अन्तरायकर्म ८ (च) यह आठ कर्म (पण) ज्ञानायणीयकी चत्तर प्रकृतियों पाँच है (नव) और दर्शनायणीयकी चत्तरप्रकृति नव (दु) वेदनीकी प्रकृति दो (अठवीस) मोहीनीकर्मकी चत्तर प्रकृति अष्टावीस (चव) आयुकर्मकी चत्तर प्रकृति चार (विसय) नामकर्मकी चत्तर प्रकृति एकतो तीन (दु) गोत्रकर्मकी चत्तर प्रकृति दो (पण) और अन्तराय कर्मकी चत्तर प्रकृति पाँच (विहं) ऐसे सब कर्मोंकी चत्तर प्रकृति एकसे अष्टावन जान लेना ॥ ३९ ॥

नाणेयदसणावरण वेअणिपचेव अतरापअ । तीस कोडाकोडी अथराणठिईयउक्कोसा ॥ ४० ॥
 (नाणेयदसणावरणवेअणिप) ज्ञानावरणी दर्शनावरणी वेदनी (वेद) निखय (अतरापअ) और अन्तराय
 इन चारो कर्मोकी (तीसकोडाकोडी) तीस कोडाकोडी (अथराण) सागरोपमकी (ठिईयउक्कोसा) बल्कूठी स्थिति
 कही है ॥ ४० ॥

सत्तरिकोडाकोडीमोहणिप धीसनामगोपसु । तिचीसअयराइ आउठिइवधउक्कोसा ॥ ४१ ॥

(सत्तरिकोडाकोडी) सत्तर कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति (मोहणिप) मोहनीयकर्मकी है (धीसनामगोपसु) धीस
 कोडाकोडी सागरोपमकी स्थिति नामकर्म और गोप्रकर्मकी है (तिचीसअयराइ) तेवीस सागरोपमकी (आउ) आयु-
 कर्मकी (ठिइ) स्थिति कही (वंधवकोसा) एसे सब कर्मोकी बल्कूठी स्थितिका वंध कहा है ॥ ४१ ॥

धारसमुद्रुत्तजहन्ना वेयणिपअठनामगोपसु । सेसाणतमुद्रुत्त एयवधठिईसाण ॥ ४२ ॥

(धारसमुद्रुत्तजहन्ना) धारस मुद्रुत्तकी जघन्यस्थिति (वेयणिप) सकसाय वेदनीयकर्मकी है अकपाय वेदनीकी २
 समयकी स्थिति है (अठनामगोपसु) आठ मुद्रुत्तकी जघन्यस्थिति नामकर्म और गोप्रकर्मकी है (सेसाणतमुद्रुत्त) शेष
 पाँच कर्मोकी जघन्यस्थिति अन्तरमुद्रुत्तकी है (एयवधठिईसाण) इस प्रकारसे सब कर्मोकी बल्कूठी और जघन्यसे
 स्थिति वंधका प्रमाण कहा ॥ ४२ ॥ इति वंधसत्यम् ॥

सतपयपरूषणया दधपमाणचखित्तफुसणाय । कालोअअतरभाग भावेअप्पाधहुचेव ॥ ४३ ॥

(संतपयपरूषणया) सतपयकी प्ररूपणाद्वार १ (दधपमाण) फिर सिद्धनीयोंके द्रव्यका प्रमाणद्वार २ (खित्त) क्षेत्र द्वार ३ (फूसणाय) सिद्धोंकी स्पर्शनाद्वार ४ (कालोक) कालद्वार ५ (अंतर) अन्तरद्वार ६ (भाग) भागद्वार ७ (भाव) भावद्वार ८ (अप्पाधहु) और अस्पाधहुत्यद्वार ९ (बेध) निधे यह मोक्षके नय द्वार कहै ॥ ४३ ॥

सतसुद्धपयत्ता विज्जतस्सकुसुमवन्नअसंत । सुक्खत्तिपयतस्सउ परूवणामग्गणाईहिं ॥ ४४ ॥

(संत) मोक्ष छवो है (सुद्ध) शुद्ध (पयत्ता) पद होनेसे (विज्जतस्सकुसुमवन्नअसंत) यह विद्यमान है परन्तु यह आकाशके कुसुमकी तरह अछवो नहीं है (सुक्खत्तिपयतस्सउ) यह मोक्षपवकी (परूवणा) प्ररूपणा (मग्गणाईहिं) मार्गणाद्वारो विचारसे कहते है ॥ ४४ ॥

गइइदीएकाय जोपूवेयकसायनाणेय । सजमदसणलेसा भवसम्मै सस्सि आदारे ॥ ४५ ॥

(गइ) गतिमार्गणा ४ (इंदीय) इंदिमार्गणा ५ (काय) कायमार्गणा ६ (जोए) योगमार्गणा ७ (वेय) वेदमार्गणा ८ (कसाय) कपायमार्गणा ९ (नाणेय) ज्ञानमार्गणा ८ (संजम) संयममार्गणा ७ (दंसण) दर्शनमार्गणा ४ (लेसा) लेस्यामार्गणा ६ (मय) मध्यमार्गणा २ (सम्मै) सम्यक्त्वमार्गणा ६ (सस्सि) संनिमार्गणां २ (आदारे) आहार मार्गणा २ ॥ ४५ ॥

नरगहर्षिणदितसभव सन्निअहक्खायस्वइअसम्मत्ते । मुग्खोणाहारकेवल दसणनाणेनसेसेसु ॥ ४६ ॥
 (नरगह) मनुष्यगतिसं १ (पर्णिदि) पंचेन्द्रजातिसं २ (तस) प्रसकायसे ३ (भय) भव्यपणसे ४ (सस्मि) संनी
 पंचेन्द्रसे ५ (अहक्खार्य) पयास्यावधारित्रसे ६ (खइअसम्मसे) खायकसम्यकस्यसे ७ (मुक्खो) मोक्ष जाते हे और
 (गारहार) अणहारीक पदसे ८ (केवलदंसण) केवल दर्शनसे ९ (नाणे) और केवलज्ञानसे इन दश मार्गणा द्वारसे
 जीयो मोक्ष जाते हे १० (नसेसेसु) परन्तु दोष ५२ मार्गणाओसे मोक्ष नहीं जाते ॥ ४६ ॥ इति प्रथमद्वार ॥

द्वपमाणेसिद्धाण जीवदवाणिहुतिणताणि । लोगस्सअसखिजे भागेइक्कोयसवेवि ॥ ४७ ॥

(द्वपमाणेसिद्धाण) सिद्धोके प्रव्यकाप्रमाण (जीवदवाणिहुतिणताणि) सिद्धोमें जीवद्वय अनता है ॥ इति दुसरा
 द्वार २ (लोगस्सअसखिजेभागे) जीवद्वय राश्लोकेके असंख्यातमे भागमे (इक्कोय) एक सिद्ध और (सवेवि) सब
 सिद्ध रहते हे ॥ इति तीसरा द्वार ३ ॥ ४७ ॥

फूसणाअहिआकालो इगसिद्धपहुच्चसाइओणतो । पडिवायाभावाओ सिद्धाणअतरनरिय ॥ ४८ ॥

(फूसणा) स्पर्शना सिद्ध जीयोकी (अहिवा) अशिक है यह चीया द्वार ४ (कालो) काल (इगसिद्धपहुच्चसाइ
 ओणतो) एक सिद्ध आश्रित सादि अनन्त स्थिति है और अनेक सिद्ध आश्रित अनादि अनन्त स्थिति है ॥ इति

कालद्वार ५ (पश्चिमायाभावाओ) सिद्धांतके जीवोंको पिछा पढ़नेका अभाव है ॥ इति छठा द्वार ६ (सिद्धान्तमंतर-
नस्थि) सिद्धांतके जीवोंको अन्तर नहीं है कालकृत और क्षेत्रकृत दोनोंसे इति सातमा द्वार ॥ ४८ ॥

सर्वजियाणमणति भागेतेतेसिद्धसणनाण । खइएभावेपरिणामि एअपुणहोइजीवत्त ॥ ४९ ॥

(सप्तत्रियाणमणति) सब संसारी जीवोंसे सिद्धके जीवों अनन्तमें (भागे) भागमें है इति आठमो द्वार ८ (तेतेसि
द्धसणनाण) उन सिद्धोंके जीवोंके केवलदर्शन और केवलज्ञान (खइए) धार्मिक (भाव) भावमें है (परिणामी एअ)
परिणामी है (पुण) यह पुनः (होइजीवत्त) जीवत्वपना है ॥ ४९ ॥

योयानपुससिद्धा थीनरसिद्धायकमेणसखगुणा । इअमुक्खत्तमेअ नवत्तचालेसओमणिआ ॥ ५० ॥

(योवा) सबसे कम (नपुस) नपुसक (सिद्धा) सिद्ध हुआ (थी) नपुसकसे स्त्रीसिद्ध संख्यातगुणा अधीक है स्त्री
सिद्धसे (नरसिद्धा) पुरुष सिद्ध संख्यातगुणे हुए (कमेणसखगुणा) अनुक्रमें संख्यातगुणा जानना (इअमुक्खत्त)
यह मोक्ष (तस्समेअ) तत्त्व ज्ञानना इस प्रकारसे नय मेव कहे (नवत्तचालेसओमणिआ) इस प्रकारे नव तत्त्व संक्षेपसे
कहेगये ॥ ५० ॥

जीवाइनवपयत्थे जोजाणइतस्सहोइसम्मत्त । भावेणसइद्धतो अयाणमाणेविसम्मत्तं ॥ ५१ ॥

(जीयाइ) जीयादि (नवपयत्थे) नव पदार्थको (जोजाणइ) जो जीव ज्ञानसे है (तस्सहोइसम्मत्त) उस जीवको

अयदयही सम्यक्त्व हो (भाषेणसवृहती) और भायसें जो सर्व है तो (आयाणमाणेयि) अजान भीयोकोभी (सम्मत्त) सम्यक्त्व प्राप्ति होवे ॥ ५१ ॥

सथाइजिणेसरभासिआइ धयणार्इनस्रहाहुति । इअवुद्धीजस्समणे सम्मत्तनिच्चलंतस्स ॥ ५२ ॥
(सथाइं) सर्व (जिणेसरभासिआइं) विनेश्वर महाराजके कहे हुए (वयणार्इं) धचन (नस्रहाहुति) अन्यथा नहीं है अर्थात् सत्य है (इअवुद्धीजस्समणे) ऐसी बुद्धि जिसके मनमें होवे (सम्मत्तनिच्चलंतस्स) वस प्राणीका निश्चल सम्यक्त्व होवे ॥ ५२ ॥

अतोमुट्टुत्तमित्तपि फासिअट्टुज्जेहिंसम्मत्त । तेसिअवट्टुपुग्गल परिअट्टोचेवससारो ॥ ५३ ॥

(अतोमुट्टुत्तमित्तपि) एक अन्तरमुट्टुर्धमाप्रती (फासिअट्टुज्जेहिं) सर्श हुआ हो जिसको (सम्मत्तं) सम्यक्त्वका (तेसिं) तिस जीयको (अवट्टु) अर्थ (पुग्गलपरिअट्टो) पुत्रल परावर्तक वसको परिभ्रमण करना होगा (चेव) निश्चयकरके (ससारो) संसारमें याद मोक्षमें जावेगे ॥ ५३ ॥

उस्सप्पिणीअणता पुग्गलपरिअट्टोमुणेअवो । तेणतातीअट्टा, अणागयद्वाअणंतगुणा ॥ ५४ ॥

(उस्सप्पिणीअणता) अनन्ती वस्सपिणी और अनन्ती अवसर्पिणी जाने पर (पुग्गलपरिअट्टो मुणेअवो) एक पुत्रल परावर्तन होता है (तेणंतातीअट्टा) तैसा अनन्ता पुत्रल परावर्तत अतितकाले हो चुके (अणागयद्वाअणंतगुणा) और अणागसकाले अनन्तगुणा आगे जावेगे ॥ ५४ ॥

जिणअजिणतिरथा गिहिअन्नसलिंगयीनरनपुसा । पचेअसयबुद्धा बुद्धघोहिकणिकाय ॥ ५५ ॥

(जिण) खिनसिद्ध १ (अखिण) अखिनसिद्ध २ (तित्य) तीर्यसिद्ध ३ (तित्या) अतीर्यसिद्ध ४ (गिहि) गृहीलिंग
सिद्ध ५ (अन्न) अन्यलिंगेसिद्ध ६ (सलिंग) स्वलिंगसिद्ध ७ (पी) स्त्रीलिंगसिद्ध ८ (नर) पुरुषलिंगसिद्ध ९ (नपुसा)
नपुंसकलिंगसिद्ध १० (पचेअ) प्रत्येकपुद्गलसिद्ध ११ (सयंबुद्धा) स्वयंबुद्धसिद्ध १२ (बुद्धघोहि) बुद्धघोषितसिद्ध
१३ (कणिकाय) एकसिद्ध १४ और अनेकसिद्ध १५ यह सिद्धके पन्द्रह मेव संक्षेपसे कहा फिर विद्योप विखलाते है ॥५५॥

जिणसिद्धाअरिहता अजिणसिद्धायपुब्बरियपमुहा । गणहारितित्यसिद्धा अतित्यसिद्धायमरुदेवी ॥५६॥

(खिणसिद्धा) तीर्यकर होके मोक्ष गये यह तीर्यकरसिद्ध (अरिहता) रिपभाषि अरिहंतसिद्ध १ (अजिणसिद्धाय
पुब्बरियपमुहा) अखिनसिद्ध सामान्य केवली पुंवरिक गणघर आवि २ (गणहारितित्यसिद्धा) गणघर गौतमाषि तीर्य
सिद्ध ३ (अतित्यसिद्धायमरुदेवी) अतीर्यसिद्ध वह मरुदेवी ४ ॥ ५६ ॥

गिहिलिंगसिद्धमरहो बलकलधीरीयअन्नलिंगम्मि । साहुसलिंगसिद्धा थीसिद्धाचदणापमुहा ॥ ५७ ॥

(गिहिलिंगसिद्ध) गृहीलिंग सिद्ध हुये (मरहो) यह भरताषि ५ (बलकलधीरीय) वस्कलधीरीयाषि तापसके
धेपमें जो सिद्ध हुये (अन्नलिंगम्मि) यह अन्यलिंग सिद्ध जानना ६ (साहुसलिंगसिद्धा) साधुके धेपमें जो सिद्ध हुए
यह स्वलिंगसिद्ध ७ (थीसिद्धार्थदणापमुहा) स्त्रीके लिंगमें जो सिद्ध हुए यह धदनवालाषि ८ ॥ ५७ ॥

पुसिद्धागोयमाई गंगेयाईनपुसयासिद्धा । पत्तेयसयबुद्धा भणियाकरकहुकविलाई ॥ ५८ ॥

(पुंसिद्धागोयमाई) पुरुष लिंगसिद्ध गौतमादि० (गंगेयाईनपुसयासिद्धा) गंगेयादि ओ सिद्ध हुए यह नपुसकलिंग सिद्ध १० (पत्तेयसयबुद्धा) प्रवेकदुद्धसिद्ध और स्वयंबुद्ध अनुक्रमसे (भणिया) कथा (करकहु) करकहु राजा ११ (कथिलाई) और कथिलयादि कहे १२ ॥ ५८ ॥

तहदुद्धचोहियुरुचोहिया इगसमयपगसिद्धाय । पगसमपविअणेगा सिद्धातेणेगसिद्धाय ॥ ५९ ॥

(तह) फिर तसे ही (बुद्धयोहियुरुचोहिया) बुद्धवोधित सिद्ध हुए यह गुरुके उपदेशसे ११ (इगसमयपगसिद्धाय) एक समयमें एकही सिद्ध होए एक सिद्ध महावीर आदि १४ (पगसमपविअणेगा) (सिद्धातेणेगसिद्धाय) ओर एक समयमें अनेक सिद्ध होय यह रिपमादि अनेक सिद्ध कहिये १५ ॥ ५९ ॥

जइआइहोइपुच्छा जिणाणमग्गसिउत्तरतइया । इक्कस्सनिग्गोयस्स अणतभागोयसिद्धिगओ ॥ ६० ॥

(जइआइहोइपुच्छा) जिस जिस समयपर भगवान्को पुछनेमें आवै (जिणाणमग्गसिउत्तरतइया) उस उस समय पर अनेस्वर महाराजके मार्गमें यह ही उत्तर मिलता है कि (इक्कस्सनिग्गोयस्सअणतभागोय) एक निगोवके अनतमें भागे (सिद्धिगओ) सिद्धोमें गये हे ॥ ६० ॥

इति नतवत्थप्रकरण समाप्तम् ।

॥ अथ श्रीदण्डकप्रकरण मूलसहित हिन्दी अनुवादसहित प्रारम्भ्यते ॥

मेउचउथीसजियो तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ । दण्डगपपद्धितेच्चिय थोसामिसुणेहभोमवा ॥ १ ॥
 नमिबंधगयीसभिणे) बोधीश विनेश्वरोको नमस्कारकरके (तस्सुत्तवियारलेसदेसणओ) वणुंके सूत्रोमें करा
 केशमात्र कहनेसे (दण्डगपपद्धितेच्चिय) दण्डगके पदोंकरके इन भगवानोकी (थोसामिसुणेहभोमवा) में स्तवना
 हुं सो हेमव्यप्राणिजीवो तुम सुनो ॥ १ ॥

इआअसुराई पुढवाईवेइदियादओचेव । गण्भयतिरियमणुस्सा वतरजोइसियवेमाणी ॥ २ ॥

(नेरइआ) सात नरकको १ दण्डक (असुराई) असुरावि भुवनपतिका १० दश दण्डक (पुढवाई) पृथ्वीकायादि
 षक (वेइदियादओचेव) दो इंद्रियाधि विकलेंद्रिके १ दण्डक (गण्भयतिरिय) गर्मजसियेचका २०
) गर्भज मनुष्यका २१ मांदणक (वंतर) व्यतरका २२ मादणक (जोइसिय) ज्योतिपि देवोका २३
 १) और वैमानिक देयोका २४ मादणक ऐसे सब मिलकर चौबीस दण्डक समज केना ॥ २ ॥

इमा सरीरमोगाहणायसधयणा । सन्नासठाणकसाया लेसईदीयवसमघाया ॥ ३ ॥

(संक्षिप्तचरित्रमा) यह समग्रहणीनीगाथा संक्षेप मात्र कहे है (शरीर) शरीरद्वार ३ (मोगाहणाय) अवगाहना द्वार २ (संग्रहणाय) संग्रहणद्वार ३ (सन्ना) संज्ञाद्वार ४ (संठाण) संस्थानद्वार ५ (कसाया) कषायद्वार ६ (हेस) हेसाद्वार ७ (इविय) इन्द्रियद्वार ८ (दुस्सुघाया) दो प्रकारे समुत्थातद्वार ९ ॥ ३ ॥

टिठीदसणनाणे जोगुवओगोवधायचवणठिई । पञ्चत्तिकिमाहारे सग्निगइआगईवेए ॥ ४ ॥

(विठी) दृष्टिद्वार १० (दंसण) दर्शनद्वार ११ (नाणे) ज्ञानद्वार अज्ञानद्वार १२ (जोगु) योगद्वार १३ (यओगो) उपयोगद्वार १४ (वयाय) उपपातद्वार १५ (चवण) व्ययनद्वार १६ (ठिइ) स्थितिद्वार १७ (पञ्जत्ति) पर्याप्तिद्वार १८ (किमाहारे) किमाहारद्वार १९ (सत्ति) संज्ञाद्वार २० (गई) गतिद्वार २१ (आगई) आगतिद्वार २२ (वेद) वेदद्वार २३ षणुन अस्पधहुत्थद्वार २४ इति धौवीशद्वार जाणना ॥ ४ ॥

चउगण्भतिरियवाउसु मणुआणपचसेसतिसरीरा । धावरचउगेवुहुओ अगुलअसखभागतणू ॥ ५ ॥

(षठगण्भतिरियवाउसु) गर्भप्रतिर्यच और वातकायके औदारिक वैक्रिय तेजस और कर्मण यह चार शरीर होते है (मणुआणपंच) ओर मनुष्योके पांचोही शरीर होते है (सेसतिसरीरा) वाकीके एकवीश दंडकोके विये तिन तिन शरीर है १३ धेवता १ नारकी यह १४ दंडकमें वैक्रिय १ तेजस २ कर्मण ३ यह ३ शरीर होवै धायर ४ विक छंद्री ५ पय ७ दंडकमें औदारिक १ तेजस २ कर्मण ३ यह ३ शरीर होवै वृत्ति १ शरीरद्वार ॥ ५ ॥ (धावरचउ

नेत्रुद्गो) धनस्पतिवल्के चार स्यावरको जपन्य और बल्कट ऐसे दो प्रकारे (अगुलअसंखमागतणु) अंगुलके असंख्यातमे भागे शरीरकी मधगाहना होती है ॥ ५ ॥

सर्वेसिपिजहन्ना साहावियअगुलस्ससखसो । उकोमपणसयधणू नेरइयासचहत्थसुरा ॥ ६ ॥

(सपेसिपिजहन्ना) सब दण्डकोके विषे जघन्यसे (साहावियअगुलस्सअसंखसो) स्वाभाविक अंगुलके असंख्यातमे भागे शरीर होते है (उकोसपणसयधणू) और बल्कटी अवगाहना पांचसे धनुष्यक्ती (नेरइया) नारकीके बीयोकी है (सचहत्थसुरा) और देयोकर बल्कटा शरीरमान सात हायका होता है ॥ ६ ॥

गज्जभयतिरिसहस्सजोयण वणस्सईवहियजोयणसहस्स । नरतेइवितिगाऊ वेइदियजोयणेघार ॥ ७ ॥

(गज्जभयतिरिसहस्सजोयण) गर्भअतिर्यचका शरीर एक हजार जोजनका है (वणस्सईवहियजोयणसहस्स) और यनस्पविकायका शरीर एक हजार जोजनसे कुछ अधिक होते है (नरतेइवितिगाऊ) मनुष्य और तेइदिका शरीर तिन गावका होता है (वेइदियजोयणेघार) और वेइदिका शरीर चारह जोजनका है ॥ ७ ॥

जोयणमेगचउरिदि देहमुच्चत्तणसुपमणिय । वेउधियदेहपुण अगुलसखसमारमे ॥ ८ ॥

(जोयणमेगचउरिदि) एक जोजन चौरदिका (देहमुच्चत्तणसुपमणिय) शरीरका संख्या सूत्रमे करा है (वेउधि

यदेहपुण) फेर वैक्रिय शरीरका अनुमान कहाते है (अंगुलसंस्समारंमे) औदारिक शरीरयालोंके तथा वैक्रिय शरीर-
पाठीके वस्तर वैक्रिय मारंमतीयेर अंगुलके संख्यातमे भागे होता है ॥ ८ ॥

देवनरअदियलम्ब तिरियाणंनवयजोयणसयाइ ! द्युगुणंतुनारायाण भणियवेउवियसरीर ॥ ९ ॥
(देवनरअदियलम्ब) देवताका वैक्रियशरीर एक छालजोजनका होता है और मनुष्यका वैक्रियशरीर एक
छाल जोजनसे कुछ अधिक होता है (तिरियाणंनवयजोयणसयाइ) और तिर्यंषका वैक्रिय शरीर नषसे जोजनका
(द्युगुणंतुनारायाण) और नारक्योका शरीर मूलसे दूना होता है (भणियंवेउवियसरीर) इसप्रकारे वैक्रिय शरीरका
प्रमाण कहा ॥ ९ ॥

अतमुद्दुत्तनिरये मुद्दुत्तचत्तारितिरियमणुपसु । देवेसुबद्धमासो उक्कोसविउवणाकालो ॥ १० ॥
(अतमुद्दुत्तनिरये) नारक्योंके उचरवैक्रियशरीरका काल अतर्मुद्दुत्तका होवे है फेर दुसरा करणा पढता है (मुद्दु
त्तचत्तारितिरियमणुपसु) मनुष्य और तिर्यंषके वैक्रिय शरीरका काल मान चार मुद्दुत्तका है (देवेसुबद्धमासो) और
देवोंके उचरवैक्रियशरीरका काल एकपखदिनका (उक्कोसविउवणाकालो) इस प्रकारसे वैक्रिय शरीरका उल्लेखका
उमान कहा है ॥ इति शरीर अयगाइना द्वार २ ॥ १० ॥

थावरसुरनेरइया असपयणायविगलछेवद्वा । सबयणछगणभय नरतिरिपसुमुणेयवं ॥ ११ ॥

(घायरसुरनेरइया) पांच स्यावर तेरे देवता और एक नारक ऐसे सब मिलके रगणीसदंढकोके विये (असंघयणाय) संघयण नही है (विगळछेयडा) और तीन विकलेंद्रिको एक छेयठा संघयण है (संघयणछकंगभय) छे संघयण गर्भ अओ (नरतिरिपसुयिमुणेयर्ष) मनुष्य और तिर्यचको जान लेना ॥ इति चौथिस दढके संघयण द्वार ५ ॥ ११ ॥

सधेसिचउदहवासन्ना, सधेसुरायचउरसा । नरतिरियछसठाणा हुडाविगळिविनेरइया ॥ १२ ॥

(सधेसिचउदहवा) सब दंढकोके विये चार तथा दश (सन्ना) संज्ञा होती है ॥ इति चौथीदा दंढकके चतुर्य संज्ञाद्वार (सधेसुरायचउरसा) सब देयोका समचोरस संस्थान है (नरतिरियछसठाणा) मनुष्य और तिर्यचको छही संस्थान होते है (हुडाविगळिविनेरइया) विकलेंद्रि और नारकीको एक हुंढक ही संस्थान होता है ॥ १२ ॥

नाणाविहधयसूई बुब्बुहवणत्राउतेठअपकाया । पुढवीमसूरचढा—कारासठाणओभणिया ॥ १३ ॥

(नाणाविह) नाना प्रकारका (धय) ध्यत्रके आकारे संस्थान (सूई) सुईके आकारे (बुब्बुह) अठके बुब्बुचुदाके आकारे (वणयावतेवगपकाया) अनुक्रमसे वनस्पतिकाय वाचकाय सेवकाय और अपकायका है (पुढवीमसूरचंदा द्वारा) और पृथ्वीकायका मसूरकीदाल अथवा बग्नके आकारे (संठाणओभणिया) इस प्रकारसे चौथीषा दंढकके षम संस्थानद्वार कहा ॥ १३ ॥

सधेविचउकसाया लेसळकंगभतिरियमणुएसु । नारयतेऊवाऊ विगळात्रेमाणियतिलेसा ॥ १४ ॥

(सपेथिषडकसाया) सर्व दंडकोके विषे चारोही कपाय होते है इति शोषीषा दंडकोके छठा कपायद्वार ॥ (छेसछकं-
 गम्भतिरियमणुपसु) छेहीलेसा गर्भज तिर्यच और मनुष्यको होते है (नारयतेजवाक) और नारक तेचकाय पाचकाय
 (विगळा) और तिनधिकसेत्रि एसे छे दंडकोके विषे प्रथमकी तीन लेस्या होता है (वेमाणियतिलेसा) और
 देवोंको अन्तकी तीन लेस्या होति है ॥ १४ ॥

जोइसियतेउलेसा सेसासधेविहुतिचउलेसा । इदियदारसुगम मणुआणसत्तसमुग्घाया ॥ १५ ॥

(जोइसियतेउलेसा) और ज्योतिपीकी एक तेजोलेस्याही होति है (सेसासधेविहुतिचउलेसा) और शेष सब दंडकोके
 विषे कृष्णादि चार लेस्या है इति शोषीष दंडकोके लेस्याद्वार ७ (इवियवारसुगम) और इन्द्रियद्वार तो सुगम है ८ ॥
 (मणुमाणसत्तसमुग्घाया) मनुष्यको सातोही समुद्रयाव होति है ॥ १५ ॥

वेयणकसायमरणे वेउवियतेयप्यआहारे । केवलियसमुग्घाया सत्तइमेहुतिसन्नीण ॥ १६ ॥

(वेयण) बेदना (कसाय) कपाय (मरणे) और मरण (वेचविय) वैक्रिय (तेयप्य) तेजस और (आहारे)
 आहारक (केवलियसमुग्घाया) केवली समुद्रयाव (सत्तइमेहुतिसन्नीण) इस प्रकारसे सातोही समुद्रयाव संक्षि-पंचन्त्री
 मनुष्यको होता है ॥ १६ ॥

पग्गिदियाणकेत्रलि तेउआहारगविणाउचत्तारि । तेवेउवियवज्जा विगलासन्नीणतेचेव ॥ १७ ॥

(पृग्विद्याणकेयलि) एकेत्रीको केवली (तेचआहारगविणलघवहारि) तथा तेजस और आहारक इस तीनुको घर-
 अके वाकीक्य चार समुद्रपात एकेत्रिको होता है (तेवेचविययज्या) षड् तिन और वैक्रिय यह चार घरजके (विगला
 समीणते) तीन समुद्रपात विक्लेन्त्रि ओर असमीको होता है (चेष) निधे करके ॥ १७ ॥

पणगण्मतिरिसुरेसु नारयवाऊसुचउरतियसेसे । विगलवुविट्टीयावर मिच्छच्चिसेसतियविट्टी ॥ १८ ॥

(पणगण्मतिरिसुरेसु) परन्तु गर्भज तिर्यच और तेरह देवोंको प्रथमका पांच समुद्रपात होता है (नारयवाऊसु)
 नारक और वातकायके विषे प्रथमका (चवर) चार समुद्रपात है (तियसेसे) और शेषके सात दंडकोके विषे प्रथमका
 तीन समुद्रपात होता है ॥ इति चोवीस दंडके नवमा समुद्रपात द्वार ॥ (विगलवुविट्टी) विक्लेन्त्रिको दो दृष्टि होती
 है एक सम्यक् और दुसरी मिष्यादृष्टि ऐसे दो (धावर) पाच स्थावरको (मिच्छच्चि) एक मिष्यादृष्टिही होती है
 (सेसतियविट्टी) शेष रहे हुये ओ सोलह दंडक उसके विषे सम्यक् मिश्र और मिष्यात्थ यह तीन दृष्टि होती है ॥१८॥
 इति चोविश दंडकेके दथमा दृष्टि द्वार ॥

धावरधितिसुअचक्स्तु चउरिदिस्तुतगुगसुपमणिय । मणुआचउदसणिणो सेसेसुतिगतिगमणिय ॥१९॥

(धावर) पांच स्थावरको (वितिसुअचक्स्तु) तथा षड्त्रि और तेइन्त्रिको एक अचसुदधर्नही होता है (चवरि
 सिस्तु) चवरिद्विको (तगुगसुपमणिय) चसु तथा अचसु ऐसे दो वर्धन सूत्रमे कहा है (मणुआचउदसणिणो) और

मनुष्यके विष तो षष्ठुदर्शन अष्टसुदर्शन अधचिदर्शन और केवलदर्शन ऐसे चारोही होते है (सेसेसुतिगातंगभाणय) प्राक्कीके सच दंढकीके विषे केवल दर्शके तीनतीन दर्शन फल है ॥ इति चोषीश दंढकीके ११-१२-दर्शनद्वार ॥ १९ ॥ अज्ञानाणतियतिय सुरतिरिनिरपथिरेअनाणवुग। नाणा ज्ञाणवुविगले मणुपपणनाणतिअनाणा॥२०॥ (अज्ञानाणतियविषिय) तीन अज्ञान और तीन ज्ञान (सुरतिरिनिरप) देवताको तथा तिर्यच और नारकके होते है (धिरेअनाणवुग) आर स्यावरको मति तथा शुव ऐसे दो अज्ञान होते है (नाणाज्ञाणवुविगले) दो ज्ञान तथा दो अज्ञान विकलेंद्रिको होते है (मणुपपणनाणतिअनाणा) और मनुष्यको तो पाच ज्ञान और तीन अज्ञान ऐसे आवोही होते है ॥ इति चोषीश दंढकीके ज्ञान अज्ञानद्वार १३ ॥ २० ॥

इकारससुरनिरप तिरिपसुतेरपनरमणुपसु । विगलेषउपणवाप जोगतियथावरेहोई ॥ २१ ॥

(इकारससुरनिरप) वेपता और नारकको इग्यारे योग होते है (तिरिपसुतेर) तिर्यचको तेरह (पनरमणुपसु) और मनुष्यको पत्रेही योग होते है (विगलेषउ) विकलेंद्रिको चार (पणवाप) याचकायको पांच (जोगतियथावरे होइ) और स्यावरको तीन योग होते है ॥ इति चोषीश दंढकीके योगद्वार १४ ॥ २१ ॥

उवओगामणुपसु धारसनवनिरयतिरियदेवेसु । विगलवुगेपणछकं चउरिंदिसुथावरेतियग ॥ २२ ॥

(उवओगामणुपसु) मनुष्यके विषे सपयोग (धारस) धारह होते है (नयनिरयतिरियदेवेसु) नारक तिर्यच और

देवोंको नव उपयोग होते हैं (विगलपुगेपण) दो विकलैत्रिको पांच (छकं) छ (चगरिविसु) चौरेन्द्रिको (पावरति यग) और स्यावरको तीन उपयोग होते हैं ॥ इति चौबीश वंशकमें उपयोगद्वार १५ ॥ २२ ॥

सखमसंस्वासमपु गन्मयतिरिविगलनारयसुराय । मणुआनियमासंस्वा वणऽणतायावरअसंस्वा ॥२३॥

(संस्रमसंस्वासमपु) एक समयके विषे संख्याता और असंख्याता (गन्मयतिरि) गर्भअतिरिच (विगलनारयसुराय) विकलैत्रि नारक और देयता उत्पन्न होते हैं (मणुआनियमासंस्वा) मनुष्योंनिष्पन्नकरके संख्याता उत्पन्न होते हैं (वणऽ णता) वनस्पतिकाय अनन्ता (पावरअसंस्वा) और स्यावर असंख्याता उत्पन्न होते हैं ॥ २३ ॥

असन्निनरअसस्वा जहउववाओतहेवचवणेवि । धावीससगतिदसंवास सहस्सउकिट्टुपुठवार्ह ॥ २४ ॥

(असन्निनरअसंस्वा) असधी मनुष्यो असंख्याता उत्पन्न होते हैं (जहउववाओ) जैसेही उत्पन्न होते हैं (तहेवचव येवि) जैसेही बचते हैं ॥ इति चौबीश वंशकमें उपपातद्वार तथा वषणद्वार (धावीससगतिदसंवाससहस्स) धावीस द्वार छठ द्वार तिन द्वार और दस द्वार वर्षको आयु (उकिट्टुपुठवार्ह) उरकृष्टो अनुक्रमे पृथ्वीकायादि इस छिमे पृथ्वीकाय अप्काय वातकाय और वनस्पतिकायका ज्ञान लेना ॥ २४ ॥

तिविणगितिपछाऊ नरतिरिसुरनिरयसागरतितीसा । वंतरपछंजोइस वरिसलस्स्वाहिअपलिआ॥२५॥
(तिषिणग्नि) तिन अहोरात्रिका आयु अभिष्पयका (तिपछाऊ) तीन पत्स्योपमका आयु (नरतिरि) मनुष्य और

त्रियंशका (सुरनिरयसागरतितीसा) देवता और नारकका चतुष्टय आयु वेतीस सागरोपमका होता है (यत्तरपलं) ब्यंत
रका आयु एक पत्न्योपमका (जोइस) और ग्योतिपी देयोका आयु (धरिसलस्वादिअंपलिअं) एकलास्य वर्ष अधिक
एक पत्न्योपमका होता है ॥ २५ ॥

असुराणअद्वियअयर देसूणदुपछयनवनिकाए । धारसवासुणपणदिण छम्मासउकिट्टुविगलाऊ ॥२६॥
(असुराणअद्वियअयर) असुरकुमारनिकायका आयु एक सागरोपमसे कुछ अधिक होता है (विसूणदुपछयनवनिकाए)
शेपनयनिकायका आयु देसेवणा दो पत्न्योपमका होता है (धारसयासुणपणदिण) वेद्वीका धारस वर्ष और वेद्वीका
गुण पयास दिन (छम्मासउकिट्टुविगलाऊ) चत्वारितीका छ मासका चतुष्टय आयु अनुक्रमसे समज लेना ॥ २६ ॥
पुढवाइदसपयाण अतमुहुचजहस्रआउठिई । दससहसवरिसठिइआ भयणाहिवनिरयवतरिया ॥२७॥

(पुढवाइदसपयाण) पृथ्वीकायाधि दशपक्षी पांच स्यावर तीन विकलेग्नि पंचेद्वितियं च और मनुज्यका (अंतमुहु
चजहस्रआउठिई) जघन्यसे आयुक्षी स्थिति अंतमूर्द्धक्षी कही है (दससहसवरिसठिइआ) दश हजार वर्षकी आयु
स्थिति जघन्यसे (भयणाधियनिरययंतरिया) दस मुयनपति नारक और ब्यंतरीककी कही है ॥ २७ ॥

धेमाणियजोइसिया पल्लतयट्टुसआउआहुंति । सुरनरतिरिनिरएसु छपज्जत्तीथावेरेचउग ॥ २८ ॥
(धेमाणियजोइसिया) वैमानिक और ग्योतिपीका आयु जघन्यसे (पल्लतयट्टुसआउआहुंति) एक पत्न्योपमके आठमे

भागे होता है १८ ॥ इति चौबीस दंडके चतुष्टय और अधन्यसे स्थितिहार कदा ॥ (सुरनरतिरिणरपसु) देवता मनुष्य तिर्यच और नारकके विषे (छपञ्चती) छद्मी पर्याप्ति होती है (धावरेषठगं) और पाच स्यावरके विषे प्रथमकी चार पर्याप्ति है ॥२८॥ विगलेपचपञ्चती छद्विसिआहारहोइसवेसिं । पणगाइपपभयणा अहसन्नितियमणिस्तासि ॥ २९ ॥

(विगलेपचपञ्चती) तीनो विकलेंद्रिके विषे प्रथमकी पांच पर्याप्ति होती है ॥१९॥ इति चौबीस दंडकमें पर्याप्तिहार ॥ (छद्विसिआहारहोइसवेसिं) सब जीवोंके आशरे छद्मी विशीका आहार जान लेना (पणगाइपपभयणा) इतना विशेष कि पृथ्वी फायादि पांचोही स्यावर पदके विषे भजना है इस लिए छपविशीका आहार होये मी सही और तीन ब्यार पाच विशीका मी होवे २० ॥ इति चौबीस दंडके छद्विशी आहार ॥ (अहसन्नितियमणिस्तासि) अष तीन संज्ञा दार कहवा हुं ॥ २९ ॥

चउविहसुरतिरिपसु निरपसु अ दीहकालिगीसन्ना । विगलेहेउवपसा सन्नारहियाथिरासवे ॥ ३० ॥ (चउविहसुरतिरिपसु) चार प्रकारके देवोंके विषे तथा तिर्यच (निरपसुअवीहकालिगीसन्ना) और नारकके विषे तीर्थ कालकी संज्ञा होती है (विगलेहेउवपसा) और विकलेंद्रिके विषे हितोपदेशकीसंज्ञा होती है (सन्नारहियाथिरासवे) और स्यावरो सबही संज्ञा रहित होते है ॥ ३० ॥

मणुआणदीहकालिय दिट्टीवाओवपसिआकेवि । यज्जपणतिरिमणुअच्चिय चउविहदेवेसुगच्छति ॥३१॥

(मनुआणदीहकालिय) मनुष्यको दीर्घकालकी सज्ञा होती है (विठीषामोषपसिआकेवि) फिसनेक आचार्य मनुष्यको इटियादोपदेशकी २ संज्ञा भी कहते है ॥ इति चोधीशदढकमें तीन प्रकारकी संज्ञाद्वार ॥ (पद्मपणतिरिमणु अक्षिय) पर्यासा पथेद्रितिर्यच और मनुष्य निखय करके (चवयिहवेवैसुगच्छति) चार प्रकारके देवोंके विषे जाते है ३१

सखाउपज्जपणिदि तिरियनरेसुतहेवपज्जत्ते । भूदगपत्तेयवणे पपसुच्चियसुरागमण ॥ ३२ ॥

(संखाउपज्जपणिदि) संख्याते आयुवाले पर्यासापचेन्द्री (तिरियनरेसुतहेवपज्जत्ते) तिर्यच और मनुष्यके विषे तेसेही पर्यासा (भूदगपत्तेयवणे) पृष्ठीफाय अपकाय और प्रत्येक धनस्पतिकाय (पपसुच्चिय) इस पांचोदंढकके विषे निखय करके (सुरागमण) देयता वरपस होते है ॥ ३२ ॥

पज्जत्तसखगम्भय तिरियनरानिरयसत्तगेजति । निरयउवद्दापपसु उववज्जतिनसेसेसु ॥ ३३ ॥

(पज्जत्तसखगम्भय) संख्याता वपके आयुवाले पर्यासे गर्मज (तिरियनरा) तिर्यच और मनुष्य (निरयसत्तगेजति) यह दोनोही सातोही नरकके विषे जाते है (निरयउवद्दा) नरकसे निकले हुवे जीवो (एपसु) यह वो दंढकमे उववज्जति वपज्जे हे (नसेसेसु) शेष दंढकोके विषे वत्पस नही होते है ॥ ३३ ॥

पुढवीआउवणस्सइ मज्जेनारयधिवज्जियाजीवा । सधेउववज्जति नियनियकम्माणुमाणेणं ॥ ३४ ॥

(पुढवीआउवणस्सइ) पृथ्वीकाय अण्काय और यनस्पतिकायके (मग्गे) विषे (नारयविषयिआजीया) नारकके जी-
शोको यर्जक (संपेउववअति) और सर्व जीयो उत्पन्न होते है (नियनियकम्मणुमाणेण) अपने अपने कर्मानुसारे ॥ ३४॥

पुढवाइदसपपसु, पुढवीआउवणस्सईजति । पुढवाइदसपपइहिय, तेउवाउसुउववाओ ॥ ३५ ॥

(पुढयाइदसपपसु) पृथ्वीकायादि दश पदके विषे (पुढवीआउवणस्सईजति) पृथ्वीकाय अप्पकाय और यनस्पति
कायके जीयो सय होते है (पुढवाइदसपपइहिय) और पृथ्वी कायादि दश पदमेंसे निकले हुए जीयो (तेउवाउवसुउव
वाओ) तेउकाय और धातुकायके विषे उत्पन्न होते है ॥ ३५ ॥

तेउवाउगमण, पुढवीपमुहम्मिहोइपयनयगे । पुढवाइठाणदसग, विगलाइतियतहिजति ॥ ३६ ॥

(तेउवाउगमण) तेउकाय और धातुकायकाजाना (पुढवीपमुहम्मिहोइपयनयगे) पृथ्वीकायादि नवपदके विषे होता
है (पुढवाइठाणदसग) पृथ्वीकायादि दश स्थानकके जीयो (विगलाइतियतहिजति) तीन विकलेन्द्रिमें उत्पन्न होते है
जाये है ॥ ३६ ॥

गमणागमणंगण्मय, तिरिआणसयलजीवठाणेसु । सवथजतिमणुआ, तेउवाउहिजति ॥ ३७ ॥

(गमणागमणगण्मयतिरिआणसयलजीवठाणेसु) गर्भजतिर्यच्छाजाना आना सव दंडकोके विषे होता है (सबत्प

अतिमनुष्या) और मनुष्योंकामी जाना सब बंदकोफे बिये होसा है (वेगयाऊहिनीजंति) परतु तेवकाय और याचका पसें नही आते ॥ ३७ ॥

वेयतियतिरिन्नेसु, इरथीपुरिसोयचउविहसुरेसु । पिरविगलनारपसु, नपुसवेओहवइएगो ॥ ३८ ॥
(वेयतियतिरिन्नेसु) तीन वेद तिर्यंष और मनुष्यको होते है (इरथीपुरिसोयचउविहसुरेसु) और चार प्रकारके देवोके बिये स्त्री वेद तथा पुरुष वेद होता है (पिरविगलनारपसु) और पांच स्थायर विफलेन्द्रि और नारकके बिये (नपुसवेओहवइएगो) एक नपुसक वेदही होता है ॥ ३८ ॥

पञ्जमणुयायरगी, वेमाणियभत्रणनिरयंत्रतरिया । जोइसचउपणतिरिया, वेइदिदिइदिमूआउ ॥ ३९ ॥
(पञ्जमणुयायरगी) पर्याधा मनुष्य और घादर अग्निकाय (वेमाणियभत्रणनिरयंत्रतरिया) वैमानिक मुवनपति नारक और भ्यंतर (जोइसचउपणतिरिया) ज्योतिषि वीरिन्द्रि और पंचेन्द्रि तिर्यंष (वेइदितिइदिमूआउ) तथा दोइन्द्रि तेइन्द्रि पृथ्वीकाय और अप्यकाय ॥ ३९ ॥

वाऊत्रणस्सईचिय, अहियाअहियाकमेणमेहुति । सवेविइमेभावा, जिणामएणतसोपत्ता ॥ ४० ॥
(वाऊत्रणस्सईचिय) वाउकाय और धनस्सत्तिकाय यह सब निश्चय करके (अहियाअहियाकमेणमेहुति) अनुक्रमे

एक एकसे अधिक होते है (सर्वविभ्रमेभावा) यह सबही मी भाव (खिणामएर्णतसोपचा) हे जिनेश्वर देव मैंने अनती
बेर पाया है ॥ ४० ॥

सपइतुह्मभचस्त, दृढगपयममणभगगहिययस्त । दृढतियविरइसुलह, लहुममर्दितुमुक्खपय ॥ ४१ ॥

(संपइतुह्मभचस्तदृढगपयममणभगगहिययस्त) अब चौथीश दंडकोके स्थानकोके विये भमनेसे (लिपुच) भागा
हुवा है मन जिसका ऐसा तुमारा भफ पसा मुझको (दृढतियविरइसुलह) मन धचन और काया यह तीनदंडका
विरामते सुभ्रम एसो (लहुममर्दितुमुक्खपय) मोक्ष पद मेरेको जलवी देवो ॥ ४१ ॥

सिरिजिणहसमुणीसर, रजेसिरिधवलचदसीसेण । गजसारेणलिहिया, पसाविन्नचीअप्पहिया ॥४२॥

(सिरिधिणहसमुणीसर) श्री खिनहंसमुनीश्वरके (रजेसिरिधवलचदसीसेण) राज्यके समय श्री धवलचंद्रतपाध्या
यके क्षिप्य (गजसारेणलिहिया) गजसार मुनिने लिखा है (पसाविन्नचीअप्पहिया) यह विशिष्टि अपनी आत्माके
हितके अर्थे ॥ ४२ ॥

॥ इति हिन्दी अनुवादसहित दंडक प्रकरणं समाप्तम् ॥

यन्वे विनवरम् ।

अथ लघु-सद्यणि-प्रकरणम् ।

गाथा ।

नमिय जिण सबद्ध, जगपुञ्ज जगगुरु महावीर । जयुधीवपयत्ये, बुच्छंसुत्तासपरहेउ ॥ १ ॥

अर्थ—(जगपुञ्ज) तीन जगत् के पुज्य (जगगुरु) तीन जगत्के गुरु, ऐसे (सयज्ञ) सर्वज्ञ (जिण) श्री अग्निेश्वर (महावीर) महावीर स्वामीको (नमिय) नमस्कार करके, (जंयुधीय) जंयुधीपके अदर रहे हुए शास्यते, (पयत्ये) पदार्थ उनको (सुत्ता) सुत्रसे जाणकर (सपर हेवं) स्वपर हितार्थ (बुच्छ) कहुंगा ॥ १ ॥

भाचार्थ—तीन जगत्के पुज्य और गुरु ऐसे सर्वज्ञ श्री महावीरस्वामिको नमस्कारकर जंयुधीपमें रहे शास्यते पदार्थ उनको स्वपर हितार्थ कहुंगा ॥ १ ॥

खटा जीयणवासा, पद्य कुढाय तिस्य सेढीओ। विजय इह सलिजाओ, पिडिसि द्योइ सघयणी॥२॥
 अर्थ—प्रथम भरतक्षेत्रघट् इस अंबुद्वीपमें कितने (खटा) खंढवा है! द्वितीय (जोबण) योजनका प्रमाण, त्रितीय
 भरतादिक (घास) घाशक्षेत्र कितने है? चोथा वैसाव्यादिक (पद्य) पर्वत कितने है? पांचमा इन पर्वतोपर (कुढाय)
 कूट (शिलर) कितने है! छठा मागपादिक (तिस्य) तीर्थ कितने है! सातमा, वैसाव्यादिक पर्वतोपरि रविदुई, विषा
 भरो घ आमियोगिक देवोंकी (सेढीओ) भेणियें किस्ती है? आठमें कच्छादिक (विअय) विअय कितना है? नवमें
 पद्मब्रह्मादि (बह) ब्रह्म कितने है? दशमें गङ्गासिंघ्यादि (सलिजाओ) नदीयें कितनी है! एवम् इसी दशो द्वारोको
 (पिडिसि) इकठायाने समुदायके विवरणकरके यह (संघयणी) संप्रहिणी नामका प्रकरण (होइ) होता है ॥ २ ॥

भावार्थ—पहिला द्वारमें भरत क्षेत्रके मुत्तादिक अंबुद्वीपमें कितने खट है! दुसरेमें योजनका प्रमाण तीसरेमें घास
 क्षेत्र चोथेमें पर्वत पांचमें इन पर्वतोपर शिलर छठमें तीर्थ सातमें भेणियोंकी संख्या आठमें विअय नवमें ब्रह्म,
 दशमें नविये इनही दशोद्वारोकरके यह संघयणी प्रकरण होता है ॥ २ ॥

णउअ सय खढाण, भरह पमाणेण भाइय् लक्खे। अहवा णउयसयगुण, भरह पमाणं हवइ लक्ख ॥ ३ ॥

अर्थ—(लक्खे) एकलाल योजनका अंबुद्वीप चसको (भरहपमाणेण) भरतक्षेत्रके प्रमाणसे, “याने पांचसो छवींश
 योजन छकछासे” (भाइये) मांगाकर करे तो (णउआ सय खढाणी) भरतक्षेत्रके मुत्तादिक “एकसो और निवे”

संख्या होते हैं, (अहया) या (णवयसय) एकसौ और नये क्षेत्रीको (भरहपमाणेण) भरतक्षेत्रके प्रमाणसे (गुणं) गुणाकार करते तो (उत्स्र) एक लाख योजनका यह अनुधीप (इयत्र) होता है ॥ ३ ॥

भाषार्थ—एक लाख योजनके अनुधीपको, पाँचसौ छवीस योजन छ कलासे माँगें तो भरतक्षेत्रयत् एकसौ नये क्षेत्र (भाग) इस अनुधीपमें होते हैं, इसी एकसौ नयेको पाँचसौ छवीस योजन छकलासे गुणाकार करें तो एक लाखका क्षेत्रफल होता है ॥ ३ ॥

अहविगखंडे भरहे, दो हिमवते अ हेमवइ चउरो। अट्टमहा हिमवति, सोलसत्तडाइ हरिर्वीसे ॥ ४ ॥

अर्थ—(अहय) अर्थात् (इग खंडे भरहे) एकसंख्या भरतक्षेत्रका (दो हिमवते) दो संख्या हिमवंत पर्वतके (अ) पुनः (चउरो) चार संख्या (हेमयइ) हेमवंत करके युगलियाँके क्षेत्रका (अठ) आठ संख्या (महाहिमवंते) महा हिमवंत पर्वतके (सोलसत्तडाइ) सोलह संख्या (हरिवासे) हरिवर्ष करके युगलियाँके क्षेत्रका ॥ ४ ॥

भाषार्थ—एक संख्या भाग भरतक्षेत्र दो संख्या भाग बुद्धहिमपत चार संख्या भाग हेमवंत, आठ संख्या भाग महाहिमवंत घोले संख्या भाग हरिवर्ष, एय इकतीस संख्या इस गायसे जाणना ॥ शेष आगे ॥ ४ ॥

चत्तीस पुण निसडे, मिलिया तेसट्टि यीय पासेवि। चउसट्टिओ विदेहे, तिरासि पिंढेइ णउयसया ॥ ५ ॥

अर्थ—(पुण) फिर (चत्तीस) यत्तीस संख्या प्रमाण (निसडे) निषध पर्वत, यह सर्व (मिलिया) मिलानेसे (सेसट्टि)

तेसठ खंडवा होते है, "इसीतरह" (बीयपासेवि) दुसरी तर्फमी "एक खंडवा परवत क्षेत्रका दो शिल्लरी पर्वतके चार पेरणपक्ष क्षेत्रके आठ रूपी पर्वतके, शोला रम्यक क्षेत्रके वर्षीत नीलवंत करके तीसरा वर्षे घर पर्वतके, एवं यह तैसठ खंडवा तथा (चउसठिओ) चौसठ खंडवा (विषेइ) महाविदेह क्षेत्रके यह सर्व (तिरासि) तीनी रात्रीके खंडवा (विडेइ) मिलानेसे (णचयसमं) एकसोने निबे खंडवा होते है इति प्रथम द्वारम् ॥ ५ ॥

'माथार्य--वर्षीया खंडवा भाग निपन्न पर्वत इसके साथ ऊपरकी गाथाके खंडवा भाग मिलानेसे (तेसठ) खंडवा भाग होते है ॥ इसीतरह, दुसरी तर्फे १ खंड भाग परपत्र २ खंड भाग शिल्लरी पर्वत ४ क्षेत्र भाग पेरणपक्ष, आठ खंडवा भाग, रूपी पर्वत १६ खंडवा भाग, रम्यक क्षेत्र ३२ खंडवा भाग नीलवंत और ६४ खंडवा भाग महाविदेह इतनासबकी गणना की आय ती, एकसो निबे (३९०) खंडवा होते है ॥ ५ ॥

जोयण परिमाणाइ, समचउरसाइ इत्थ खडाई । लरकस्सय परिहीण, तप्पाय गुणेय जुतेव ॥ ६ ॥
 अर्थ--(इत्थ) यहां अंडुदीपके अन्वर (जोयण परिमाणाइ) एक योजनके प्रमाणवाले (समचवरंसाइ) समच तुरस (खंडाई) खंडवा कितने होंगे ? सबकी रीति कहते है ॥

(उक्कत्स) एक लाख योजनकी (परिहीण) परिधिका जो एक आय उसको (तप्पाय) तत्पाव याने क्षेत्रके चौथे दिस्सेसे लैसे लाख योजनके अंडुदीपका चौथाहिस्सा २५ हजार योजन होता है वससे (गुणेय) गुणाकार करणेपर गणितपक्ष (क्षेत्रफल) का प्रमाण (जुतेव) निश्चय होता है ॥ ६ ॥

भायार्थ—छात्र योजनाके अंयुद्धीपनें एक योजन सम घतुरत्र कितन सडष हाग। उसका क्रम आगे विस्ताते है ॥ एक साल योजनाकी परिधीका जो अंक आय उसको मूल क्षेत्रके बोये मागसे गुणा करणेपर “क्षेत्रफल बनता है” ॥ १ ॥

विक्रमवगवद्दशुण, करणी वदृस्स परिरओ होई। विक्रमपायगुणिओ, परिरओ तस्स गणियपय ॥७॥

अर्थ—अंयुद्धीपका (विस्वसंम) विष्कंम याने गोल क्षेत्रका विस्तार [प्रमाण] अितना हो उसका (वग) धर्ग याने अितना विष्कंम हो उनको उतनेसेहि गुणा करे, याद उस धर्गके अंकोको (ददृ गुण) दशगुणा करनेसे जो अंक आये उसको “यिसमसम पयइयगो” इस दृदृद्द क्षेत्र समासकी गायाके अन्दर जो (करणी) करणेकी आत्राय कही है उसके मुतायिक इन अंकका मूल सोधा जाय तथ (वदृस्स) गोल क्षेत्रकी (परिरओ) परिधि (होइ) होती है और याद उस (परिरओ) परिधिके योजनका जो अंक आय उसको (विस्वसंम) विष्कंम योजनके (पायगुणिओ) पादसे याने बीये हिस्सेके अंकोसे गुणाकरे तथ (तस्सगणियपयं) उसका गणितपद याने क्षेत्रफल होता है ॥ ७ ॥

भायार्थ—अिस क्षेत्रका अितना विष्कंम हो उनको उतोसे गुणाकरणेपर धर्ग बनता है उस धर्गको दश गुणाकर “दृदृद्द क्षेत्र समासमें घताये” हुएकमेंसे उस विष्कंम क्षेत्रको परिधिनिकाळे याद उस परिधिके अंकोको विष्कंमके घटु धौंश अंकोसे गुणाकरणेपर गणितपद याने क्षेत्रफल बनता है ॥ ७ ॥

परिधी तिलस्वसोलस, सहस्स दोसय सत्तवीस हिया ।
 कोसतिग अट्टावीस, धणुसय तेरंगुलद्धहियं ॥ ८ ॥

अर्थ—अनुबीपका विष्कम एक छाल योजनका है उसकी (परिधी) परिधी (तिलस्वस सोलस सहस्स) तीन छाल दोछे हजार (दोसय सत्तवीस हिया) दोसो सत्ताईस योजन अधिक (कोसतिग) तीन कोस (सय) एकसो (अठ्ठा वीस) अठ्ठास (धणु) धनुष्य और (तेरंगुलद्धहियं) सार्धत्रयोवन्नागुल अनुबीपकी जानना ॥ ८ ॥

(परिशिष्ट) इस परिपीको अनुबीपके विष्कम प्रमाणसे धनुष्यास निम्नल उससे गुणाकरे तब अनुबीपका गणितपद (वेत्रफल) होता है उसकी संख्या नीचेकी गाथासे दिखाते है ॥

माथार्थ—अनुबीपका विष्कम एक छाल योजनका है जिसकी परिधी “तीन छाल दोछे हजार दोसो सत्ताईस योजन तीन कोप” एकसो अठ्ठाईस धनुष साढातेरा अगुल (३१६२२७) योजन (३) कोप (१२८) धनुष्य (१३॥) अगुल) होती है ॥ ८ ॥

सत्तेवय कोडिसया, णउआ छप्पन्नसयसहस्साइं । चउणउय च सहस्सा, सयंदिक्कं च साहियं ॥ ९ ॥

अर्थ—(य) जो (सत्तव) सात (धुया) धतानि (सो) (कोपी) कोडोपरे (णउआ) निचे कोट “याने कालसे

निये क्रोट” (उपपन्नसय) उपपन्नयो (सहस्राई) सहस्र “याने छपन्नलाख” (च) पुनः (चणतयं सहस्रा) चोराणुं हजार (सयं दियष्ट) वेदसोसै (साहियं) साधिक ॥ ९ ॥

मायार्थ—सातसो निघे क्रोट, छप्पन लाख चोराणुं हजार, वेद सो समचतुरस्र योजनसे अधिक ॥ ९ ॥

गाउअ मेहगपन्नरस, घणुसया तह घणूणि पन्नरस्स । सट्ठिच अंगुलाई, जंबुडीवस्सगणियपर्यं ॥१०॥
(युग्मम्)

अर्थ—(गाठअमेग) एक कौस्र (पन्नरस घणुसया) पद्रहसौ धनुर्व्योपरी (घणुणिपन्नरस्स) पनराघनुप्य (च) पुनः (सट्ठि अंगुलाइ) साठ अंगुल (जंबुडीयस्स) जंबुडीपका (गम्मिययं) गणितपद जाणना ॥ इति द्वितीयद्वारम् ॥ १० ॥
एक कोप पनरेसो पनरा घनुप, साठ अंगुल यह एक लाख ओजगके जंबुडीपका गणितपद (क्षेत्रफल) जानना अंकुसे गणित (७९०, ५६, ९४, १५०) योजन (१) कोप (१५१५) घनुप्य (६०) अंगुलेति ज्ञेयम् ॥ १० ॥

भरहाइ सत्तवासा, वियङ्क चउ चउरतीस वट्टियरे । सोलसवक्खारगिरि, दो चित्त विचिच्च दो जमगा ११
अर्थ—(भरबाइ सत्तवासा) भरतादि सात वास क्षेत्र “दसके नाम” १ भरत २ हेमवत ३ हरिवर्ष ४ महाविदेह

५ रम्यक ६ परण्यवत ७ परवत ॥ इति तृतीयद्वारम् ॥

“घतुर्थ निखल क्षेत्रद्वार”

देवकुठ चत्तरकुठ यह दो युगलियाँके क्षेत्र छोडकर, शेष प्यार क्षेत्रोंके अंदर (वियह चरवष्ट) वर्तुल वैताढ्य प्यार है फिर (इयरे) इन वैताढ्योंसे इतर (चरतीस) चरतीस छम्बे वैताढ्य पर्वत है, पुनः (सोलसषक्सारगिरि) शोले यक्खारागिरि “विजयाँके भंतरमे है” फिर (चित्त विचिच) १ विच २ विचिच यह दो पर्वत और है इतर दो पर्वत, (अमगा) एक अमग बुसरा समग ॥ ११ ॥

भाषार्थ—भरत १ हेमवत २ हरिचर्प ३ महाविदेह ४ रम्यक ५ द्विरण्यवत ६ परवत ७ यह सातयाश क्षेत्र है ॥
 देवकुठ, चत्तरकुठ इन दोनों क्षेत्रोंको छोड शेष प्यार क्षेत्रोंमें वर्तुल वैताढ्य एक एक है इनमें भिन्न चोतीस छम्बे, वैताढ्य, शोले यक्खारा गिरि, दो चिच १ विचिच २ दो अमग १ और समग २ यह सब मिल अष्टावन शास्वते पर्वत, शेष आगे ॥ ११ ॥

दोसय कणय गिरीण, चउ गयदताय तह सुमेरुय । छ्वासहरापिडे, प्युणसत्तरिसयादुधी ॥ १२ ॥

अर्थ—देवकुठ और चत्तरकुठ इन प्रत्येक क्षेत्रमें पाँच २ द्रह है और एकैक द्रहके समयतर्फ दश २ कंचनगिरि है, अतः इन सबको मिलानेसे (दोसयकणयगिरीण) दोसो (२००) कंचनगिरि होते है, (च) फिर (चरगयवंता) प्यार गजदते पर्वत है (तह) तैसे (सुमेरु) एक सुमेरु (च) और इनके दोनो तर्फ, तीन २ मिलकर (छ) छ (यासहरा) वर्षधर, पर्वत है, इन सबको (पिडे) इक्काकरणेसे (सयादुधी) दोसो (प्युणसत्तरि) एक कम सितर पर्वत होते है ॥ १२ ॥

भायार्थ—देवकुठ वचरकुठ इन प्रत्येक क्षेत्रमें पांच २ ब्रह्म है, और एक २ ब्रह्मके दोनो तर्फ दक्ष २ कंचन गिरी है इससे इन दोनो क्षेत्रोंमें दोसो पर्वताकी संख्या हुई फिर ब्यार गखदंत पर्वत एक मेरु गिरी इन मेरु गिरीके दोनो तर्फ तीन २ यर्पपर पर्वत इन सबको मिलानेसे दोसो इग्यारा (२११) पर्वत प इसके साथ पूर्वके (५८) मिलानेसे दोसो एक कम सिचर (२१९) शास्रते पर्वत इस ज्युष्टीपमें है ॥ १२ ॥

सोलस वक्खारेसु, चउ चउ कूढाय हुति पत्तेय । सोमणस गधमायण, सचट्टय रुप्पि महाहिमवे ॥१३॥

अर्थ—(सोलसवक्खारेसु) शोला वक्खार पर्वताके अवर (पत्तेयं) प्रत्येकपर (चउचउकूढा) ब्यार ब्यार शिखर (हुति) है, यह शोले पर्वतापर सर्व चोसठ शिखर हुए फिर (सोमणस गधमायण) एक सोमनस द्वितीय गंधमादन इन प्रत्येक गिरिपर (सचे) सात सात कूट है (रुप्पि महाहिमवे) रूपी और महाहिमवंत इन दोनो पर्वतोपर (अट्टय आठ आठ कूट है, एवं ९४ कूट (शिखर हुए) ॥ १३ ॥

भायार्थ—शोले वक्खार पर्वताके प्रत्येकपर ब्यार २ कूट होनेसे, चोसठ कूट, फिर सोमनस और गंधमादन इन दोनोपर सात २ कूट होनेसे चयदा प रूपी और महाहिमवंत इन दोनोपर आठ २ कूट होनेसे शोला यह सय मिला नेसे चोराणु (९४) कूट होते है ॥ १३ ॥

चउतीस वियधेसु, विजुप्पह निसढ नीलवतेपु । तह मालवत सुरगिरि, नव नव कूढाह पत्तेय ॥१४॥

अर्थ—(बचतीस शिखरों) वैतालम्बनामके शोतीश पर्वतापर, ष (विष्णुप्यह) विद्युत् प्रम नामका गजवंत गिरि
 स्या (सिखर) निषध गिरि स्या (नीलवंतेशु) नीलवंत गिरि (तह) तेसेहि (मालवंत) माल्यवंत नामका गजवंत
 गिरि स्या (सुरगिरि) मेरुगिरि, यह एक कम शालीश पर्वतापर (पथेयं) प्रत्येके २ (नव नव कुडाई) नव नव कुट
 है ॥ एवं पूर्वके और यह मिलकर (४४५) कुट हुए ॥ १४ ॥

भावार्थ—शोतीश लम्बे वैतालम्ब ष एक विष्णुत्वम, बुक्ता निषध, तीसरा नीलवंत, चौथा माल्यवंत पाचमा
 सुमेरु इन इन शालीश पर्वतापर, नव २ कुट होनेसे तीसरो इक्षवन् कुट हुए, और पूर्वके मिलनेसे (४४५) कुट
 होते हैं ॥ १४ ॥

हिम सिहरिषु इकारस, इय इगसट्टि गिरीसु कूडाण। एगचे सवधर्णं, सय चउरो सत्तसट्टीय ॥१५॥

अर्थ—(हिम) हिमवंत गिरि स्या (सिहरिषु) शिखरी पर्वत, इन प्रत्येकपर (इकारस) इगारा २ कुट है, (इय)
 यह (इगसट्टि गिरीसु) सर्व इगसठ पर्वतापर जो (कूडाणं) कुट हैं उसको (एगचे) एकत्व करणसे (सवधर्णं) सर्व
 संख्या (सयचउरो) च्यारसे (सत्तसट्टीयं) सठसठ कुट (सिखर) होते हैं ॥ १५ ॥

भावार्थ—हिमवंत और शिखरी इन दोनों पर्वतापर इगारा २ कुट है, एवं सर्व इगसठ पर्वतापर च्यारसो सठसठ
 (४९७) कुट होते हैं ॥ १५ ॥

चउसत्त अट्ट नवगे, गारसकूळेहिं गुणह जह सल्ल । सोलस बुदु गुणयाळ, बुवेयत्तगसट्टि सय चउरो ॥ १६१ ॥

अर्थ—(सोलस) पद्दस पर्वतोंके (षट्) ध्यार कूट गिननेसै चौसठ होते हैं ॥ (बु) दो पर्वतोंके (षट्) साठ २ कूट गिननेसै चयदे होते हैं (दु) और दो पर्वतोंके (अष्ट) आठ २ कूट गिननेसे शोले होते हैं (गुणयाळं) एक क्म चालीस पर्वतोंके (नवगे) नव २ कूट गिनते तीनसो इकावन (३५१) होते हैं (बुवेय) दो पर्वतोंके (पगा-रस कूठेहिं) इग्यारा २ कूट गिननेसै घावीस होते हैं एवं पूर्वोक्त सर्व कूट (गुणह) गुनतां (अहसखं) ययासंख्यासै (सय चउरो सगसट्टि) ध्यारसे सट्शठ (४६७) होते हैं ॥ १६ ॥

भायार्ग—शोलोपर ध्यार २ के हिसाबसे चौसठ, दोपर साठ २ के हिसाबसे चयदा, दोपर आठ २ के हिसाबसे शोला वन चालीसपर नव २ के हिसाबसे तीनसो इकावन दोपर इग्यारा २ के हिसाबसे घावीस, एवं इगसठ पर्वतोंपर ध्यारसे सट्सठ (४६७) कूट जाणना ॥ १६ ॥

चउतीसविजयसु, उसहकूढा अट्टमेरु जलुमि । अट्टयदेवकुराह, हरि कूढ हरिस्सयसट्टी ॥ १७ ॥

अर्थ—(चउतीसं विजयसु) चमयत्तिके चौतीस (३४) विजयमें एकैक (चसहकूढा) ऋषभकूट है, और (मेरु) मेरु पर्वतके प (जंयुमि) जंयु पृथके (अष्ट) आठ २ कूट हैं, पुनः (वेवकुराहं) वेयकुरु अंवरमी (अह) आठ कूट

है, फिर धामलि वृक्षके मध्यका (हरिकूट) हरिकूट, और (हरिस्सस) हरिस्सह ये दो कूट इन कूटाके साथ मिला गेसे (सही) साठ मूमि कूट होते है ॥ पंचम कूट द्वार मिति ॥ १७ ॥

भायार्थ—चोतीश विजयके चोतीश ऋषम कूट और एक मेरु पर्वत, दुसरा जंबुवृक्ष तीसरा वैयकुण्ड इन तीनाके आठ २ मुमिकूट, फिर शाल्मलि वृक्षके बीच हरि कूट और हरिस्सह यह दो कूट, एवं मुमि कूटाकि संख्या साठ (१०) होती है ॥ १७ ॥

मागह वरदाम पमास, तित्यविजयसु परवय भरहे । चउतीसा तिहिगुणिया, दुरुत्तरसयं तु तित्याण १८

भार्थ—(विजयसु) वचीस विजय, य (परवय) परवत्, और (भरहे) भरत्क्षेत्र, इन प्रत्येक चोतीश स्थानोके अन्दर, एक (मागह) मागध, दुसरा (वरदाम) वरदाम, तीसरा (पमास) प्रमास, ये तीनो (तित्य) तीर्य है, अतः (चउतीसा) चउतीशको (तिहि) तीनसे (गुणिया) गुणा करे तो (तु) फिर (दुरुत्तरसयं तित्याणं) एकसो दो (१०२) तीर्य होते है ॥ १८ ॥

भायार्थ—यचीशविजय और एक परवत्, एक भरत इन चोतीश क्षेत्रमें एक मागध दुसरा वरदाम तीसरा प्रमास यह तीन २ तीर्य हरएक क्षेत्रमें होते है अस्तु एकसो दो (१०२) सवी तीर्योक्ति संख्या जानना ॥ १८ ॥

विजाहर अभिओगिय, सेढीओ दुद्धिदुद्धि वेयहे । इय चउगुण चउतीसा, छचीस सय तु सेढीण ॥१९॥

अर्थ—(वेपथे) वेसाङ्गफे ऊपर, एक (विज्जाहर) विद्याधर और हुसरी (अभिओगिय) आभियोगिक धयाका (हुन्नियुत्ति) दो दो (सेवीओ) भेजिये है तय (इय) ये (चवतीसा) चोतीश दीर्घ (उम्बे) वेताङ्ग्यांको (चवगुण) ध्यार गुणा करणीसे (मु) फिर (छचीस सयं सेवीणं) एकसो छचीस भेजिये जंयुद्धीपमें होती है ॥ १९ ॥

भाथार्थ—प्रत्येक उम्बे वेताङ्ग्यांपर, विद्याधर और आभियोगिक देषांकी दो दो भेजिये है ॥ अतः प्रत्येकपर च्यार २ के हिसाबसे एकसो छचीश भेजिये होती है ॥ १९ ॥

चक्षीजेअवाइ, विजयाइ इत्यहुति चउतीसा । महबह छ पउमाइ, कुण्डुदसगति सोलसगं ॥ २० ॥

अर्थ—(चक्षीजे अयाइ) चक्षीजेतव्यानि, याने चक्रवर्ची जिन क्षेत्रको जीतकर वस्से राज्य करे ऐसे (विजयाइ) विजय (इत्य) इस जयुद्धीपमें "दक्षीस महाविषेह एक परेयत एक भरत यह मिलकर (चवतीसा) चवतीश (हुंति) है ॥

(पउमाइ) पश्चादिक महाद्रह (छ) पद याने १ पश्च, २ महापश्च, ३ तिनिष्ठि, ४ केसरी, ५ पुंढरीक, ६ महापुंढरीक, यह छ है, पुनः (कुण्डु) वेयकुठ और वचरकुठ इन दोनो क्षेत्रोंमें पांच पाच द्रह है यह मिलकर (वसगति) दद्यद्रह हुए इसके साथ ऊपरके मिजानेसे (सोलसग) सोलह (महबह) महान्द्रह इस जयुद्धीपमें आणना ॥ २० ॥

भाथार्थ—जिस क्षेत्रको चक्रवर्ची जीतकर वस्से राज्य करे उसको विजय कहते है, ऐसे विजय जंयुद्धीपमें, चक्षीश महाविषेह एक परेयत और एक भरत, यह चोतीश है ॥

पद्म १ महापद्म २ त्रिगिच्छि ३ केसरी ४ पुण्डरीक ५ और महापुण्डरीक ६ इन छके साय वेधकुठ ओर त्रषट्कुठ इन क्षेत्राके पाच २ द्रह मिलानेसे शोले महान्द्रह अंबुद्धीपमे जानना ॥ २० ॥

गंगा सिंधुरचा, रत्नवई चउनईओ पत्तेयं । चउदसहिं सहस्सेहिं, समग वचति जलहिंमि ॥ २१ ॥
 अर्थ—अंबुद्धीपके दक्षिण भरत क्षेत्रमे एक (गंगा) गंगा दुर्धी (सिंधु) तिन्धु यह दो षष्ठी नदीये है, इसी तरह उत्तरकी तर्फ पेरयत क्षेत्रमे एक (रचा) रचा दुर्गी (रत्नवई) रक्तवर्षी यह दो षष्ठी नदीये है, इन (पत्तेय) प्रत्येक २ (चर) ब्यार (नईओ) नदियोंके (चउदसहिं सहस्सेहिं) चउदा षवदा हजार नदियोंका परिवार है, और इनकी (समग) समग्र याने सर्व संख्या, छप्पन्न हजार नदियें होती है और (जलहिंमि) समुद्रके अंदर आके (वचति) मिलती है ॥ २१ ॥

भाषार्थ—अंबुद्धीपके भरत क्षेत्र आसी एक गंगा, दुर्गी सिन्धु, और पेरयत क्षेत्र आसी एक रक्त, दुर्गी रक्तवती, यह ब्यारों नदिये अपने २ षवदद २ हजार नदियोंके परिवारसे समुद्रमे आके मिलती है ॥ २१ ॥

एव अम्भितरिया, चउरो पुण अट्टवीस सहस्सेहिं । पुणरवि छप्यन्नेहिं, सहस्सेहिंजति चउसलिला ॥ २२ ॥

अर्थ—(पुण) फिर (एवं) ऐसेहि एक हेमवत बुजा पेरण्यवत इन दो युगलियोंके (अम्भितरिया) अम्भतर क्षेत्रकी नदिये एक रोहिता दुर्गी रोहिताशा तीर्थी रूपकूला और बोधी सुवर्णकूला, यह (चउरो) ब्यारों नदिये

अपनी २ (अट्टवीस सहस्त्रेहि) अट्टाइस २ हजार नदियोंके परिवार सहित समुद्रमें आके मिलती है, (पुणरवि) पुनरपि एक हरियर्यं दुजा रम्यक इन दो युगलियोंके क्षेत्रकी, एक हरिकाता दुम्बी हरिसलिला, तीजी नरकांता और बोयी नारिकांता ये (चतसलिला) ध्यारों नदिये अपनी २ (छप्पभेहि सहस्त्रेहि) छप्प, २ हजार नदियोंके परिवार सहित समुद्रमें (अंति) जाती है ॥ २२ ॥

भाषार्थ—हेमपत और पेरण्यवत इन दो युगलियोंके अम्यंतर क्षेत्रकी, रोहिता १ रोहितांशा २ रूपकूला ३ और सुवर्णकूला ४ यह ध्यारों नदिये अपने २ अठार्षस २ हजार नदियोंके परिवारसे, ७ हरिवर्ष, और रम्यक इन दो क्षेत्रकी हरिकांता १ हरिसलिला २ नरकंता ३ और नारिकांता ४ यह ध्यारों नदिये अपने २ छप्पन २ हजार नदियोंके परिवारसे समुद्रमें जाके मिलती है ॥ २२ ॥

कुरु मझे चउरासि, सहस्त्राई तहय विजय सोलसेसु । वचीसाण नईण, चउदस सहस्त्राइ पत्तेय ॥२३॥
 अर्थ—(कुठ मझे) देयकुठ और उचरकुठ इन दोनो क्षेत्रोंकी क्रमसे सीतोवा और सीता नदियोंमें छ छ अंतर नदिये मिलती है और उन छ छ नदियोंका याने प्रत्येक छ नदियांका परिवार (चउरासि सहस्त्राई) चौराशी हजार नदिये है, (तहय) तैसेहि, पश्चिम महापिदेइकी (विजय सोलसेसु) झौले विजयके अन्दर प्रत्येकमें, रका और रकपती यह दो दो नदिये गिणनेसे (वचीसाण नईण) वचीस नदिये होती है, और यह (पत्तेय) प्रत्येक २ अपने २ (चउदस सहस्त्राई) चउदस २ हजार नदियोंके परिवारसे है ॥ २३ ॥

भावार्य—बुद्ध और वेचकुठ इन दोनों क्षेत्राकी क्रमसे, सीता और सीतीवा नदियांमें छ छ अंतर नदिये मिलती है और प्रत्येक नदीका परियार चतुदह २ हजार नदियांका है ॥

फिर पश्चिम महाविदेहकी, शोले विजयामें प्रत्येक विषयके अन्दर, रफा और रकुवती, इन नामकी दो नदिये होनेमें बतीश नदिमें होती है और इन प्रत्येकका चौदह २ हजार नदियाका परियार है ॥ २३ ॥

चउदस सहस्स गुणिया, अढतीस नइओ विजय मशिष्ठा। सीओयाए निवढति, तहय सीयाइ एमेव २४

अर्थ—(विजय मशिष्ठा) महाविदेहकी पश्चिम शोले विजयके अन्दरकी ३२ व छ अंतर नदिये यह मिलाकर, (अढतीस नइओ) अढतीस नदियांको (चउदस सहस्स गुणिया) चौदह हजारसै गुणा करते पांच लाख बत्तीस हजार (५३२०००) नदिये होती है यह सब (सीओयाए) सीतीदाके अन्दर (निवढति) मिलती है, (तहय) ऐसेही (सीयाइ) सीता नदीके अन्दरमी (एमेव) ऐसेही याने पूर्व शोले विजयकी, और छ सचरकुठ क्षेत्रकी अंतर नदिये यह सब मिलकर पूर्व संख्यायत् (५३२०००) नदिये मिलती है ॥ २४ ॥

भावार्य—पश्चिम शोले विजयके अन्दरकी बत्तीस पश्चिम विदेहक्षेत्रकी अन्तरनदिये छ इन अढतीस नदियाको चौद हजारसे गुणा करनेपर “पांच लाख बतीश हजार (५३२०००) नदियें होती है और यह सब सीतीवा नदीमें आके मिलती है” ऐसेही पूर्वी शोले विजयकी बतीश और पूर्वविदेह क्षेत्रकी अन्तर छ यह अढतीश नदियेंमी पूर्वोक्त दिसावसे (५३२०००) के परियारसे सीता नदीमें जाके मिलती है ॥ २४ ॥

सीया सीओया विय, वचीस सहस्स पचलक्खेहिं । सबे चउदस लक्खा, छप्पन्न सहस्स मेलविया ॥ २५ ॥

अर्थ—प्रत्येक (सीया सीओयायिय) सीता और सीतीदा यह दोनो नविये अपने २ (षष्ठीस सहस्स पंचलक्खेहिं) पांच छास और षष्ठीस हजार नवियो सहीत समुद्रमे जाती है, पर्यं (सबे) सर्व इस अणुद्वीपके अन्दर (चउदस लक्खा) धीवह लाख (छप्पन्न सहस्स) छप्पन हजार नवियें (मेलविया) मिलानेसैं होती है ॥ २५ ॥

भावार्थ—सीता और सीतीदा मर दोनो अपनी २ पांच २ लाख बतीश २ हजार नवियाके परिभारसे समुद्रमे जाके मिलती है ॥ पर्यं इस अणुद्वीपमें सष नवियाकी संख्या धीवह लाख छप्पन हजार होती है ॥ २५ ॥

छब्बीयण सकीसे, गगा सिंधुण वित्थरो मूले । दसगुणिओ पज्जते, इय द्दुदु गुणणेण सेसाण ॥ २६ ॥

अर्थ—(गगा सिंधूण) गंगा और सिंधु इन दो नवियांका (मूले) मूलमें याने जहा पद्मव्रह्मसे निकली है वहां (सकीसे) कोशसहित (छ जोयण) छ योजन (वित्थरो) विस्तार है ॥ याव विस्तार यवते २ (दसगुणिओ) दशगुणावने सावा पासठ योजन (पज्जते) पर्यंत हो समुद्रमें मिलती है (इय) एसे (द्दुदु गुणणेण) दुगुणी २ (सेसाण) दोष पूर्वोक्त नवियोंका निर्गमन और प्रयेश अनुक्रमसे जानना ॥ २६ ॥

भावार्थ—अर्हसि गंगा और सिंधु यह दोनो नविये निकली है वहा इत्थल सया छ योजनका विस्तार है ॥ और

इन्दीका जहां समुद्रमें जाके मिली है वहां साढावासठयोजनका विस्तार है इसी तरह इनसे युगा २ क्रमवार शेष नदियांका निर्गमन और प्रवेश विस्तार जानना ॥ २६ ॥

जोयण सयमुच्चिटा, कणयमया सिहरि चुल्लहिमवता। रुप्य महाहिमवता, बुसुउच्छारुप्य कणयमया २७॥
 अर्थ - एक (सिहरि) शिलरी बुसरा (चुल्ल हिमवता) लपु हिमवत ये दो पर्वत (सय) एकसो (जोयण) योजन (मुच्चिटा) उंचे पनेमे, और (कणयमया) स्वर्णमयी है पुनः एक (रुप्य) रुपी बुसरा (महाहिमवता) महाहिमवत ये दो पर्वत (बुसुउच्छा) दोसो योजन उंचे पनेमें है, इसमे रुपी पर्वत (रुप्य) चावीमयी और महाहिमवत (कणयमया) स्वर्णमई है ॥ २७ ॥

भायार्थ—शिलरी और छोटाहिमवत यह दो पर्वत एकसो योजन उंचे और स्वर्णमयी है, रुपी और महाहिमवत यह दो पर्वत दोसो योजन उंचे और क्रमसे स्वर्ण और रुप्यमयी है ॥ २७ ॥

चत्तारि जोयणसप, उच्चिटो निसठ नीलवतोय। निसठो तवणिज्जमओ, वेरुलिओ नीलवतोय ॥ २८ ॥

अर्थ—(निसठ नीलवतो) निपघ और नीलवत यह दोनो पर्वत (चत्तारि जोयणसप) प्यारसे योजन (उच्चिटो) उंचे है, इसमे (य) जो (निसठो) निपघ पर्वत है जो (तवणिज्जमओ) तस स्वर्णमयी पाने लालवर्ण और बुसरा (नीलवतो) नीलवत पर्वत जो है जो (वेरुलिओ) वेरुय पाने नीलारत्नमई है ॥ २८ ॥

भाथार्थ—निपट और नीलपत यह दो पर्वत प्यारसें योजन वंचे और क्रमसे तपेदुए सोनेके और नीलेरत्नके है ॥ २८ ॥

सधेवि पदयरा, समयखित्तम्मि मदरविहुणा । धरणि तलेमुवगाढा, उस्सेह चउटय भायम्मि ॥ २९ ॥

अर्थ—इस (समय खित्तम्मि) समयक्षेत्र जाने जिस क्षेत्रमें समयकी निणना होती है उसमें (मदर विहुणा) पांच मेरु पर्वतोंको छोड़ शेष जितने शास्वते (पययरा) पर्वत है वो (सधेवि) सब अपने (उस्सेय) उच्च प्रमाणसे (चउटय भायम्मि) चोथा भाग (धरणितले) जमीनके मंदर (उवगाढा) अवगाढा जाने दटे हुए है ॥ और समयक्षेत्र जिसको अठार द्वीप समझना चाहिये उसमें जो पांच मेरु पर्वत है इन पांचोंके मन्दर संबुद्धीपका जो मध्य मेरु है वो निम्नाणुं हजार योजन उंचा और एकहजार योजन जमीनके मन्दर है पर्यं यह मेरु सब मिलकर एक लाख योजनका है ॥ अतः पय शेष प्यार मेरु एक २ हजार योजन जमीनमें और चउटसी २ (८४) हजार योजन उंच पनेमें है ॥ २९ ॥

भाथार्थ—इस समय क्षेत्रयाने अठार द्वीपमें पांच मेरु पर्वतोंको छोड़ शेष जितने शास्वते शैल है उनकी उच्चाइ भागके बीधे द्विस्सेका भाग भूगर्भमें है, और पांच मेरु पर्वतोंके मध्य जो संबुद्धीपका मध्य मेरु है वो निम्नाणुहजार योजन उंचा और एकहजारयोजन मूतले, एवं लाखयोजनका जानना ॥ शेष प्यारों मेरु एक २ हजार योजन भूगर्भमें और चउटसी २ हजार योजन उंचपनेमें है ॥ २९ ॥

खटाईगाहाहिं, दसहिं दारोहिं जंबुवीवस्त । सधयणी समचा, रइया हरिभइसूरीहिं ॥ ३० ॥

अर्थ—इस तरह (संभाई गाहाहिं) संभाविकोकी गाया ये (दसहिं दारोहिं) दशद्वारकरके (हरिभइसूरीहिं) श्रीहरिमद्रसुरिजी महाराजने (रइया) रचि है एसी (जंबुवीवस्त) जंबुवीप आश्रीकी (संघयणी समचा) लघुसंघ यणी नामका प्रकरण समाप्त हुआ ॥ ३० ॥

भावार्थ—एसे श्रीहरिमद्रसुरि महाराजने यह लघुसंघयणी नामका प्रकरण जिसमें जंबुवीपके घासवते संभाविकोका विवरण दशद्वार करके रचा समाप्त किया ॥ ३० ॥ इत्यलम् ॥

॥ इति लघुसंघयणी प्रकरणम् ॥



ॐ श्रीसर्वज्ञाय नमः ।

अथ ।

श्रीपडितदेवचद्रजीकृत-आगमसार ।

भव्यश्रीपते प्रतियोष्या निमित्ते मोक्षमार्गनी यथनिका कहे छे तिहा प्रथम श्रीयमनादिकालनो मिथ्यात्वीहृतो ते कालउरिध पामीने त्रणकरण करे छे तेनानाम-पहेछ यथाप्रवृत्तिकरण, वीजुं अपूर्वकरण, अने व्रीजुं अनियुत्तिकरण तेमा पहेलुं यथाप्रवृत्तिकरण कहे छे १ ज्ञानावरणी, २ दर्शनावरणी, ३ धेवनी, ४ अतराय, पवारकर्मनी व्रीस कोटाकोठीसागरोपमनी स्थिति छे, तेमापी उगणत्रीस कोटाकोठी सपाये अने एककोटाकोठी याकी राखे, तथा १ नामकर्म, २ गोत्रकर्म, ५ धेवकर्मनी वीसकोटाकोठी सागरोपमनी स्थिति छे, तेमापी उगणीस सपाये अने एककोटा कोठी राखे, अने मोहनीयकर्मनी सिचेर कोटाकोठी सागरोपमनी स्थिति छे, तेमापी अगणोत्तेर सपाये, याकी एकको टाकोठी राखे । एधीरीते एक आयुकर्म धर्जनि याकी सातेकर्मनी एकपस्योपमना असंख्यातमा भागे न्यून एकको टाकोठी सागरोपमनी स्थिति राखे, एहुं जे वैराग्यरूप सदासी परिणाम ते यथाप्रवृत्तिकरण कहिये ५ पहेछे करण सर्वसंज्ञी पंचद्वीजीय अनन्वीयार करे छे

હવે ધીરું અપૂર્વકરણ કહે છે તે એક કોલાકોઢી સાગરોપમની સ્થિતિમાહેથી એકમુદ્ધર્ષ અને અનાધિ મિથ્યાત્વ એ અનંતાનુવંધીઆની વોકઢી તે સ્વપાયવાને અજ્ઞાન હૈય તે છાંચરું અને જ્ઞાન સ્પાર્દેય પટલે આદરું, એ ઘાંછાકમ્પ અપૂર્વ કહેવાં પહેલાં ક્યારે નાખ્યો પ્યો એ પરિણામ તે અપૂર્વ કરણ કહિયે, એ ધીરુંકરણ તે સમક્તિવયોગ્ય ળીધને ધાય

હવે ત્રીરું અમિષ્ટિકરણ કહે છે તે મુદ્ધર્ષ રૂપસ્થિતિ સ્વપાધીને નિર્મલ શુદ્ધ સમક્તિ પામે મિથ્યાત્વનો સદય મટે ત્યારે જીવ સ્પદામ સમક્તિ પામે, એવો જે પરિણામ તે અમિષ્ટિ કરણ કહિયે એ કરણ ક્રીધાથી ગંઢીમેદયયો કહિને સ્વક્રમ આયદયક નિર્યુક્તો ‘જાગઢીતાપદમ । ગઢીસમયછેઓ મધેધીઓ ॥ અમિષ્ટિકરણં પુણ । સમસ્તપુરસ્વસ્થેઢીયે ॥ ૧ ॥ ઉત્તર દેસં દહુહિઅં ચ । વિજ્ઞાણવવોપપ્ય ॥ મિષ્ટસત્સઅણુદપ । સમસમસમ્મં લક્ષ્ણ જીયો ॥ ૨ ॥ એમ મિથ્યાત્વનો સદયમત્યાધી જીવ સમક્તિ પામે, તે સમક્તિની સદ્દહાના બે મેદ છે, એક વ્યવહાર સમક્તિસસદ્દહાના, ઢીજી નિશ્ચય સમક્તિ સદ્દહાના

દેવધીઅરિહત દેયાધિવેય અને ગુરુ સુસાપુ એ સૂધો અર્થ કહે તે તથા ધર્મ કેવલીનો પરુષ્યો જે આગમમાં સાતનય તથા એક પ્રત્યક્ષ યીશુ પરોક્ષ એ બે પ્રમાણ અને ચાર નિષ્કેપેકરી સદ્દે, એવી સદ્દહાના તે વ્યવહાર સમક્તિ કહિયે એ પુણ્યનું કારણ તથા ધર્મ પ્રગટ કરવાનું કમરણ છે એવી રુષી જ્ઞાનવિનાયણ પળાધીયોને સ્વભે

ધીરું નિશ્ચયસમક્તિ તે આધીરીતે એ નિશ્ચયદેય તે આપણોત્ત આજ્ઞા ત્તીય મિવ્વસ્ત્વરૂપી સિદ્ધ તે સંપ્રહાનયનીસ-

ત્રાગપેપતાં તથા નિષ્ક્રયગુરુ તે પણ આપણો આરમાત્ર તસ્થરમણી અને નિષ્ક્રયધર્મ તે આપણા જીવનો સ્વભાવજ છે.

 સદ્ગુણ તે મોક્ષનું કારણ છે કેમકે જીવ સ્વસ્મ ઓછાવા વિના કર્મસ્થપે નહીં. એવી શુદ્ધ સદ્ગુણ તે નિષ્ક્રયસમર્પિત

 હવે જ્ઞાનનું સ્વરૂપ કહે છે તે જ્ઞાનના વે મેવ છે. એક વ્યયહારજ્ઞાન, ધીરું નિષ્ક્રયજ્ઞાન, તેમાં જે અન્યમતિનાં સર્વ-

 ક્ષાત્ર આણવાં અથવા જ્ઞાનાગમમાપે ક્ષ્યા જે એકગણિતાનુયોગ તે શ્રેષ્ઠમાન, ધીજો ધરણકરણાનુયોગ તે ક્રિયાવિધિ,

 ત્રીજો ધર્મકયાનુ યોગ ૫ ધ્રુણ અનુયોગનું આણવાપણુ તે સર્વવ્યવહારજ્ઞાન છે. અથવા અસ્તરત્વયોગવિના જે સૂચના

 અર્પકરવા તે પણ વ્યયહારજ્ઞાન કહિયે.

હવે નિષ્ક્રયજ્ઞાન તે છે દ્રવ્ય તથા તેનાગુણ અને પર્યાય સર્વને જાણે તેમાં પાંચ અજીવદ્રવ્ય છે તે હેય-કેવા છાંડવા

 યોગ્ય આળી છાંડવા અને એક જીવદ્રવ્ય તે નિષ્ક્રયકરી સિદ્ધસમાન મોક્ષમયી મોક્ષનોજાણનાર મોક્ષનુ કારણ મોક્ષનો

 જ્ઞાપાલો મોક્ષમાર્ગરહે છે. પરવો આપણો જીવ અનંતગુણી અરૂપી છે તેનેજ શ્યાધે તે નિષ્ક્રયજ્ઞાનકહિયે.

હવે એકધર્માસ્તિકાય, ધીજો અધર્માસ્તિકાય, ત્રીજો આકાશાસ્તિકાય, ધોયો પુદ્ગલાસ્તિકાય, પાચમો જીયાસ્તિકાય,

 અને છઠ્ઠો ફાલ ૫ છે દ્રવ્ય શાશ્વતા છે તેનુ જ્ઞાન કરે છે ૫ છેદ્રવ્યમધ્યે પાંચ અજીવ દ્રવ્ય છે અને એક જીવદ્રવ્ય

 તે વેત્તતાલકષણર્પત છે તપાયેય છે.

હવે ૫ છેદ્રવ્યના ગુણ કહે છે પરેહો ધર્માસ્તિકાય તેના ચાર ગુણ એક અરૂપી ધીજો અષેતન ત્રીજો અક્રિય ધોયો

 ગતિસહાયગુણ, અને ધીજો અધર્માસ્તિકાય તેના ૫જ ધારગુણ છે એક અરૂપી ધીજો અષેતન ત્રીજો અક્રિય ધોયો સ્થિતિ

પલી સ્થિર સહાયગુણ એક અઘર્મોસ્તિક્કાયમાં છે. ધીજા પાંચ દ્રવ્યમા નથી તથા અવગાહનાગુણ તે એક આકાશદ્ર-
 વ્યમાં છે, ધીજા પાંચ દ્રવ્યમા નથી; અને વર્તનાગુણ તે એક કાલદ્રવ્યમાજ છે, ધીજા પાંચ દ્રવ્યમા નથી, તેમજ મિલ
 ણયિહરણગુણ તે પુદ્ગલમાં છે, ધીજા દ્રવ્યમાં નથી તથા જ્ઞાનચેતનાગુણ તે એક જીવદ્રવ્યમા છે, પણ ધીજા દ્રવ્યમાં
 નથી. એ મૂલગુણ કોઈ દ્રવ્યના કોઈ દ્રવ્યમાં મિલે નથી. એક ધર્મ ધીજો અઘર્મ ત્રીજો આકાશ એ ત્રણ દ્રવ્યના ત્રણ
 ગુણ તથા ચાર પર્યાય સરિશ્તા છે અને ત્રણગુણે ફરી તો કાલદ્રવ્ય પણ એ સમાન છે.

હવે યહી અચાર ઘોલેકરી છે દ્રવ્યના ગુણજ્ઞાણવાને ગાયા કહે છે.

પરિણામિજીવમુક્તા, સપપ્સા પ્ગત્વિત્તકિરિઆ ચ । નિચ્ય કારણકતા, સધ્વગયફ્ફરઅપ્પવેસે ॥ ૧ ॥

અર્થ—નિશ્ચયનયથી આપ આપણા સ્વમાવે છેપ દ્રવ્ય પરિણામી છે અને બ્યવહારનયથી જીવ તથા પુદ્ગલ એ વે દ્રવ્ય
 પરિણામી છે તથા એક ધર્મ, ધીજો અઘર્મ, ત્રીજો આકાશ, અને ઘોયો કાલ, એ ચાર દ્રવ્ય અપરિણામી છે તથા છે
 દ્રવ્યમાં એક જીવ દ્રવ્ય તે જીવ છે, ધીજા પાંચ દ્રવ્ય અજીવ છે તથા છે દ્રવ્યમા એક પુદ્ગલ મૂર્તિયન્ત રૂપી છે અને
 પાંચ દ્રવ્ય અમૂર્તિયંત અરૂપી છે. એ દ્રવ્યમાં પાંચ દ્રવ્ય સમવેશી છે, અને એક કાલદ્રવ્ય અમવેશી છે તેમાં એક ધર્મો
 સ્તિકાય ધીજો અપર્મોસ્તિકાય એ વે દ્રવ્ય અસંસ્થાતમવેશી છે અને એક આકાશદ્રવ્ય અનતમવેશી છે જીવદ્રવ્ય
 અસંસ્થાત મવેશી છે, પુદ્ગલપરમાણુ અનંત મવેશી છે; પરમાણુમા અનંતા છે, એમ પાંચ દ્રવ્ય સમવેશી છે અને છઠ્ઠો
 કાલ અમવેશી છે.

છે દ્રવ્યમાં एक घर्मास्तिकाय, बीजो अचर्मास्तिकाय, प्रीजो आकाशास्तिकाय ए प्रण ते एकैक द्रव्य છે, तथा एक जीवद्रव्य बीजो पुत्रलद्रव्य प्रीजो कालद्रव्य ए प्रण द्रव्य अनेक अनेक છે, छ द्रव्यमा एक आकाशद्रव्य क्षेत्र છે, અને बीजा पांच द्रव्य क्षेत्रી છે, निश्चयनयથી છે દ્રવ્ય પોતપોતાના કાર્યે સદા પ્રવર્તે છે માટે સક્રિય છે। અને વ્યવહારનયથી જીવ તથા પુત્રલ ए वे દ્રવ્ય સક્રિય છે, તેમાં પण पुत्रल सदा सक्रिय છે, અને જીવદ્રવ્ય સો સંસારી થકો સક્રિય છે; પण सिद्धअवस्थायें थको संसारी क्रियाकरवाने अक्रिय છે, तथा घाकीना चार द्रव्य सो अक्रिय છે; निश्चयनयથી છે દ્રવ્ય મિત્ય છે યુવ છે; અને तस्याव्ययैकरी अनित्यपणे पण છે સયા વ્યવહારનયે જીવ અને पुत्रल ए वे द्रव्य अनित्य છે, घाकीना चार द्रव्य नित्य છે, यद्यपि तस्याव्यय प्रुषपणे सर्व पदार्थ परिणने છે तोपण एक घर्म, बीजो अवर्ग, प्रीजो आकाश, घोषो काल, ए चार द्रव्य सदा अवस्थित છે ते માટે નિત્ય કર્મા

છે દ્રવ્યમા एक जीवद्रव्य अकारण છે અને पांच द्रव्य कारण છે કેમકે पांचे द्रव्य बीजने भोगमां भावे છે માટે कारण कहिये કેमके घर्मास्तिकाय घालवानो साह्य आपे છે अचर्मास्तिकाय चिर रोववानो साह्य आपे છે आकाशास्ति काय अवकाश आपे છે पुत्रलस्तिकाय जीवने मपुरावि सुरमिगंधादिक तथा सक्रोमल स्थार्थादिक भोगपणे भाय છે तथा कालद्रव्य ते बीवने जरा बाल तारुण्य अवस्थापिए છે तथा अनादि संसारी जीव भवस्थिति परिपाक छटा एक अतर मुद्रर्वकालमां सकलकर्म निर्जरी मोक्ष पहुँचने तिहां सिद्ध अवस्थायें अनंतोकाळ पर्यंत जीव अनता सुखने विलसे માટે કાલ દ્રવ્યપણ જીવને મોગ થાય છે પण एक जीव द्रव्य कोइने भोग आबतो नषी माटे अकारण कर्ण અને

પાંચ દ્રવ્ય મોગ આયે માટે કારણ કહ્યા તથા “ઘળી પ્રતોસાં તો સર્વેપે પટઈ છે એ છ દ્રવ્યમા એક જીવ દ્રવ્ય કારણ છે પાંચ દ્રવ્ય અકારણ છે એ પળ વાત ઘળીરીતે મલતી છે માટે એ વહુશુભ કહેું છે સ્વઠ મારીધારણા પ્રમાણે જીવ દ્રવ્ય કારણ અને પાંચ દ્રવ્ય અકારણ એમ સંમતે છે.” નિબંધનયથી છપ દ્રવ્ય કર્તા છે અને વ્યવહારનયે એક જીવદ્રવ્ય કર્તા છે ઘાફી પાંચ દ્રવ્ય અકર્તા છે છ દ્રવ્યમાં એક આકાશદ્રવ્ય સર્વે વ્યાપી છે અને પાંચ દ્રવ્ય એક વ્યાપી છે છપ દ્રવ્ય એક સેત્રમાં એકઠાં રહ્યા છે પણ એક ધીજા સાથે મલી જાય નહીં એ છ દ્રવ્યનો વિષાર કમ્બો

હવે એફેલા દ્રવ્યમા એક નિત્ય, ધીજો અનિત્ય ધીજો એક ઘોથે અનેક, પાંચમો સત્, છઠ્ઠો અસત્, સાતમો વકલ્વ્ય, આઠમો અયકલ્વ્ય, એ આઠ આઠ પદ્ધ કહે છે

ધર્માસ્તિકાયના ચાર ગુણ નિત્ય છે તથા પર્યાયમાં ધર્માસ્તિકાયનો એક સંઘ નિત્ય છે ઘાફીના વેશ પ્રવેશ તથા અગુ રુઠપુ પર્યાય અનિત્ય છે અધર્માસ્તિકાયના ચાર ગુણ તથા એક એક પ્રમાણ સંઘ નિત્ય છે અને એક વેશ ધીજો પ્રવેશ ધીજા અગુરુઠપુ એ ત્રણ પર્યાય અનિત્ય છે તથા આકાશાસ્તિકાયના ચાર ગુણ તથા લોકાલોકપ્રમાણસઘ નિત્ય છે અને એક વેશ ધીજો પ્રવેશ ધીજો અગુરુઠપુ એ ત્રણ પર્યાય અનિત્ય છે તથા આકાશાસ્તિકાયના ચાર ગુણ તથા લોકાલોકપ્રમાણસઘ નિત્ય છે પર્યાય અનિત્ય છે પુમ્મલ દ્રવ્યના ચાર ગુણ નિત્ય છે અને ચાર પર્યાય અનિત્ય છે તથા કાલદ્રવ્યના ચાર ગુણ નિત્ય છે અને ચાર પર્યાય નિત્ય છે અને એક અગુરુઠપુ પર્યાય અનિત્ય છે એ રીતે નિત્યાનિત્ય પદ્ધ કમ્બો

હવે એક અનેક પદ્ધ કહે છે એક ધર્માસ્તિકાય ધીજો અધર્માસ્તિકાય એ બે દ્રવ્યનો સંઘલોકાકાશ પ્રમાણ એક છે

અને ગુણ અનંતા છે પર્યાય અનંતા છે પ્રવેશ અસંખ્યાતા છે તેજેકરી અનેક છે, આકાશાદ્રવ્યનો લોકાલોક પ્રમાણ સ્વષ્ટ એક છે અને ગુણ અનંતા છે પર્યાય અનંતા છે પ્રવેશ અનંતા છે માટે અનેક છે, કાલ દ્રવ્યનો ઘર્તનારૂપ ગુણ એક છે અને ગુણ અનંતા છે પર્યાય અનંતા છે સમય અનંતા છે કેમકે અતીત કાલે અનંતા સમય ગયા અને અનાગતકાલે અનંતા સમય આવશે તથા ઘર્તમાનકાલે સમય એક છે માટે અનેક પણ છે પુનઃલ દ્રવ્યના પરમાણુ અનંતા છે તે એકેક પરમાણુમાં અનંતાગુણ પર્યાય છે તે અનેક પણ છે અને સર્વ પરમાણુમાં પુનઃલ પણ તે પછાજ છે માટે એક છે

જીવદ્રવ્ય અનંતા છે એકેકા જીવમાં પ્રવેશ અસંખ્યાતા છે તથા ગુણ અનંતા છે પર્યાય અનંતા છે તે અનેકપણું છે પણ અધિતદ્રવ્યપણું સર્વ જીવોનું એકસરીનું છે માટે એક પણ છે શરીર શિવ્ય પૂછે છે જે સર્વ જીવ એક સરીસા છે તો મોક્ષતા જીવ સિદ્ધ પરમાનંદમયી વેલાય છે અને ધંસારી જીવ કર્મ ધરા પથ્યા તુલ્સી વેલાય છે અને તે સર્વ જુવાજુવા વેલાય છે તે કેમ? તેહને ગુરુ ઉત્તર કહે છે કે નિશ્ચયનયે તો સર્વ જીવ સિદ્ધ સમાન છે માટેજ સર્વ જીવ કર્મ સ્વપા-
વીને સિદ્ધ થાય છે તેથી સર્વ જીવની સત્તા એક છે

ફરિ શિવ્ય પુછે છે કે જો સર્વ જીવ સિદ્ધ સમાન કહો છો તો અમમ્ય જીવ પણ સિદ્ધ સમાન છે એમ ઠેકું અને તે તો મોક્ષ સત્તા નથી તેહને ઉત્તર જે અમમ્યને કર્મ ચીકળા છે અને અમમ્યમા પરાધર્મ ધર્મ નથી તેથી સિદ્ધ થતા નથી માટે તેનો પર્યોચ સ્વમાય છે જે મોક્ષે અર્જુન નથી અને મમ્ય જીવમાં પરાધર્મ ધર્મ છે માટે કારણ સામગ્રી મિલે પહલ્લણ પામે ગુણમેળી થવી મોક્ષે કરી સિદ્ધ થાય પણ જીવના મમ્ય આઠ ઠચજ પ્રવેજા જે છે તે નિશ્ચય નયથી મમ્ય

તથા અમલ્ય તથા સયના સિદ્ધ સમાન છે માટે સર્વ જીવની સત્તા એક સરીક્ષી છે કેમકે એ આઠ પ્રદેશને વિલકુલ કર્મ લાગતા નથી તે “શ્રી આચારાંગ સૂત્રની શ્રી સિંહાંગાર્ય-કૃત ટીકાના લોકવિજયાધ્યયને પ્રથમોષ્ઠાકે સાલ્ય છે વિદ્યાથી સચિદ્ધર પને ઓશુ”

હયે સત્ તથા અસત્ પક્ષ કહે છે એ છદ્રવ્ય તે સ્વદ્રવ્ય સ્વદેત્ર સ્વકાલ અને સ્વમાયપણે સત્ પટલે છતા છે અને પર દ્રવ્ય પરદેત્ર પરકાલ તથા પરમાયપણે અસત્ પટલે અહતા છે તેની રીત ઘટાયવાને અર્થે છપ્ દ્રવ્યનો દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાલ માય કદિયે ઈચિ

ધર્માસ્તિકાયનો મૂલગુણ વલણ સહાયપણો તે સ્વદ્રવ્ય, અધર્માસ્તિકાયનો મૂલગુણ સ્થિતિ સહાયપણો તે સ્વદ્રવ્ય, આકાશાસ્તિકાયનો મૂલગુણ અયગાહપણો તે સ્વદ્રવ્ય, કાલદ્રવ્યનો મૂલ ગુણ ઘર્તનાલક્ષણપણો તે સ્વદ્રવ્ય, તથા પુત્રલનો મૂલગુણ પુરણ ગહનપણો તે સ્વદ્રવ્ય, અને જીવદ્રવ્યનો મૂલગુણ જ્ઞાનાદિક વેતનાલક્ષણપણો તે સ્વદ્રવ્ય એ છદ્રવ્યનો સ્વદ્રવ્યપણો કમ્બો

હયે સ્વદેત્ર તે દ્રવ્યનો પ્રદેશપણો છે તે વેલાદે છે તિહાં એક ધર્માસ્તિકાય ધીઓ અધર્માસ્તિકાય એ ધે દ્રવ્યનો સ્વદેત્ર અસંસ્યાત પ્રદેશ છે અને આકાશદ્રવ્યનો સ્વદેત્ર અનંતપ્રદેશ છે કાલદ્રવ્યનો સ્વદેત્ર સમય છે પુત્રલદ્રવ્યનો સ્વદેત્ર એક પરમાણુ છે તે પરમાણુ અનવા છે જીવદ્રવ્યનો સ્વદેત્ર એક જીવના અસંસ્યાતા પ્રદેશ છે

હયે સ્વકાલ તે છપ્ દ્રવ્યમા અગુલ્લપુનોજ છે અને એ છ દ્રવ્યના પોતપોતાના ગુણ પર્યાય તે સર્વ દ્રવ્યનો સ્વમાય

જાણવો પટલે ધર્માસ્તિકાયમા પોતાનાજ દ્રવ્ય ક્ષેત્ર કાલ માય છે પણ બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી તથા અધર્માસ્તિકાય દ્રવ્યમભ્યે પણ સ્વદ્રવ્યાદિક ચાર છે પણ બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી એમજ આકાશાસ્તિકાયને વિષે આકાશનાજ સ્વદ્રવ્યાદિક ચાર છે પણ બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી કાલદ્રવ્યમા કાલના દ્રવ્યાદિક ચાર છે બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી અને પુદ્ગલના દ્રવ્યાદિક ચાર તે પુદ્ગલમાય છે પણ બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી તથા સ્ત્રીવ દ્રવ્યના સ્વદ્રવ્યાદિક ચાર તે સ્ત્રીયમાં છે પણ બીજા પાંચ દ્રવ્યના નથી

જે દ્રવ્ય તે ગુણ પર્યાયવંત દ્રવ્યથી અમેવપર્યાય હોય તે દ્રવ્ય કહિયે તથા સ્વધર્મનો આધારવંતપણો તે ક્ષેત્ર કહિયે અને વસ્તુવ વ્યયની ધર્મના તે કાલ કહિયે તથા વિશેષગુણ પરિણતિ સ્વમાય પરિણતિ પર્યાયપ્રમુક્ત તે સ્વમાય કહિયે

શ્રુતિ ૧ મેવસ્વમાય ૨ અમેવસ્વમાય ૩ મન્યસ્વમાય ૪ અમન્યસ્વમાય ૫ પરમસ્વમાય ૬ પાંચ સ્વમાય કહેયા તેમા દ્રવ્યના સર્વધર્મને પોતપોતાના સ્વસ્વકાર્યને કરવેકરી મેવ સ્વમાય છે અને અવસ્થાનપણે અમેવસ્વમાય છે અણપલટણ સ્વમાયે અમન્ય સ્વમાય છે તથા પલટણ સ્વમાયે મન્યસ્વમાય છે અને દ્રવ્યના સર્વધર્મ તે વિશેષ ધર્મને અનુયાયીજ પરિણમે તે માટે તે પરમસ્વમાય કહિયે ૬ સામાન્યસ્વમાય જાણવા ૬ રીતે છપ દ્રવ્ય સ્વગુણે સત છે અને પરગુણે અસત છે

હવે વકલ્ય તથા અવકલ્યપદ કહે છે ૬ ૭ દ્રવ્યમાં અનંતા ગુણ પર્યાય તે વકલ્ય પટલે જ્ઞાને કહેવા યોગ્ય છે અને અનંતા ગુણ પર્યાય તે અવકલ્ય પટલે જ્ઞાને કહ્યા જાય નહીં પણ તે સિદ્ધાં કેવલી અગર્ભતે જગત્ત માણસીજા

તેને અનંત મે ભાગે લે વષ્ણવ્ય પટલે કહેવા યોગ્ય હતા તે કહ્યા યહી તેનોપણ અનંતમો ભાગ શ્રીગણધર દેવે સૂત્રમાં ગુંથ્યો તે સૂત્રમાં ગુંથ્યા તેને અસંખ્યાતમે માગે હમણાં આગમ રહ્યા છે ૫ છ દ્રવ્યનાં આઠ વક્ષ કહ્યા

હવે નિત્ય તથા અનિત્ય વક્ષયી ધોમગી તપની તે કહે છે એક જેની આદિ નથી અંતે અત પણ નથી તે અનાદિ અનંત વહેલો ભાંગો અને જેની આદિ નથી પણ અત છે તે અનાદિસાંત ધીઓ ભાગો તથા જેની આદિ પણ છે અને અત પટલે છેહેરો પણ છે તે સાદિસાંત ધીઓ ભાંગો વહી જેહને આદિ છે પણ અત નથી તે સાદિઅનંત નામે ષોયો ભાગો જાણયો

હય ૫ ધાર ભાંગા છ દ્રવ્યમાં ફલાયી દેસાહે છે જીવદ્રવ્યમાં જ્ઞાનાવિક ગુણ તે અનાદિ અનંત છે નિત્ય છે અને મધ્ય જીવને કર્મ સાથે સંવન્ધ તથા સંસારી પણની આદિ નથી પણ સિદ્ધયાય તેવારે અત આખ્યો તેથી ૫ અનાદિસાંત ભાંગો છે અને દેવતા તથા નારકી પ્રમુહતા મયકરવા તે સાદિસાંત ભાંગો છે અને સે જીવ કર્મ સ્વપાયી મોહ ગયા તેની સિદ્ધપણે આદિ છે અને પાછો સસારમાં કોઈ કાલે આવયુ નથી માટે અંત નથી તેથી ૫ સાદિ અનંત ભાંગો છે ૫ જીવ દ્રવ્યમાં ધોમંગી કદી જીવદ્રવ્યના ધાર ગુણ અનાદિ અનંત છે જીવને કર્મસાર્યે સંયોગ તે અનાદિ સાંત છે કેમકે કેવારે પણ કર્મ છૂટેહે

હવે પરમાસ્તિકાયામાં ધાર ગુણ તથા સંધપણો તે અનાદિ અનંત છે અને અનાદિ સાંત ભાંગો નથી તથા ૧ વેશ ૨ પ્રવેશ ૩ અગુરુહુ ૫ સાદિ સાંત ભાંગો છે તથા સિદ્ધતા જીવમાં ધર્માસ્તિકાયાના જે પ્રવેશ રહ્યા છે તે પ્રવેશ આઠ

યીને સાદિ અનત માંગો છે પૃથીવ રીતે અપર્માલ્લિકાયમા પણ ધૌમંગી જાણવી અને આકાશદ્રવ્યમાં ગુણ તથા સ્વંય અનાદિ અનત છે ધૌમંગી માંગો નથી અને ૧ વેશ ૨ પ્રવેશ તથા ૩ અગુરુ છુપુ સાદિ સાંત છે તથા સિદ્ધના જીવની સાથે સપ્ત તે સાદિ અનંત છે

પુત્રલ દ્રવ્યમા ગુણ અનાદિ અનત છે જીવ પુત્રલનો સવન્ધ અમવ્યને અનાદિ અનત છે મમ્પજીવને અનાદિ સાત છે પુત્રલના ત્વ સ્વ સાદિ સાત છે જે સ્વંય ઘાંધ્યા તે સ્થિતિ પ્રમાણે રહી સ્વે છે યહી નવા ધધાય છે માટે સાદિ અનંત માંગો પુત્રલમાં નથી

કાલદ્રવ્યમા ગુણ ધાર અનાદિ અનત છે પયાયમાં અતીત કાલ અનાદિ સાત છે અને ઘર્તમાનકાલ સાદિ સાંત છે અનાગત કાલ સાદિ અનત છે ૫ કાલનુ સ્વરૂપ તે સર્વ રૂપચારથી છે ૫ રીતે કાલદ્રવ્યમા ધૌમંગી કહી

હયે દ્રવ્યધેય કાલ તથા માયમા ધૌમંગી કહે છે જીવદ્રવ્યમા સ્વદ્રવ્યથી જ્ઞાનાદિક ગુણ તે અનાદિ અનત છે સ્વંધેયે જીવના પ્રવેશ અસસ્યાતા છે તે સાદિ સાંત છે તથોદ્ધર્તનાપણે ફરે છે તે માટે અથવા અથગાહના માટે સાદિ સાત છે પણ છતીપણે ધો અનાદિ અનંત છે સ્વકાલ અગુરુલુને ગુણે અનાદિ અનત છે અને અગુરુલુ ગુણનો રૂપજ્યો તથા યિગદાયો તે સાદિ સાન્ત છે તથા સ્વમાય ગુણપર્યાય તે અનાદિ અનત છે અને મેદાન્તરે અગુરુલુ તે સાદિ સાત છે

પર્માલ્લિકાયમાં સ્વદ્રવ્ય જે ષલણ સહાય ગુણ તે અનાદિ અનંત છે અને સ્વસ્વેશ્ર અસંસ્યાત પ્રવેશ લોકપ્રમાણ છે તે અથગાહના પણે સાદિ સાત છે સ્વકાલ તે અગુરુલુ ગુણે કરી અનાદિ અનંત છે અને સ્વત્વાદ વ્યય તે સાદિ સાત છે

સ્વભાવ તે ચાર ગુણ અગુરુલ્લુપુ અનાદિ અનન્ત છે ૧ સ્થ ૨ દેશ ૩ પ્રવેશ તે અથગાહનાને પ્રમાણે સાદિ સાંત છે એમ અધર્માસ્તિકાચના પળ દ્રવ્યાદિ ચાર ભાંગા જાણયા તયા આકાશાસ્તિકાચમા સ્વદ્રવ્ય અવગાહના દાન ગુણ તે અનાદિ અનન્ત છે અને સ્વસ્થેષ્ઠ ઓકાલોક પ્રમાણ અનન્ત પ્રવેશ તે અનાદિ અનન્ત છે સ્વકાલ તે અગુરુલ્લુપુ ગુણ સર્વયા પળે અનાદિ અનન્ત છે અને રપજવે તયા યિણસવે સાદિ સાંત છે સ્વભાવ તે ચાર ગુણ તયા સ્થ અને અગુરુલ્લુપુ તે અનાદિ અનન્ત છે તયા દેશ પ્રવેશ તે સાદિસાત છે તે આકાશ દ્રવ્યના વે મેદ છે એક વૌદરાજલોકનો સંઘ ઓકાકાશ તે સાદિસાંત છે વીજો ઓકાકાશનો સંઘ તે સાદિ અનન્ત છે

કાલ દ્રવ્યમા સ્વદ્રવ્ય જે નય પુરાણયર્ષના ગુણ તે અનાદિ અનન્ત છે સ્વસ્થેષ્ઠ સમય કાલ તે સાદિસાંત છે કેમકે યર્ષમાન સમય એક છે તે માટે તયા સ્વકાલ તે અનાદિ અનન્ત છે સ્વભાવ તે ગુણ ચાર અને અગુરુલ્લુપુ અનાદિ અનન્ત છે અતીત કાલ અનાદિ સાત છે અને વર્ષમાન કાલ સાદિ સાત છે અનાગત કાલ સાદિ અનન્ત છે

પુત્રલ દ્રવ્યમા સ્વદ્રવ્ય તે દ્રવ્યપણે જે પૂર્ણગલન ધર્મ તે અનાદિ અનન્ત છે અને સ્વસ્થેષ્ઠ પરમાણુ તે સાદિસાંત છે સ્વકાલસ્થિતિ અગુરુલ્લુપુ ગુણ તે અનાદિ અનન્ત છે અગુરુલ્લુપુનો રપજવો યિણશવો તે સાદિ સાંત છે સ્વભાવ તે ગુણ ચાર અનાદિ અનન્ત છે ઘર્ણાદિપર્યાય ચાર પટલે ઘર્ણ ગંધ રસ સ્પર્શ તે સાદિ સાત છે એ દ્રવ્યાદિ ચારમા વૌભંગી કષી

હયે છ દ્રવ્યના સંઘન્ય આશ્રી વૌભંગી કહે છે, તિહાં પ્રથમ આકાશદ્રવ્ય છે તેમાં ઓકાકાશમા કોઈ દ્રવ્ય નથી, અને ઓકાકાશમાં છ દ્રવ્ય છે, તિહાં ઓકાકાશ દ્રવ્ય તયા ધીસું ઘર્માસ્તિકાચદ્રવ્ય અને વીજુ અધર્માસ્તિકાચદ્રવ્ય

તે અનાદિ અનત સંઘષી છે જે લોકાકાશના એકેક પ્રવેશમાં ધર્મદ્રવ્ય તથા અધર્મદ્રવ્યનો એકેક પ્રવેશ રાખો છે તેપણ ક્યારે વિહલસે નહીં માટે અનાદિ અનંત સઘષી છે આકાશ સેષલોકર્સર્વ અને જીવદ્રવ્યનો અનાદિ અનંત સંઘષ છે, અને સંસારી જીવ કર્મ સહિત તથા લોકના પ્રવેશનો સાદિ સાંત સંઘન્ધ છે લોકાંત સિદ્ધસેત્રના સિદ્ધજીવોનો આકાશ પ્રવેશ સાયે સાદિ અનંત સઘન્ધ છે, લોકાકાશ અને પુત્રલ દ્રવ્યનો અનાદિ અનંત સંઘન્ધ છે આકાશ પ્રવે-
 શની સાયે પુત્રલ પરમાણુનો સાદિ સાંત સંઘન્ધ છે એમ આકાશ દ્રવ્યની પરે ધર્માસ્તિકાય તથા અધર્માસ્તિકાયનો પણ સર્વ સંઘષ આણયો જીવ અને પુત્રલના સંઘષમા અમલ્ય જીવને પુત્રલનો અનાદિ અનંત સંઘષ છે કેમકે અમલ્ય જીવના કન ક્યારે ભપશે નહીં માટે અને મલ્ય જીવને કર્મનુ ભાગવું અનાદિ કાલનું છે પણ તે ક્યારેક છુટશે માટે મલ્ય જીવને પુત્રલ સંઘષ અનાદિ સાંત છે તથા નિર્ભે નયકરી છ દ્રવ્ય સ્વભાવ પરિણામ પરિણમ્યા છે તે પરિણામી પળો સદા શાશ્વતો છે તે માટે અનાદિ અનંત છે અને જીવ તથા પુત્રલ વેદુ દ્રવ્ય મલિ સઘષ માય પામે છે તે પર પરિણામી પળો છે તે પરપરિણામિપળો અમલ્ય જીવને અનાદિ અનંત છે અને ધમ્ય જીવને અનાદિ સાંત છે અને પુત્રલનો પરિ-
 ણામી પળો તે સત્તાયે અનાદિ અનંત છે અને પુત્રલનો મિલ્યો વિહલ્યો તે સાદિ સાંત છે પટલે જીવ દ્રવ્ય પુત્રલ સાયે મિલ્યો સક્રિય છે અને પુત્રલ કર્મષી રહિત ઘાય તેવારે જીવ દ્રવ્ય અક્રિય છે અને પુત્રલ દ્રવ્ય સદા સક્રિય છે

હવે એક, અનેક-પદ્ધતી નિષ્ઠે જ્ઞાન કહેવાને નય કહે છે, સર્વ દ્રવ્યમાં અનેકસ્વભાવ છે, તે એક ઘષનથી કયા આવ નહીં માટે માંહો માંહે નય કરી સંક્ષેપ પળે કહે છે, તિહા મૂલ નયના બે મેવ છે એક દ્રવ્યાર્થિક થીજો પર્યાયા

થિક તેમાં અત્પાદ વ્યય પર્યાય ગોણ પળે અને પ્રધાન પળે દ્રવ્યનો ગુણ સચાને પ્રહે તે દ્રવ્યાથિકનય કહિયે તેના દશ
 મેદ છે ૧ સર્વ દ્રવ્યનિત્ય છે તે નિત્યદ્રવ્યાથિક ૨ અગુઠ લઘુ અને લેખની અપેક્ષા ન કરે મૂલ ગુણને વિષયને પ્રહે તે
 ઇકદ્રવ્યાથિક ૩ જ્ઞાનાથિક ગુણે સર્વ જીવ ઇકસરીસ્થા છે માટે સર્વને ઇક જીવ કહે સ્વદ્રવ્યાથિકમે પ્રહે તે સત્ દ્રવ્યા
 થિક જેમ સત્ લક્ષણ દ્રવ્ય ૪ દ્રવ્યમાં કહેવા યોગ્ય ગુણ અંગીકાર કરે તે વધવ્ય દ્રવ્યાથિક ૫ આત્માને અજ્ઞાની
 કહેયું તે અશુદ્ધ દ્રવ્યાથિક ૬ સર્વ દ્રવ્ય ગુણપર્યાય સહિત છે ઇમ કહયું તે અન્યય દ્રવ્યાથિક ૭ સર્વ જીવદ્રવ્યની મૂલ
 સચા ઇક છે તે પરમ દ્રવ્યાથિકનય ૮ સય જીવના આદ્ય પ્રદેશ નિર્મલ છે તે શુદ્ધ દ્રવ્યાથિકનય ૯ સર્વ જીવના અસં
 સ્યાત પ્રદેશ ઇકસરીસ્થા છે તે સચા દ્રવ્યાથિકનય ૧૦ ગુણગુણી દ્રવ્ય તે ઇક છે તે પરમમાવપ્રાહક દ્રવ્યાથિક
 જેમ આત્મા જ્ઞાનરૂપ છે ઇત્યાથિક ૧૧ દ્રવ્યાથિક નયના દશ મેદ કથ્યા

હયે પર્યાથિક નયના છ મેદ કહે છે જે પર્યાયને પ્રહે તે પર્યાથિક નય કહિયે, તેના છ મેદ છે ૧ દ્રવ્યપર્યાય
 તે જીવને મધ્યપણુ તથા સિદ્ધપણું કહેયુ ૨ દ્રવ્યન્યજનપર્યાય તે દ્રવ્યનું પ્રદેશમાન ૩ ગુણપર્યાય જે ઇક ગુણથી
 અનેકતા થાય જેમ ધર્માધર્માથિક દ્રવ્ય પોતાના ઘટણ સહકારાથિક ગુણથી અનેક જીવ તથા પુદ્ગલને સહાય કરે ૪ ગુણ
 સ્વજન પર્યાય જે ઇક ગુણના ઘણા મેદ છે ૫ સ્વભાવ પર્યાય તે અગુઠ લઘુ પર્યાયથી આણણુ ૬ પાંચ પર્યાય સર્વ દ્રવ્યમાં
 છે અને છટ્ટો વિભાય પર્યાય તે જીવ પુદ્ગલ ૬ વે દ્રવ્ય માં છે તિહાં જીવ જે ધાર ગતિના નવા નવા મધ્ય કરે તે જીવમાં
 વિભાય પર્યાય તથા પુદ્ગલમાં સંપ પણું તે વિભાય પર્યાય આણણુ

હવે પર્યાયના બીજા છ મેદ કહે છે ૧ અનાદિ નિત્યપર્યાય તે એમ પુત્રલ દ્રવ્યનો મેદ પ્રમુલ ૨ સાદિ નિત્ય પર્યાય તે જીવ્ય દ્રવ્યનું સિદ્ધપણુ ૩ અનિત્યપર્યાય તે સમય સમયમા દ્રવ્ય સપજે વિષયો છે ૪ અશુદ્ધ અનિત્યપર્યાય તે જન્મ મરણ ધાય છે તેને કરી કહેતું ૫ તપાષિપર્યાય તે કર્મ સંબંધ ૬ શુદ્ધપર્યાય જે મૂલપર્યાય સર્વ દ્રવ્યના એક સરીલા છે ૭ પર્યાયાર્થિકતું સ્વરૂપ કહ્યું

હવે સાત નય કહે છે ૧ નૈગમ, ૨ સંગૃહ, ૩ વ્યથહાર, ૪ રુદુસૂત્ર ૫ શબ્દ ૬ સમમિરુદ્ધ ૭ પ્લમૂત-૯ સાત નયના નામ આણયાં, તેમાં પહેલો નૈગમ નય કહે છે નષી એક ગમો તે નૈગમ કહિયે ગુણનો એક અંશ સપનો હોય તો નૈગમ નય કહિયે દિદાન્ત--એમ કોઈક મનુષ્યને પાયલી લાઘવાનો મન થયો તેવારે તેવારે જગલમાં લાકડુ હેવા શાસ્યો રલામાં કોઈક મનુષ્ય મન્યો તેજે પૂજ્યું તું કયાં આય છે તેવારે તેજે કહ્યું જે પાયલી હેવા આહ છું તે પાયલી તો હબી ઘબી નષી પળ મનમા ચિંતથી તે ઘટ્ટ પમ ગળ્યું તેમ નૈગમ નય સર્વ ળીઘને સિદ્ધ સમાન કહે કેમકે સર્વ ળીવના આઠ રુચક પ્રવેશ નિર્મલ સિદ્ધ રૂપ છે તેથી એક અર્થે સિદ્ધ છે તે માટે સિદ્ધ સમાન સર્વ ળીઘ કહ્યા તે નૈગમ નયના ત્રણ મેદ છે ૧ અતીત નૈગમ ૨ અનાગત નૈગમ ૩ વર્તમાન નૈગમ ૪ નૈગમ નય કહ્યો

હવે સમ્પ્રહ નય કહે છે સપ્રાપ્તહે તે સમ્પ્રહ જે એક નામ ળીઘાંથી સર્વ ગુણ પર્યાય પરિવાર સહિત આવે તે સમ્પ્રહનય આણયો તેનો દિદાન્ત--એમ કોઈક મનુષ્યે પ્રમાતેં વાતળ કરવાને અર્થે પોતાના ઘરના ઘારણે વેશીને ઘાકર પુરુપને કહ્યુ જે વાતળ હદ આવો તેવારે તે ઘાકર મનુષ્ય પાળીનો હોતો તથા રુમાલ અને વાતળ પમ સર્વ ળીઘ હદ આલ્યો

હવે કોઈ તો એક વાતના નામ છાંને મગાવ્યું હતું પણ સર્વનો સમ્રાટ કરી થાકર હેર આખો તેમજ દ્રવ્ય પદું નામ કહ્યું તો દ્રવ્યના ગુણ વર્ણાય સર્વ આઠ્યા પ સમ્રાટ નયના યે મેદ છે એક જે દ્રવ્ય પળો સામાન્ય પળે ધોલતાં જીવ તયા પ્રજીવ દ્રવ્યનો મેદ વળ્લો નહી તે વેલેલો સામાન્ય સંમ્રાટ તયા યીજો વિશેષતાને અગીકાર કરે છે જે જીવ દ્રવ્ય એમ કહ્યું તો અજીવ સર્વ ટલ્યા તે વિશેષ સમ્રાટ

હવે બ્યવહાર નય કહે છે જે યામસ્વરૂપ વેલ્લીને મેદની વેલ્લેષણ કરે અને જે વાહેર વેલ્લતા ગુણનેજ માને પણ અતરંગ સત્તા ન માને વટલે પ નયમાં આચાર ક્રિયા મુશ્ય છે અતરંગ પરિણામનો લપયોગ નથી કેમકે નેગમ તયા સંમ્રાટ નય તે જ્ઞાન રૂપધ્યાનના પરિણામ વિના અંદા તયા સત્તા માહી છે તેમ રૂઢા કરણી મુશ્ય છે તે બ્યવહાર નય પળો જીવની સ્વપસ્થા અતેક પ્રકારે છે તિહાં નેગમ તયા સંમ્રાટ નય કરી સર્વ જીવ સત્તાર્યે એક રૂપ છે પણ બ્યવહાર નયથી જીવના વે મેદ છે એક સિજ ધીજા સસારી તે યલી સસારી જીવના વે મેદ છે એક અયોગી ઘોદમા ગુણ ઠાળા વાઠા તયા ધીજા સયોગી તે સયોગીના વે મેદ એક કેવલી મીજા છમસ્ય, છમસ્યના વે મેદ એક ધીળમોઢી યારમા ગુણ ઠાળે વર્ધતા મોહનીય કર્મ જ્ઞપામ્બું તે ધીજા લપશાન્ત મોહ તે લપશાન્ત મોહના યલી વે મેદ એક અકપાયી રૂગ્યારમા ગુણઠાળાના જીવ યીજા સકપાયી તે સકપાયીના વ મેદ છે એક સુસ્મકપાયી વશમાં ગુણ ઠાળાના જીવ ધીજા યાદર કપાયી તે યાદર કપાયીના યલી વે મેદ છે એક ઘેળી પ્રતિપન્ન, ધીજો ઘેળીરહિત તે ઘેળીરહિતના વે મેદ એક અમમાદી ધીજો પ્રમાદી તે પ્રમાદીના વે મેદ એક સર્વચિરતિ ધીજો વેશચિરતિ વેશચિરતિના વે મેદ એક પ્રતિ

परिणामि बीजा अम्रति परिणामि अम्रतिना धे मेद एक अम्रति समकेति बीजा अम्रति मिथ्यात्वी ते मिथ्यात्वीना धे मेद एक मध्य बीजा अमम्य ते मम्यना धे मेद एक प्रथीमेवी बीजा म्रथीममेवी एवी रीते जे जीव जेयो देखाय तेने सेयो माने ए व्यवहार नय छे एमज पुद्गलना मेद करवा ते कहे छे पुद्गल द्रव्यना धे मेद छे एक परमाणु, बीजो स्वध, संघना धे मेद एक जीवने लागा ते जीव सहित बीजा जीव रहित ते पढो प्रमुख अजीवनो स्वध हवे जीव सहित स्वधना धे मेद छे एक सूक्ष्म स्वध बीजो वादर संघ

इहा वर्णानो विचार लक्ष्मीये छैयें तिहां पुद्गलनी वर्णाना आठ छे १ औदारिकवर्गणा २ वैक्रियवर्गणा ३ आहारकवर्गणा ४ तेजसवर्गणा ५ मापावर्गणा ६ ससासवर्गणा ७ मनोवर्गणा ८ कामणवर्गणा—ए आठ वर्णानां नाम कब्जां वे परमाणु मेलायाय त्यारे ह्यणुकसंघ कहैवाय प्रण परमाणु मेलायाय तेवारे त्र्यणुकस्वध धाय एम संख्याता परमाणु मिले संख्या ताणुकस्वध धाय तेमज असंख्याते असख्याताणुकसंघ धाय तथा अनता परमाणु मिले अनंताणुकसंघ धाय ए संघ ते सर्व जीवने अग्रहण योग्य छे अने सेवारे अभम्यपी अनत गुणअधिक परमाणु मेलायाय तेवारे औदारिक शरीरने लेवा योग्य वर्गणा धाय

एमज औदारिकपी अनत गुणा अधिक वर्णानां दल भेला धाय तेवारे वैक्रिय वर्गणा धाय धली वैक्रिय धकी अनत गुणा परमाणु मिले तेवारे आहारकवर्गणा धाय एम सर्व वर्णाना एकैकपी अनंतगुणा अधिक परमाणु मिले तेवारे ते वर्गणा धाय पटले पहेलीपी बीजो-वर्गणा बीजोपी श्रीजी एम साठमी मनोवर्गणापी आठमी कामणवर्गणामां अनंत

ગુણ પરમાણુ અધિક છે इहाँ ૧ ઔદારિક, ૨ વૈક્રિય, ૬ આહારક, ૪ તૈલસ, ૫ ચાર વર્ગના ઘાદર છે તેમાં પાંચ ઘર્ણ-
 વે ગ-ધ-પાંચ રસ-આઠ સ્પર્શ ૫ વીસ ગુણ છે તથા ૧ ભાષા ૨ હસાસ ૩ મન ૪ કાર્મણ ૫ ચાર વર્ગના સૂક્ષ્મ છે એમાં
 પાંચ ઘર્ણ-૫ ગ-૫ પાચ રસ-ચાર સ્પર્શ-૫ સોલ ગુણ છે અને એક પરમાણુમાં એક વર્ણ-૫કર્ણ-૫-૫કરસ-૫-૫ સ્પર્શ ૫
 પાચ ગુણ છે એમ પુસ્તક લખના અનેક ભવ છે

૫ વ્યવહાર નયના છ ભેદ છે ૧ શુદ્ધવ્યવહાર તે આગલા ગુણ ઠાણાનું છોટવું અને રૂપરના ગુણઠાણાનું પ્રવણ કરવું
 અથવા જ્ઞાન-દર્શન-ધારિત્ર ગુણ તે નિષ્કલ્પનય એકરૂપ છે પણ તે શિષ્યને સમજાવવાને જૂદા જૂદા ભેદ કહેવા તે શુદ્ધ
 વ્યવહાર છે ૨ જીવમા અજ્ઞાન રાગ દ્વેષ લાગ્યા છે તે અશુદ્ધ પણું છે માટે અશુદ્ધ વ્યવહાર ૩ જે પુણ્યની ત્રિવ્યા કરવી
 તે શુભ વ્યવહાર ૪ જેવધી જીવ પાપક્રમ અશુભકર્મ કરે તે અશુભ વ્યવહાર ૫ ધન-ધર-કુટુંબ પ્રત્યક્ષ સર્વ આપણાથી
 જૂદા જૂદા છે પણ જીવે અજ્ઞાનપણે આપણા કરી જાણ્યા છે તે તપચરિત વ્યવહાર ૬ શરીરાધિક પરયસ્તુ યદપિ
 જીવથી જુદી છે સોપણ પરિણામિક માય લોલીપણે એકઠા મિલી રહ્યા છે તેને જીવ આપણા કરી જાણે છે તે અનુપ
 ચરિત વ્યવહાર જાણ્યો ૫ વ્યવહાર નય કષ્ટો

હવે ઋતુ સૂત્ર નયનો વિષાર કહે છે જે અતીત કાલ અને અનાગત કાલની અપેક્ષા ન કરે પણ વર્તમાન કાલે જે
 ઘસ્તુ જેવા ગુણે પરિણમે ઘર્ષે છે ઘસ્તુને તેવેજ પરિણમે માને માટે ૫ નય પરિણામપ્રાપ્તી છે જેમ કોઈક જીવ ગૃહસ્થ છે
 પણ અતરંગ સાધુવત્માન પરિણામ છે સો તે જીવને સાધુ કહે અને કોઈક જીવ સાધુને ઘેપે છે પણ મનના પરિણામ

विषयामिताप सहित છે તો તે જીવ અત્રતીચ છે એમ ક્રજુસૂત્રનું માનનું છે તે ક્રજુસૂત્રના જે મેઘ છે એમ સૂક્ષ્મ ક્રજુ
 સૂત્ર તે એમ કહે જે સદા કાલ સર્વ ઘસ્તુનાં એક ઘર્ષમાનસમય યર્ષે છે પટલે એ ઝીવ ગયાકાલે અજ્ઞાની હતો અને
 અનાગત કાલે અજ્ઞાની ભાવે અજ્ઞાની ઘશે એમ વેદુકાલની અપેક્ષા ન કરે પણ એક ઘર્ષમાન સમયે એ એવો તેને તેવો
 કહે તે સૂક્ષ્મ ક્રજુ સૂત્ર કહિયે અને મહોદય ઘાઘપરિણામપ્રદે તે સ્પૂલ ક્રજુસૂત્ર નય જાણવો પટલે ક્રજુસૂત્ર નય કહ્યો

હવે શબ્દનય કહે છે જે યસ્તુ ગુણયત અથવા નિર્ગુણ તે યસ્તુને નામકહી ઘોલાધિયે એ ભાષાઘર્ષગણાથી શબ્દ એળે
 યપન ગોષ્ઠર ધાય તે શબ્દ નય એ કારણે અરૂપી દ્રવ્ય ઘષ્ઠનથી પ્રાઘાજાય નહી પણ ઘષ્ઠનથી કહેવા તે શબ્દ નય
 કહિયે ઇદ્દા જે શબ્દનો અર્થ હોય તેપણો જે ઘસ્તુમા ઘસ્તુપણે પામિયે તેવારે તે ઘસ્તુ શબ્દનય કહિયે એમ ઘટની વેદાને
 કરતો હોય તે ઘટ એ શબ્દનયમા વ્યાકરણથી નીપના અને વીજા પણ સર્વ શબ્દ હીઠા તે શબ્દનયના ચાર મેઘ છે ૧
 નામ ૨ સ્થાપના ૩ દ્રવ્ય ૪ માય-અને ચાર નિક્ષેપાના પણ પરિજ્ઞ નામ છે

૧ પહલો નામ નિક્ષેપો તે આકાર તથા ગુણરહિત ઘસ્તુને નામ કરી ઘોલાવવો એમ એક લાકડીનો કટકો છેડને
 કોઈકે તેડને જીવ એવું નામ કહું તે નામ જીવ જાણવું એમ કપ્પલી ઘોરીને સાંપની બુઝિયે કરી ઘાવહણે તેડને સાપની
 હિંસા સાગે એ નામ સર્પ ઘયું એવીજ રીતે નામ તપ અથવા નામ સિદ્ધ એમ ઘટ પ્રમુલને સિદ્ધવટ એમ કહી ઘોલાવે છે
 તે નામ નિક્ષેપો કહિયે એ સૂત્ર સાલે છે

૨ સ્થાપના નિક્ષેપો કહે છે જે કોઈક ઘસ્તુમા કોઈક ઘસ્તુનો આકાર દેહીને તેડને તે ઘસ્તુ કહે એમ ચિત્રામ અથવા

ક્રાટ પાયાળની મૂર્તિ તેને ઘોઢા-હાથીનો આકાર છે છો તે ષોઢા હાથી કહેવાય તે સ્થાપના જાણવી એ સ્થાપના નિષ્કેપો
 નામ નિષ્કેપે સહિત હોય એમ સ્થાપના ચિત્ર ચિનપ્રતિમા પ્રમુલ્ય તે સવૃભાવ સ્થાપના પળ હોય અને અસવૃભાવ સ્થાપના
 પળ હોય અકૃત્રિમ ચિનપ્રતિમા તે નંદીશ્વરસ્ત્રીપ પ્રમુલ્યને વિષે, અને એહ રૂઢાંની ચિનપ્રતિમાતે કૃત્રિમ તે સર્વ સ્થાપના
 જાણવી એમ ચિત્રામની સ્ત્રી ચિહાં માંઠી હોય તિહાં સાધુ રહે નહીં કારણ કે સ્થાપના સ્ત્રી છે તે સ્ત્રી મુલ્ય જાણવી
 તેમજ ચિનપ્રતિમા ચિનસમાન જાણવી રૂઢાં કોશ્ક અજ્ઞાની જીય કહે છે, જે સ્થાપનામાં જ્ઞાનાવિ ગુણ નથી તેથી
 સ્થાપનાને માનથી પૂજાવી નહીં તેને ઉષ્ટર કહે છે કે સ્થાપનારૂપ સ્ત્રીમાં સ્ત્રીપણાના ગુણ નથી સો પળ તે વિકારનું
 કારણ યાય છે તેમજ ચિનપ્રતિમાં પળ ધ્યાનનુ કારણ છે અને જે એમ પુછે કે તિસા યાય છે અને મગવંતે તો ઘયાને
 ધર્મ કલ્પો છે તેહને એમ કહેશું જે પરવેશી રાજા કેસી ગુરૂને યાંદયાને અર્થે ધીજે ધીયસે મોહોટા આઠંઘરથી આલ્યો
 તે ધંદનામાં તિસા ધયી પળ હામ કારણ ગણતાં ઢોટો ન ઘયો ધીજો મહિનાયથીયે છ મિત્ર પ્રતિવોધવાને પુતલીનો
 દદાન્ત્વ કલ્પો તે તિસા સો ઘળી ઘયી પળ તે હામના કારણમાં ગળી છે એમ માય શુદ્ધ હોય તિહાં તિસા હાગતી નથી
 અયયા કોશ્ક એમ કહે છે જે અમે આપણે સ્થાનકે વેઠા નમુતુણ કહિશુ અમને હામ યાસે તે સ્ત્રો પળ મગયતી
 સુત્રમાં મગયાનને ધંદનાને અધિકારે તો તિહા જઈ ઘંદના કરયાનું કલ્પ છે તથા નિષ્કેપને અધિકારે એમ
 કલ્પ જે માય નિષ્કેપો એકલો યાય નહીં પળ નામ સ્થાપના તથા વ્રુલ્પ એ વ્રુણ મિસ્યા માય નિષ્કેપો યાય માટે સ્થાપના
 અપમય માનવી રૂથે જે સ્થાપના ન માને ઘેને કહિયે જે ચિત્રામની મૂર્તિને તિસાના પરિણામથી કાઢે તેહને તિસા હાગે

છે કેમકે વિનરત્નાસ્થાને વિનપ્રતિમા પૂજતાં લાભ ધાય છે એમ યુક્તિ કરતા તથા આગમની સાક્ષે પળ વિનપ્રતિમાને વિનપ્રમાન માને તે આરાધક અને એ વિનપ્રતિમાને ન માને તેને સ્થાપના નિક્ષેપો હયાવ્યો અને સ્થાપના હયાવી તો દ્રવ્ય તથા માય નિક્ષેપો ઘાપના વિના ધાય નહીં માટે દ્રવ્ય તથા માય પણ હયાવ્યો એમ ઘ્રણ નિક્ષેપા હયાવ્યા તેયારે સ્તિચાલ્ન રચાવ્યાન માટે એ વિનપ્રતિમાને નહીં માને તે વિરાધક આણવો તે સ્થાપના ફતર અને યાવત્ કધિક પ ૬ મારે છે

૧ દ્રવ્ય નિક્ષેપો ફરે છે, જેનો નામ પણ હોય તથા આકાર ધાપના ગુણ પણ હોય અને લક્ષણ હોય પણ આત્મોપ યોગ ન મિતે તે દ્રવ્ય નિક્ષેપો આણવો વટલે અજ્ઞાની જીવ તે જીવ સ્વરૂપના હપયોગ વિના દ્રવ્ય જીવ છે “અણુવ પ્રોગોદ્યં” ઇતિ મનુયોગદ્વારરચનાત્ થલી કહું છે જે સિદ્ધાન્ત યાંચતા પૂછતાં પદ અક્ષર માત્રા શુદ્ધ અર્થ કરે છે અને ગુગ્મુને મદરે છે તે પણ ગુદ્ધ નિર્થે વોતાની સવા ઓરહ્યા વિના સર્વ દ્રવ્ય નિક્ષેપામા છે જે માય વિના દ્રવ્યપણો છે તે પુણ્યર્પણું કારણ છે પણ મોહનું કારણ નથી વટલે એ કરણીરૂપ કદ વપસ્યા કરે છે અને જીવ અજીવ પદાર્પની મળા મોહર્ગી નથી તેને ભગવતી સૂત્રમાં અવતી તથા અપઘલ્કાણી કદ્યાં છે તથા એ વલ્કલી ઘાદ્ય ફરણી કરે છે અને વોને ગાપુ કદેયાય છે તે મૃગા વાદી છે એમ ઉત્તરાધ્યયન સૂત્રમાં કવુ છે “નમુનીરહ્યાસેણ” વ્યવને “નાણેણય મુળી દોર’ વ્યવચનથી એ જ્ઞાનયાન તે મુલિ છે મને એ અજ્ઞાની તે મિધ્યાત્વી છે તથા કોદ્ધક ગણિતાનુયોગના નરક રૂપજાના વોલ મપ્પસ વલિ શ્રાપરૂનો માષાર જાણીને કદે એ અમેજ્ઞાની હૈયે તે પણ જ્ઞાની નથી પણ એ દ્રવ્ય ગુણ

પર્યાય જાણે તેને જ્ઞાની કહિયેં શ્રીવત્તરાષ્ટ્રયને મોઢમાર્ગે કહ્યો છે ગાયા “પર્યં પશ્વધિહનાર્ણં દ્વાપાળયગુણાણય, પગ્નપાળં સ્વેસિંષ નાણ નાળી હિં દેસિયં ॥ ૧ ॥ માટે યસ્તુ સત્તા આળ્યા વિના જ્ઞાની સમખંડું નહીં અને નવતસ્ત્વ ઓલક્ષે તે સમખેતિ અને પહયા જ્ઞાન દર્શન વિના જે કહે કે અને ધારિત્રિઆ છેવે તે પળ મૂપાવાવી છે કારણ કે શ્રીવત્તરા ષ્ટયન સૂત્ર મધ્યે કહ્યું છે એ “નાળં દંસણ નાળં નાળેણ વિના ન ઠુતિ ધરણ ગુણા” ઇ ધવન છે તેમાટે આજ કેટલાક જ્ઞાન હીન ત્રિયાનો આશંચર દેસાઢે છે તે ઢગ છે તેહનો સગ કરવો નહીં ઇ ઘાઘ કરળી અમમ્યજીવને પળ આવે માટે ઇ ઘાઘ કરળી ડપર રાષ્વંડું નહીં અને આત્માનુ સ્વરૂપ ઓલક્યા વિના સામાયક પઠિકમણા પશ્વક્ષાણ કરવાં છે સર્વ દ્રલ્ય નિઢેપામાં પુળ્યાત્રય છે પળ સંચર નથી શ્રીમગવતી સૂત્ર મધ્યે કહ્યું છે “આયા સહુ સામાશ્યં” ઇ આલા ઘાધી આળજો ઠયા જીય સ્વરૂપ આળ્યા વિના સપ સંચમ પુળ્ય પ્રકૃતિ તે વેવતાના મઘનુ કારણ છે “પુપ તવેળં પુપ સંચમેળં વેઘલોપ વચયજ્વંતિ નો વેવળ આયમાયપત્તયાય” ઇ આલાધો મગવતીમાં કહ્યો છે ઠયા જે ત્રિયાલોપી આધારહીન છે અને જ્ઞાનહીન છે માઘ ગચ્છની ઠાજે સિદ્ધાન્ત મળે ઘાષે છે મત પશ્વક્ષાણ કરે છે તે પળ વ્રમ્ય નિઢેપો જાળયો ઇમ શ્રી અનુયોગઢારમાં કહ્યું છે

વે રમે સમળગુળમુકજોગી છકાયનિરુળકંપા હયાશ્ય ઠઢામા ગયાશ્ય નિરુક્તા ઘઢામઢા પુળ્યોઢા ॥ પંઢુરપઢપા- ડરગળા ત્રિણાળમળાળાણસહંદરા વિહરિક્તળ ઠમઓ કાલ આયસ્સગસ્ત વચકૃતિ સે સં હોગુત્તરિય ઠઘાવસ્ત્વયં ॥

અચ-જેને છકાયની ઠયા નથી ઘોઢાનીપેરે ઠન્મદ છે હાયીનીપેરે નિંકુશ છે પોઠાના શરીરને ઘોષઠાં મસલઠા

રજસે કપડે શિળાગાર કરી ગચ્ઠના મમત્વમાર્થે માધતાં સ્વેચ્છાચારી ધીતરાગની શાશા માંસતા જે તપ ક્રિયા કરે છે તે પણ દ્રવ્ય નિષ્કેપામાં છે અથવા ય્યોતિષ વૈષ્ણક કરે છે અને પોતાને આચાર્ય હપાધ્યાય કહેયરાવીને હોકપાસે મહિમા કરે છે તે પત્રીવંધ સોટા કપૈયા જેવા છે ઘણા મવ મમત્વે માટે અવંતનીક છે એ સાલ્ય હપરાધ્યાયન મમત્વે અનાથી મુલિના અધ્યયન યક્ષી જાણવી અને સૂત્રના અર્થ ગુરુમુલ્કે સિસ્થાધિના તથા નય પ્રમાણ જાણ્યા વિના નિષ્કે આત્માનું સ્વરૂપ ઓહસ્યા વિના નિર્યુક્તિ વિના હપવેશ આપે છે તે પોતે હો સંસારમાં હુલ્યા છે પણ એ તેમની પાસે વેલે છે તેમને પણ સંસારમાં હુલ્યા છે એમ પ્રશ્નવ્યાકરણસૂત્ર તથા અનુયોગહારસૂત્રમાં કહ્યું છે “અજ્ઞત્ય શ્વેષ સોહસમં” ઇત્યાધિ અને મગવતી સૂત્રમાં પણ કહ્યું છે “સુતત્યો સહ્યપદમો, ધીઓ નિજુત્તિમીસઓ મણિઓ, તશ્ઓ ય નિર ધસેસો દત્ત વિશી હોદ્ર અણુઓ” અને કેટલાક એમ કહે છે એ અને સૂત્ર હપર અર્થ કરિયે હૈયેં તો નિર્યુક્તિ તથા ટીકા પ્રમુલ્કનું શુ કામ છે તેપણ મૂપાધાર છે કેમ કે શીપ્રશ્નવ્યાકરણમાં “વયળતિયં હિગતિયં” ઇત્યાધિક જાણ્યા વિના અને નય નિષ્કેપ જાણ્યા વિના જે હપવેશ આપે તે મૂપાધાર છે એમ અનેક સૂત્રમાં કહ્યું છે માટે હદુશ્રુત પાસે હપવેશ સાંમલ્યો શી હપરાધ્યાયન મમત્વે હદુશ્રુતને મેરુની તથા સમુદ્રની અને કલ્પવૃક્ષાધિ સોહ હપમા ધીધી છે એ દ્રવ્ય નિષ્કેપો કહ્યો

૪ માવનિષ્કેપો કહે છે જે નામ સ્યાપના અને દ્રવ્ય એ વ્રણ નિષ્કેપા તે એક માધનિષ્કેપા વિના અશુદ્ધ છે જે નામ તથા આકાર લક્ષણ ગુણ સહિત હસ્તુ તે માધ નિષ્કેપો જાણ્યો હવજોગોમાવ ઇતિ હવષનાત્ પટલે પૂજા યાન શીલ

તપ ક્રિયા જ્ઞાન પૂ સર્વ માયનિક્ષેપે સહિત લામનું કારણ છે. શ્રદ્ધા કાશ્ચ કહ્નશજ મનના પારણામ દુષ્ટ કરીને જે કારિયે તેને માપ કહિયેં એમ કહે છે તે છૂટા છે. એ સુલની યાછાયેં મિચ્યાત્વી પળ ઘણા કરે છે તે ગણાંડું નહીં. ઘણાં સૂત્રની સાલે ધીતરાગની આજ્ઞા હેય ત્પાવેયની પરિશ્ઠા કરી અર્ચીવસત્વ તથા આત્રવત્વ અને ઘન્યતત્વ ઝપર હેય ફેરતાં ત્યાગ માય અને જીયના સ્વગુણ જે સંચર નિર્જેરા તથા મોક્ષતત્વ ઝપરેં ત્પાવેય પરિણામ તે માય કહિયેં. એટલે રૂપી ગુણ તે દ્રવ્ય નિક્ષેપ છે અને અરૂપીગુણ તે માયનિક્ષેપ છે. એટલે મન ઘષન કાયા હેશયાદિક સર્વ દ્રવ્ય નિક્ષેપામાં છે અને જ્ઞાન દર્શન ચારિત્ર ધીર્ય ધ્યાન પ્રમુલ્હ સર્વ ગુણ માયનિક્ષેપામાં છે. એ માય નિક્ષેપો તે નામસ્થાપના તથા દ્રવ્ય સહિત હેય એટલે ચાર નિક્ષેપા કહ્યા.

હયે ચાર નિક્ષેપા પદાર્થ ઝપર લગાઢી દેલાઢે છે. નામ જીવ તે ચેતના અથવા માંચાને એક ઘાળને જીવ કહી યોછાયે છે તે નામ નિક્ષેપે જીવ, મૂર્તિ પ્રમુલ્હ યાપિયેં તે સ્થાપના જીવ એકેત્રીપી પર્વેત્રી પર્યંત સર્વ જીવ છે. પળ ત્પયોગ મિલે નહિ તે દ્રવ્યજીવ અને મૂર્તિમાં જીવ સ્વરૂપ ઓલસી સમવિત્તના ત્પયોગમાં છે તે માયજીવ એમ ધર્માસ્તિકાયાદિક દ્રવ્યમાં પળ જાણતું નામયી ધર્માસ્તિકાય કહી યોછાયયો તેના નામ ધર્માસ્તિકાય ધર્માસ્તિકાય એહવા અહર તલ્હયા દટાંત કારણે કાંઈક યસ્તુ યાપયી તે સ્થાપના ધર્માસ્તિકાય તથા ધર્માસ્તિકાય જે અસંલ્યાતપ્રવેશી ધર્મદ્રવ્ય છે તે દ્રવ્ય ધર્માસ્તિકાય પૂ ધર્માસ્તિકાચને જેવારેં ચલળ સહાય ગુણની અપેશાસહિત ઓલસિયેં તે માય ધર્માસ્તિકાય.

હયે કોઈકનો સાધુ એહયો નામ છે તે નામ સાધુ અને સ્થાપના કારિયેં તે સ્થાપનાસાધુ તથા જે પશ્ચમહાત્રવ પાલે

ક્રિયા અનુષ્ઠાન કરે ગૂઝનો આદારલીયે પણ જ્ઞાનપ્રયાનનો શ્રેયો ઉપયોગ નોડ્રયે તેયો ઉપયોગ ન હોય તે દ્રવ્યગણુ જે માત્ર ગંગરમોહનો ગાપક પર માય માણુની કર્ણી કરે તે માય નિષ્ક્રેયે ગણુ કહિયે

હોયરૂનો અરિહત તામ છે તે નામ અરિહત અને અરિહતની પ્રતિમા તે ઘાપના અરિહત જેટલાયુષી હટ્તસ્ય અગ્રમ્યા મે દ્રવ્ય અરિહત અને પેચાજ્ઞાન વામ્યા યટે લોહાઝોરૂનો માય જાણે દરો તે માય અરિહત એમ સિદ્ધમાં પણ કહેયો

હાર ઝીયનો જ્ઞાણણ્યો નામ અપગા ભાવે અપીયનો નામ તે નામજ્ઞાન તથા જે જ્ઞાન પુસ્તકમાં હસ્યુ છે તે સ્થાપ નાજ્ઞા જે ઉપયોગ પિતા ચિદ્ગતનો મળયો અથવા અન્યમતિના સયદાહ મળયા તથા શુદ્ધીરાચિક તે સર્વ દ્રવ્યજ્ઞાન જે નાજ્ઞાનું જાણું તે માયજ્ઞાન

તથા હોયરૂનું તપ પરનું નામ તે નામતપ તથા પુસ્તકમાં તપની ચિર્ષીનું હામન તે ઘાપનાતપ અને પુણ્યરૂપ મામ તપનારિક કસ્યા તે દ્રવ્યતપ જે પરવલુ ડ્રપર ત્યાગનો પરિણામ તે માયતપ એમ સંચરારિક સર્વમા ચાર ચાર નિધેગ જ્ઞાયા તથા શ્રીમનુયોગદ્વાર માય કયું છે-યતઃ “જાણિજ્ઞા નિક્સેયં નિસ્લિપ્યે નિરયસેમં ॥ જરથ તિય ન જાણિજ્ઞા પામગ નિમિત્તં તાય ॥ ૧ ॥ ૫ ચાર નિમિત્તપા કસ્યા પટલે શબ્દ નય કસ્યો

રવે હરો ગમનિક્રિટ નય કહે છે જે વરુના ફેટજાક ગુણ પ્રગટ્યા છે અને ફેટલાક ગુણ પ્રગટ્યા નથી પણ અવદય પ્રગટને પરવી વરુને વગુ કહે છે વગુના નામાતર વરુ કરી જાણે શ્રેમ ઝીય ચેતન તથા આરમા વહનો એક મર્ષ

કહે તે સમમિક્કઠ નય કહિયેં પ નય एक अंघ ओछी यस्तुने पूरे पूरी यस्तु कहे अेम तेरमां गुणठाणे केवळी होय तेहने सिद्ध कहे प नयना मेद विलकुत नयी प सममिक्कठ नय कम्मो

हये पयभूत नय कहे छे जे वस्तु पोताने गुणे संपूर्ण छे अने पोतानी क्रिया करे छे तेने ते वस्तु कही बोलावे अेम मोक्षस्थानके जे जीघ पहोतो तेने सिद्ध कहे अेम पाणीपी भरेछो खीना माया ऊपर आयतो जल घरण क्रिया करतो तेने पढी कहे प पर्यं भूतनय कम्मो

हये सात नयना दृष्टान्त श्रीअनुयोगद्वारदूत्रपी छलिये छैयं अेम कोत्रक पुरुपे कोत्रक वीखा पुरुपने पूज्युं जे तमे किदां वसोछो सेवारें ते पुरुपे कष्टं हुं लोकमां वसुं छुं तेवारें अशुद्ध नैगमवाले पुज्युं जे लोकना व्रण मेद छे १ अधो लोक २ त्रिछोलोक ३ ऊर्ध्वलोक तेमां तु किदां रहे छे तेवारें शुद्धनैगमे कष्टं जे त्रिछालोकमां रहुं छुं यलीपुज्युं जे त्रिछोलोकमां असंख्याता द्वीप समुद्र छे तेमां हुं कयाद्वीपमां रहे छे सेवारें पिशुद्धनैगमे कष्टं जे जमुद्वीपमां रहुं छुं ते जमुद्वीपमां क्षेत्र घणा छे ते सेमा तु कया क्षेत्रमा रहे छे तेवारें अतिशुद्धनैगम योन्वयो जे भरत क्षेत्रमां रहुं छुं ते क्षेत्रना छ लट छे ते माहिलां कया लटमां रहे छे तेवारें कष्टं जे मध्य लटमां रहुं छुं एम क्रमे पूछता छेले कष्टं जे आपणा देशमां रहुं छुं तेवारें फरी पुज्युं जे देशमां तो नगरग्राम घणा छे तो तु किदां रहे छे सेवारें कष्टं जे हुं अमुक गाममां रहुं छुं ते गाममां यली अमुक पादो तथा अमुक घर घतान्युं तिहा सुधी नैगम नय जाणयो

अने संग्रह नययाछो योन्वयो जे मारा पोताना शरीरमां वसुं छु तथा व्यपहार नययाछो योन्वयो जे सयारे वेवो छु

सेटलाख विछानामां रहुं छुं अने ऋजुसुख नयबाले कसुं जे मारा आत्माना बसस्थावा प्रवेशमा रहुं छुं पही शब्द नय कहे जे मारा स्वभावमां रहुं छुं तेमज समभिरुद्ध नय कहे जे हु मारा गुणमां रहुं छुं अने पर्यभूतनयवापी कहे जे ज्ञान वर्णनगुणमां यहुं छुं ए इटांत कसो तेम सर्व वस्तुमां कहेहुं,

तथा कोशके प्रदेशमात्र क्षेत्र अंगीकार करी पुछ्यु जे ए प्रदेश कया ब्रह्मनो छे तेवारे नैगमनय दोस्यो जे छप ब्रह्मनो प्रदेश छे केमके एक आकाश प्रदेशमध्ये छ ब्रह्म मेला छे तेवारे संग्रहनय दोस्यो जे काल ब्रह्म तो अप्रदेशी छे ते माटे सर्व लोकमां एक समय सरिसो छे एण ते एक आकाश ब्रह्मना प्रवेशमां जूरो मयी माटे काल विना पांच ब्रह्मनो प्रवेश छे तेवारे व्ययहार नय दोस्यो के जे ब्रह्म मुख्य देखाय छे तेहनो प्रदेश छे तेवारे ऋजुसुखनय दोस्यो के जे ब्रह्मनो उपयोग देख पुछिये ते ब्रह्मनो प्रवेश छे जो धर्मास्तिकायनो उपयोग देख पुछिये तो धर्मास्तिकायनो प्रवेश छे जो अधर्मास्तिकायनो उपयोग देख पुछिये तो अधर्मास्तिकायनो प्रवेश छे तेवारे शुच्यनय दोस्यो के जे ब्रह्मनो नाम तइ पुछिये ते ब्रह्मनो प्रवेश छे हवे समभिरुद्ध नय दोस्यो जे एक आकाश प्रदेश मध्ये धर्मास्तिकायनो एक प्रदेश छे अधर्मास्तिकायनो एक प्रदेश छे अने जीयना बनता प्रवेश छे पुगलना पण अतंता प्रदेश छे तेवारे एव मृत नय दोस्यो के प्रदेशने जे ब्रह्मनी कित्या गुण पर्याय अगीकार करी देखिये ते समय ते प्रदेश ते ब्रह्मनो गणिये ए प्रदेश शमां सात नय कया

हवे बीवमां सात नय कहे छे मखम नैगमनयनी मते जे गुण पर्यायवत णरीर सन्नित ते नीव पटले णरीरमां जे

વીજા પુસ્તક સયા ધર્માસ્તિકાયાવિક દ્રવ્ય છે તે સર્વ જીવમાંજ ગણ્યા તેવાં સમ્રહનય ધોત્યો એ અસહ્યાત પ્રવેશી તે જીવ પટલે એક પ્રાકાશના પ્રવેશ દસ્યા વીજા સર્વદ્રવ્ય ઇમાં ગણાના તેવાં વ્યયહારનય ધોત્યો એ વિપયલેયી કામ યાત સંમારે તે જીવ ઇહાં ધર્માસ્તિકાય-અધર્માસ્તિકાય આકાશ તયા વીજા પુસ્તક સર્વ દલ્યા પળ પાવેશ્નદ્રી તયા મન અને હેદયા ઇ પુસ્તક છે તે જીવમાં ગણાના કારણકે વિપયાવિકતો શ્દ્રિયો હેછે તે જીવયી ન્યારા છે પળ ઇહા વ્યયહાર નય મતે જીવ મેહા હીયા છે તેવાં ક્ષુબ્ધનય ધોત્યો એ સપયોગર્થત તે જીવ ઇહાં શ્દ્રિયાવિક સર્વ દલ્યા પળ અજ્ઞાન તયા જ્ઞાનના મેદ દલ્યા નહી હવે શબ્દ નય ધોત્યો એ નામગીવ સ્થાપનાજીવ દ્રવ્યજીવ માયજીવ ઇહાં જીવમાં ગુણ-નિર્ગુણનો મેદ પચ્ચો નહી તેવાં સમમિક્કટ નય ધોત્યો એ જ્ઞાનાવિક ગુણર્થત તે જીવ તેવાં મતિજ્ઞાન શુભજ્ઞાન શ્દ્યાવિક સાધક અપસ્યાના ગુણ તે સર્વ જીવ સ્વરૂપમાં આભ્યા હવે ઇવમૂતનય ધોત્યો એ અર્નતજ્ઞાન અને તવર્દન અર્નત ચારિત્ર શુભસચાપેત તે જીવ ઇ નયે એ સિદ્ધ અવસ્થામાં ગુણહતા તેજમ્મદ્યા ઇ સાત નયે જીવ દ્રવ્ય કષ્ટો

હવે સાત નયે ધર્મ કહે છે નૈગમનય ધોત્યો એ સર્વ ધર્મ છે કેમકે સર્વ પ્રાણી ધર્મને ઘાહે છે ઇ નય અશરૂપ ધર્મને ધર્મ ઇહુ નામ કહે હવે સમ્રહનય ધોત્યો એ ઘટેરાયે આદર્યો તે ધર્મ ઇણે અનાષાર છોત્યો પળ કુલાષારને ધર્મ કલ્પો બ્યયહાર નય ધોત્યો એ સુસ્તુ કારણ તે ધર્મ ઇણે પુણ્યકરણીને ધર્મ કરી માન્યો ક્ષુબ્ધનય મતે એ સપયોગ સહિત વૈરાગરૂપ પરિણામ તે ધર્મ કહિયે ઇ નયમાં યયા પ્રવૃત્તિ કરણના પરિણામ પ્રમુલ્ય સર્વ ધર્મમા ગણ્યાં તે મિષ્યા સ્વીને પળ હોય હવે શબ્દનય ધોત્યો એ ધર્મનું મૂલ સમકિત છે માટે સમકિત તેજ ધર્મ તેવાં સમમિક્કટનય ધોત્યો

जे कीव अचीव नयतत्व तथा छ द्रब्यने ओलखीने जीव सचाभ्यावे अचीवनी त्याग करे पहयो ज्ञान दर्शन चारित्रनो शुद्ध निश्चय परिणाम ते धर्म ए नये साधक सिद्धना परिणाम ते धर्म पणे लीघा एव मूतनय दोस्यो जे शुद्धध्यान रूपातीतता परिणाम क्षयकमेणी कर्म क्षयना कारण ते धर्म जे जीवनो मूलस्वभाव ते यस्तुधर्म जे मोक्षरूप कार्यने करे ते धर्म ए साते नये धर्म कब्यो

हवे सात नये सिद्धपणो कहे छे नैगमनयने मते सर्वजीव सिद्ध छे केमके सर्वजीवना आठरुषकप्रवेश सिद्ध समान निर्मल छे माटे, संग्रहनय कहे जे सर्वजीवनी सत्ता सिद्धसमान छे एणे पर्यायार्थिकनये करी कर्म सहित भवस्था ते टाहीने द्रव्यार्थिक नये करी अवस्था अंगीकार करी तेवारे व्यवहारनय दोस्यो जे विद्या लब्धि प्रमुख गुणे करी सिद्ध ययो ते सिद्ध ए नये बाह्य तप प्रमुख अंगीकार कस्या हवे ऋजुसूत्रनय दोस्यो के जेणे पोताना आत्मानी सिद्धपणानी सत्ता ओलखी अने ध्याननो उपयोग पण सेज वरें छे ते समयें ते कीव सिद्ध जाणयो ए नये समकेशि कीव सिद्ध समान छे एम कहुं हवे शब्दनय दोस्यो जे शुद्ध शुद्धध्यान परिणाम नामाधिक निक्षेपें ते सिद्ध तेवारे सममिरुदनय दोस्यो जे केशलज्ञान केशलदर्शन यथास्यात चारित्र ए गुणे सहित ते सिद्ध जाणवा ए नये तेरमां चरदमां गुणठाणाना केशलीने सिद्ध कब्या अने एयंमूतनय कहे छे के जेना सकल कर्मक्षय थया जोकने अंते विराजमान अष्टगुण सपन्न ते सिद्ध जाणया परीते सिद्ध परें सात नय कब्या एम सात नय मिस्या समकेशि छे अने जे

एक नयने प्रहण करे ते सिध्यात्वी छे ए साते नयासंबद्ध ते वधन प्रमाण छे अने ए सात नयमां कोइपण नयने उयापे सेनुं वधन अप्रमाण छे

हये प्रमाणनो विचार करे छे प्रमाणना बे भेद छे एक प्रत्यक्षप्रमाण वीजुं परोक्षप्रमाण तेमां अे जीव पोताना उपयोगपी द्रब्यने जाणे ते प्रत्यक्ष प्रमाण कहिये जेम केवली छ द्रब्य प्रत्यक्ष प्रमाणे जाणे तथा देखे ते माटे केवल ज्ञान ते सर्वपी प्रत्यक्ष ज्ञान छे अने मनपर्ययज्ञान ते मनो धर्गणा प्रत्यक्ष जाणे तथा अवधिज्ञान ते पुत्रल द्रब्यने प्रत्यक्ष जाणे माटे ए बे ज्ञान देशप्रत्यक्ष छे वीजु छद्मस्य ज्ञान ते सर्व परोक्ष प्रमाण छे

हये परोक्ष प्रमाण करे छे मतिज्ञाननो अने श्रुतज्ञाननो उपयोग परोक्ष प्रमाण छे केमके अे शाखना पक्षपी जाणे ते परोक्ष प्रमाण कहिये ते परोक्ष प्रमाणना प्रण भेद छे १ अनुमाणप्रमाण २ आगमप्रमाण ३ उपमानप्रमाण तेमां अनुमाण एटले कोइक सहिनाण देखीने जे ज्ञान थाय जेम धुमाडो देखीने अप्पिनुं अनुमान थाय अने आगम एटले शाखनी साखपी जे यात जाणिये जेम देयलोक तथा नरक निगोद विगेरेनो विचार आगमपी जाणिये छेये ते आगम प्रमाण अने कोइक यस्तुनो एटान्त आपीने यस्तुने ओलखावधी ते उपमान प्रमाण जाणयो ए प्रमाण कथा हवे सत् असत् पक्षपी ससभंगी करे छे

१ स्वात् केहतां अनेकंठ पणे सर्व अपेक्षा लेइ जीवद्रब्यमा आपणो द्रब्य आपणो क्षेत्र आपणो काल आपणो माप एम आपणो गुण पर्याये जीव छे तेम सर्व द्रब्य आपणो गुणपर्याये छे ते स्वात् अस्ति नामा पहेलो भागो थयो

૨ જે જીવમાં ધીજા પાંચ દ્રવ્યના ૧ દ્રવ્ય ૨ સેત્ર ૩ કાલ ૪ માથ તે પરદ્રવ્યના ગુણપર્યાય જીવમાનથી દટલે પર દ્રવ્યના ગુણનો નાસ્તિપણો સર્વ દ્રવ્યમાં છે ૫ સ્યાત્ નાસ્તિ ધીજો માંગો થયો

૧ દ્રવ્ય સ્યગુણે અસ્તિ અને પરગુણે નાસ્તિ ૫ બે માંગા દ્રવ્યમાં છે જેમ જે સમયે શુદ્ધ સ્વગુણની અસ્તિ છે તેજ સમયે પરગુણની નાસ્તિ પણ છે માટે અસ્તિ નાસ્તિ ૫ વેદું માંગા મેઝા છે તે સ્યાત્ અસ્તિ નાસ્તિ ધીજો માંગો થયો

૪ અસ્તિ અને નાસ્તિ ૫ વેદુ માંગા દ્રવ્યમાં છે તે ધષ્ટને કરી અસ્તિ દટલો યોજતાં અસંખ્યાતા સમય હાગે તેથી નાસ્તિ માંગો તેજ યજ્ઞતે કહવાણો નહીં અને જો નાસ્તિ માંગો કહ્યો તો અસ્તિ પણો નાભ્યો માટે દ્રવ્ય અસ્તિ કહેતાં ધર્માં નાસ્તિપણો તેજ સમયે દ્રવ્યમાં છે તે નહીં કહેવાણો માટે મૃપાવાદ હાગે તેમજ નાસ્તિ કહેતાં અસ્તિનો મૃપાવાદ હાગે માટે ધષ્ટને અગોચર છે દ્રવ્ય સમયમાં વેદુ ધષ્ટન ધોસ્વા જાય નહીં કેમકે દ્રવ્ય અક્ષર ધોલતા અસંખ્યાતા સમય હાગે છે માટે ધષ્ટનથી અગોચર છે તે સ્યાત્ અયક્ષ્ય ૫ ધોયો માંગો કહ્યો

૫ તે અયક્ષ્યપણો યસ્તુમાં અસ્તિધર્મનો પણ છે માટે સ્યાત્ અસ્તિ અયક્ષ્ય પાંચમો માંગો કહ્યો

૬ તેમજ નાસ્તિ ધર્મનો પણ અયક્ષ્ય પણો ધસ્તુ મધ્યે છે માટે સ્યાત્ નાસ્તિ અયક્ષ્ય છઠ્ઠો માંગો કહ્યો

૭ તે અસ્તિપણો તથા નાસ્તિપણો વેદુ ધર્મ દ્રવ્ય સમયે યસ્તુ મધ્યે છે પણ ધષ્ટનથી અયક્ષ્ય છે માટે સ્યાત્ અસ્તિ નાસ્તિ યુગપત્ અયક્ષ્ય ૫ સાતમો માંગો કહ્યો

દ્રવ્ય ૫ સાત માંગા નિત્ય તથા અનિત્યપણમા હગાટે છે ૧ સ્યાત્ નિત્ય ૨ સ્યાત્ અનિત્ય ૩ સ્યાત્ નિત્ય ૪ સ્યાત્ નિત્ય ૫

સ્વાત્ અવકબ્યં ૫ સ્વાત્ નિત્ય અવકબ્યં ૬ સ્વાત્ અનિત્ય અવકબ્ય ૭ સ્વાત્ નિત્યાનિત્ય યુગપત્ અવકબ્યં ૫મજ પક
 ઝર્નકના સાત ભોગા કહેવા તથા ગુણપર્યાયર્મા પળ કહેવા કેમકે સિદ્ધ મધ્યે નય નયી થોપણ સસમંગીવો સિદ્ધમાં છે

હયે સત્તા ઓલસ્યાયથાને ત્રિભંગીયો કહે છે ૧ મિથ્યાત્ય દયા તે ઘાષકદયા ૨ સમચિત્ત ગુણઠાણાથી માંડીને જયોગી
 કેયલી ગુણઠાણા સુધીસાષક દયા જાણથી ૩ સર્વકર્મથી રહિત તે સિદ્ધદયા ૧ જ્ઞાનનો જાણપણો તે જીયનો ગુણ ૨
 તેનો જ્ઞાતા તે જીય ૩ જ્ઞેય તે સર્વ દ્રવ્ય ૧ ધ્યાન તે જીયના સ્વરૂપનો ૨ તે ધ્યાનનો ધ્યાતાજીય ૩ જ્યેય આત્માનો
 સ્વરૂપ ૧ કર્ત્તા તે જીય ૨ કર્મતે એક મોષ ધીજો ઘન્ધ ૩ ક્રિયા તે એક સપર ધીજી આશ્રય ૧ કર્મ તે ચેતનાને કર્મ
 યંધના પરિણામ ૨ કર્મનું ફલ તે ચેતનાને જે કર્મ હવડયાનાપરિણામ ૩ જ્ઞાન ચેતના તે જીયનો સ્વગુણ તે આત્માના
 ઘ્રણ મેવ છે ૧ અજ્ઞાની જીય ધરીરાવિક પરવસ્તુને આત્મબુદ્ધિયે કરીમાને તે પહેલો ઘઠિરાત્મા ૨ જે ઘઠ સહિત જીય
 છે તે પળ નિર્થે સત્તાગુણ સિદ્ધ સમાન છે પટલે પોતાના જીયને સિદ્ધ સમાન કરી જ્યાંવે તે ધીજો ઘતર આત્મા જાણયો
 ૩ કર્મલપાથી કેયલ જ્ઞાનપામ્યા તે અરિહત તયા સિદ્ધ સર્વ પરમાત્મા જાણયા ૫ ત્રિભંગીનો વિચાર કષ્ટો પટલે ઝાઠ
 પશ્વનો વિચાર કષ્ટો

હયે એક દ્રવ્ય મધ્યે છ સામાન્ય ગુણ છે તે કહે છે પહેલો અસ્તિત્ય તે જે છ દ્રવ્ય જાપણા ગુણ પર્યાય પ્રવેશે કરી
 અસ્તિ છે તેમો ધર્મ અધર્મ આકાશ અને જીવ ૫ ચાર દ્રવ્યમાં ત્રિન દ્રવ્યનો અસંસ્થાતા પ્રવેશ મિલ્યા સ્પષ ધાય છે
 અને આકાશનો અનત પ્રવેશનો સંપ ધાય અને પુત્તલમાં સંપ ધવાની શકિ છે માટે ૫ પાંચ દ્રવ્ય અસ્તિકાય છે અને

છટ્ટો કાલ દ્રવ્યનો સમય કોઈ કોઈથી મિલતો નથી કેમકે એક સમય વિણસ્યા પછે થીજો સમય આવે છે માટે કાંઈ અસ્તિકાય નથી પણ દ્રવ્યમાં અસ્તિત્વ પળો કાળો

૨ યસ્તુત્ય ફેરતા યસ્તુપળો કહે છે તે દ્રવ્ય છપ્પ એકઠા એક ક્ષેત્ર મધ્યે રહ્યા છે એક આકાશ પ્રદેશમાં ધર્માસ્તિ કાયનો એક પ્રદેશ રહ્યો છે તથા અધર્માસ્તિકાયનો પણ એક પ્રદેશ રહ્યો છે અને જીવ અનતાના અનતા પ્રદેશ રહ્યા છે પુત્રલ પરમાણુ અનતા રહ્યા છે તે સર્વ પોતાની સત્તા લીધા થકા રહ્યા છે પણ કોઈ દ્રવ્ય કોઈ દ્રવ્ય સાથે મિલી જાતો નથી તે યસ્તુ પળો

૩ દ્રવ્યત્ય ફેરતાં દ્રવ્યપળો તે સર્વ દ્રવ્યપોતપોતાની ક્રિયા કરે એટલે ધર્માસ્તિકાયમાં ચલણગુણ તે સર્વ પ્રદેશ મધ્યે છે સદા કાલે પુત્રલ તથા સીયને ચલાયથા રૂપક્રિયા કરે છે જ્યાં કોઈ પુછે એ હોકાન્ત સિદ્ધક્ષેત્રમાં ધર્માસ્તિકાય છે તે સિદ્ધના સીયને ચલાયથાપળો કરતી નથી તે કેમ! તેને સ્પર્શ કરે છે જે સિદ્ધના જીવ અક્રિય છે માટે ચાલતા નથી પણ તે ક્ષેત્રમાં જે સૂક્ષ્મ નિગોદના જીવ તથા પુત્રલ છે તેને ધર્માસ્તિકાય ચલાવે છે માટે પોતાની ક્રિયા કરે છે તેમજ અધર્માસ્તિકાય જીવ તથા પુત્રલને સ્પર્શ રાસવાની ક્રિયા કરે છે તથા આકાશદ્રવ્ય તે સર્વ દ્રવ્યને અવગાહના રૂપકાર્ય કરે છે જ્યાં કોઈ પૂછે એ અલોકાકાશમાં તો થીજુ કોઈ દ્રવ્ય નથી તો અલોકાકાશ કયા દ્રવ્યને અવગાહ દાન માપે છે તેને સ્પર્શ કરે છે જે અલોકાકાશમાં અવગાહ કરવાની શક્તિ તો હોકાકાશ જેથીજ છે પરંતુ તિહાં

અવગાહનો વાન હેનાર દ્રવ્ય કોર નથી માટે અવગાહવાન કરતો નથી અને પુત્રલ દ્રવ્ય મિલવા વિસ્તારવારૂપ ક્રિયા કરે છે તથા ફાલદ્રવ્ય ધર્તનારૂપ ક્રિયા કરે છે અને જીવદ્રવ્ય જ્ઞાન લક્ષણ વપયોગરૂપ ક્રિયા કરે છે એમ સર્વ દ્રવ્ય પોતાને પરિણામી સ્વસંચાની ક્રિયા કરે છે એ દ્રવ્યત્યપણો કહ્યો

૪ પ્રમેયથ્ય કહેવા પ્રમેયપણો, જે છ દ્રવ્યમા પ્રમેયપણો છે તેનો પ્રમાણ કેયલી પોતાના જ્ઞાનથી કરે છે જે ધર્માસિ કાય તથા અધર્માસિકાય અને આકાશાસિકાય એકેક દ્રવ્ય છે અને જીવ દ્રવ્ય અનંતા છે તેહની ગણતિ કહે છે સંજી મનુષ્ય સંહ્યાતા છે અસંજી મનુષ્ય અસંહ્યાતા છે નારકી અસહ્યાતા છે દેવતા અસંહ્યાતા છે તિર્યંચ પચેન્દ્રી અસંહ્યાતા છે પેંદ્રી અસહ્યાતા છે સેન્દ્રી અસંહ્યાતા છે તે ધક્ષી પૃથ્વીકાય અસંહ્યાતા અપકાય અસંહ્યાતા તેચકાય અસંહ્યાતા ધાયુકાય અસંહ્યાતા પ્રત્યેક ઘનસ્પતિ જીવ અસહ્યાતા તે ધક્ષી સિદ્ધના જીવ અનતા તે ધક્ષી યાદર નિગોદના જીવ અનંત ગુણા પટલે યાદર નિગોદ તે કંઠમૂલ આદુ સૂરણ પ્રમુલ્ય પહને સુહને અગ્રભાગે અનંતા જીવ છે તે સિદ્ધના નીચથી અનંત ગુણા છે અને સૂક્ષ્મ નિગોદ સર્વથી અનંત ગુણા છે તે સૂક્ષ્મ નિગોદનો વિષ્વાર કહે છે બેટલા ઠોકાકાશના પ્રવેશ છે તેટલા ગોલા છે તે એકેક ગોલામા અસહ્યાતા નિગોદ છે નિગોદ શબ્દનો અર્થ એ છે જે અનંતા જીવનો પિંઠમૂત એક શરીર તેહને નિગોદ કહિયે તે એકેકી નિગોદ મધ્યે અનતા જીવ છે તે અતીત કાલના સર્વ સમય તથા અનાગતકાલના સર્વ સમય અને ધર્મમાન કાલનો એક સમય તેને મેલા કરી અનત ગુણા કરિયે પટલા એક નિગોદમાં જીવ છે પટલે અનતા જીવ છે એ સહારી જીવ એકેકાના અસંહ્યાતા પ્રવેશ છે અને એકેકા

પ્રદેશે અનંતિકર્મઘર્ગણા છાગી છે તે એકેક ઘર્ગણા મધ્યે અનંતા પુત્રલ પરમાણુ છે એમ અનંતા પરમાણુ સ્ત્રીઘસાયે લામ્યા છે તે ઘક્કી અનંત ગુણા પુત્રલ પરમાણું સ્ત્રીઘયી રહિત હુટા છે

ગોલાય અસસ્થિજ્ઞા, અસસ્થનિગોયઓ હવડ ગોલો । ઇક્ષિક્ષમ્મિ નિગોપ, અનંતજીવા મુળેયઘા ॥૧॥

અર્થ—લોકમાંહે અસસ્થાતા ગોલા છે એકેકા ગોલા મધ્યે અસંસ્થાતિ નિગોપ છે એકેક મિગોદમાં અનંતા જીવ છે સચરસસમહિઆ, કિર ઇગાણુપાણુમ્મિહુતિ સુહુમવા । સગતિસસયતિહુત્તર, પાણુ પુણ ઇગમુહત્તમિ ॥૧॥

અર્થ—નિગોવિયા જીવ તે મનુવ્યના એક સસાસમા સચર ૧૭ મય જ્ઞાનેરા કરે છે અને સસ્ત્રીસસો તિહુત્તેર ૨૭૭૩ શ્વાસોષ્ઠ્ઠાસ એક મુદ્ધર્ત્તમા યાય

પણસટ્ઠિસહસ્સ પળસય, છત્તિસા ઇગમુહુત્ત સુહુમવા । આવલિયાણ વો સય, છપન્ના યગસુહુમવે ॥ ૧ ॥

અર્થ—નિગોવના સ્ત્રીઘ એક મુદ્ધર્ત્તમા ૧૫૫૩૬ મય કરે અને નિગોવનો એક મય ૨૫૬ આયક્ષીનો છે હુલ્લક મયનો ૫ પ્રમાણ છે

અરિય અનંતાજીવા, જેહિં ન પત્તો તસાઇપરિણામો । ઉવજ્ઞંતિ ઘયતિ ય, પુળોવિ તસ્યેવ તસ્યેવ ॥ ૧ ॥

અર્થ—નિગોવમાં અનંતા સ્ત્રીઘ યહયા છે એ સ્ત્રીઘ ત્રસ પળો પહેલા ક્ષિયારે પામ્યા નથી અનંતો કાલ પૂર્વે ગયો અને અનંતો કાલ આદો પણ તે સ્ત્રીઘ ઘાર્યાર તિહાજ વપજે છે અને તિહાજ જવેછે એમ એક નિગોવમાં અનંતા સ્ત્રીઘ છે તે

નિગોદના વે મેવ છે. એક વ્યવહારારાશીનિગોદ અને ધીર્જો અવ્યવહારારાશીનિગોદ તેમાં જે વાદરપરકૈદ્રીપણો આવે
 ત્રસપણો પામીને પાછા નિગોદમાં આદ્ર પડ્યા છે તે નિગોદિયા જીવને વ્યવહાર રાશીયા કહિયે અને જે જીવ કોદ્રપણ
 કાહે નિગોદમાયી નિકલ્યા નથી તે જીવ અવ્યવહારારાશીયા કહિયે અને શ્રદ્ધા મનુવ્યવહારાથી જેટલા જીવ કર્મ સ્વપા
 ધીને એક સમયમાં મોક્ષ જાય છે તેટલા જીવ તેજ સમયે અવ્યવહાર રાશી સૂક્ષ્મ નિગોદમાંથી નિકલીને લષ્ટાં આવે છે
 જો દશજીવ મોક્ષજાયતો દશજીવ નિકલે કોદ્રક ઘેલાપ મન્યજીવ ઓછા નિકલે સો તે ઠેકાણે એક વે અમન્ય નિકલે
 પણ વ્યવહારારાશીમા જીવ કોદ્ર વધે ઘટે નહીં પણ નિગોદના અસંસ્થાતા હોકમાંહેલા ગોલાતે છ વિશીના આવ્યા
 પુત્રલને આહારાવિ પળે છે છે તે સકલ ગોલા કહેયાય અને લોકને અતના પ્રવેશે જે નિગોદના ગોલા રહ્યા છે તેને ત્રણ
 વિશીના આહારની ફરશના છે માટે ચિકલ ગોલા કહિયે એ સૂક્ષ્મ નિગોદમાં પાંચ થાવરના સૂક્ષ્મ જીવ તે સર્વ હોકમાં
 કાજલની પુલ્પહીનીપેરે મથ્યાથકા ગ્યાપી રહ્યા છે અને સાધારણપણો તે માત્ર એક ધનસ્યતિમાંજ છે પણ ચાર થાયરમા
 નથી એ સૂક્ષ્મ નિગોદમાં અનંતુ બુલ છે તેનું ચદાહરણ કહે છે સાતમી નરકનુ આવવ્ય તેત્રીસ સાગરોપમનું છે તેત્રીસ
 સાગરોપમના જેટલા સમય થાય તેટલા ધલત સાતમી નરકમાં તલકુટો તેત્રીસ સાગરોપમને આયુરે કોદ્રક જીવ ત્રપજે
 તેટલા ભપમાં જેટલુ છેવન મેવનનું બુલ થાય તે સર્વ એકનું કારિયે તેથી અનંતગુણું બુલ નિગોદના જીવ એક સમ
 યમાં મોગધ છે હદ્યાન્ત જેમ કોદ્રક મનુવ્યને સાદા ત્રણ ક્રોઠ લોઠાની સુદને અપ્રિયી તપાવીને કોદ્રક વેયતા સમકાલે
 થોમે તેને જે વેદના થાય તેથી અનંત ગુણી વેદના નિગોદ મર્યે છે અને મન્ય જીવને નિગોવનું કારણ તે અજ્ઞાન દશા

છે માટે તેહનો ત્યાગ કરો એ નિગોદનો વિષાર કહ્યો એ સર્વ પ્રમેયનો પ્રમાતા આત્મા પોતાના જ્ઞાન ગુણે કરી પ્રમેયનો પ્રમાણ કરે એ પ્રમેયત્વ પણો કહ્યો

૫ સત્યપણો તે છ દ્રવ્ય એક સમયમા સપ્તએ વિણશે છે અને સ્થિરપણે છે સત્પાદ વ્યય ધ્રુવપણો તેહિજ સત્પણો (સત્પાદ વ્યયઘ્રુવયુકં સત્) इति तत्पार्यं वचनात् તે ચિસ્તારથી કહિ વેસારે છે એ ધર્માસ્તિકાચના અસસ્થાતા પ્રદેશ છે તિહા ક પ્રદેશમાં અગુરુલુપુ અસસ્થાતો છે અને ધીજા પ્રદેશમાં અનંતો અગુરુલુપુ છે ત્રીજા પ્રવેશમા અસસ્થાતો અગુરુ પુ છે એમ અસસ્થાતા પ્રદેશમાં અગુરુલુપુ પર્યાય ઘટતો યઘતો રહે છે તે અગુરુલુપુ પર્યાય ચલ છે તે એ પ્રવેશમાં અસસ્થાતો છે તે પ્રદેશમાં અનંતો યાય છે અને અનંતાને ઠેકાણે અસસ્થાતો યાય છે એમ લોકપ્રમાણ અસસ્થાત પ્રદેશમાં સરીલો સમકાલે અગુરુ લુપુ પર્યાય ફિરે છે તે એ પ્રવેશમાં અસસ્થાતો ફિટીને અનંતો યાય છે તે પ્રવેશમાં અસસ્થાતપણાનો ચિનાશ છે અને અનંત પણાનો સપ્તઓ છે અને અગુરુલુપુ પણે ગુણ ધ્રુવ છે એમ સપ્તઓ વિણસવો અને ધ્રુવ એ ત્રણે પરિણામ છે

અચર્માસ્તિકાચમાં પણ એ ત્રણે પરિણામ અસસ્થાત પ્રવેશે સદા સમય સમયમાં પરિણામી રહ્યા છે તેમાં પણ સપ્તએ વિણશે અને ચિરરહે છે એમ માકાશના અનતા પ્રવેશમા પણ એક સમયે ત્રણ પરિણામ પરિણમે છે અને જીવના અસસ્થાતા પ્રદેશ છે તે મધ્યે પણ સપ્તએ વિણશે ચિર રહે તયા પુત્તલ પરમાણુમા પણ સમય સમય યાય છે અને કાલનો વર્ષમાન સમય ફિટીને અતીત કાલ યાય છે તો તે સમયમાં વર્ષમાનપણાનો ચિનાશ છે અને અતીસપણાનો સપ્તઓ છે

કાલ પળે ધ્રુવ છે ૫ સ્થૂલ ઘકી સ્વાદ બ્યય ધ્રુવપણો કષ્ટો અને વસ્તુગતે મૂલપણે જ્ઞેયને પલટયે જ્ઞાનનો પળ તે માસન પળે પરિણમથો ઘાય તે પૂર્વ પર્યાયના માસનનો બ્યય અને અભિનવ જ્ઞેયના પર્યાય માસનનો સ્વાદ તથા જ્ઞાન પળાનો ધ્રુવ ૫ રીતે સર્વ ગુણના ધર્મની પ્રવૃત્તિરૂપ પર્યાયનો સ્વાદ બ્યય શ્રીસિદ્ધ મગવન્તમાં પળ થઈ રણો છે ૫મજ્ઞ ધર્માસ્તિકાપના પ્રદેશો જે લેત્રગત અસંખ્યાતા પુમ્નલ તથા જીયને પહેલે સમય ચલણ સહાયી પળો પરિણમતો હતો અને યીજે સમય અનન્ત પરમાણું તથા અનન્તા જીવ પ્રદેશને ચલણ સહાયી થયો તેવારે અસંખ્યાતા ચલણ સહાયનો બ્યય અને અનંતા ચલણ સહાયનો સ્વપ્નયો અને ગુણપળે છુદ્ધ ૫મ ધર્મદ્રવ્ય મધ્યે સ્વાદ બ્યય થયી રણો છે તેમજ અધર્મા વિક દ્રવ્યને વિષે ૫ળ માયથુ તથા યલી કાર્ય પળે સ્વાદ બ્યય તથા અગુરુલધુના ચલણનો સ્વાદ બ્યય પંચા સ્તિકાર્યને વિષ કહેયુ તથા કાલ દ્રવ્ય તે સ્વરૂપ સર્વ સ્વપ્નારથીજ કહેવું ૫ રીતે સર્વ દ્રવ્યમાં સત્ પળો છે જો અગુરુ લધુનો મેદ ન થાય તો પછે પ્રદેશનો માંહોમાંહે મેદ કહેયો થાય તે માટે અગુરુલધુનો મેદ સર્વમાં છે અને જેનો સ્વાદ બ્યય રૂપ સત્પળો ૫ક છે તે દ્રવ્ય ૫ક છે તથા જેનો સ્વાદ બ્યય સત્પળો જૂલો તે દ્રવ્ય ૫ળ જૂલો છે ૫ટલે સત્ ફેહલાં સત્પળો કષ્ટો

૫ અગુરુલધુત્ય પળો કહે છે જે દ્રવ્યનો અગુરુલધુ પર્યાય છે તે છ પ્રકારની હાનિ વૃદ્ધિકરે તેમા છ પ્રકારની વૃદ્ધિ છે ૧ અનન્ત માગવૃદ્ધિ ૨ અસંખ્યાત માગવૃદ્ધિ ૩ સંખ્યાત માગવૃદ્ધિ ૪ સંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિ ૫ અસંખ્યાત ગુણવૃદ્ધિ ૬ અનંત ગુણવૃદ્ધિ ૭ હ પ્રકારની હાની કહે છે ૧ અનંત માગહાનિ ૨ અસંખ્યાત માગહાનિ ૩ સંખ્યાત માગહાનિ ૪

સંસ્થાત ગુણહાનિ ૫ અસહ્યાત ગુણહાનિ ૬ અનત ગુણહાનિ ૭ રીતે છ પ્રકારની વૃદ્ધિ તથા છ પ્રકારની હાનિ તે સર્વ દ્રવ્યમાં સદા સમય સમય ધર્મી રહી છે વૃદ્ધિ તે સ્વપક્ષો અને હાનિ તે વ્યય કાર્યો પ અગુરુલુધુ પળો કબ્જો નહીં ગુરુ તથા નહીં ઠપુ તે અગુરુલુધુ સ્વભાવ કાર્યો પ સર્વ દ્રવ્ય મધ્યે છે તે શ્રીમગયતીસૂત્રે “સમદમા સવગુણા સવપપસા સવ પક્ષયા સપક્ષા અગુરુલુધુઆપ” અગુરુલુધુ સ્વભાવને માધરણ નથી તથા આત્મા મધ્યે જે અગુરુલુધુ ગુણ તે આત્માના સર્વ પ્રયેરો ધ્યાયક ભાષ ધર્યે સર્વ ગુણ સામાન્ય પળે પરિણમે પળ અધિકા ઓછા પરિણમે નહીં તે અગુરુલુધુગુણનુ પ્રવર્તન આણંતુ તે અગુરુલુધુ ગુણને ગોચકર્મ રોકે છે પ અગુરુલુધુ સ્વભાવ તે સર્વ દ્રવ્યમાં છે

હવે ગુણની ભાવના કહે છે તિહાં જેટલા છપ દ્રવ્યમાં સરીલા ગુણ છે તે સામાન્ય ગુણ કાર્યો અને જે ગુણ પક દ્રવ્યમાં છે અને શીજા દ્રવ્યમાં નથી તે વિશેષ ગુણ કાર્યો જે ગુણ કોઈક દ્રવ્યમાં છે અને કોઈક દ્રવ્યમાં નથી તે સાધારણ અસાધારણ ગુણ કાર્યો પમ પ છ દ્રવ્યમા અનત ગુણ અનન્ત પર્યાય અનન્ત સ્વભાવ સદા શાશ્વતા છે જેમ શ્રીકેવલી ભગવતે પકપ્યા તે સર્વ એરીતે છે તેરીતે સદ્ગુણા પૂર્વક યથાર્થ સ્વપયોગથી શુભજ્ઞાનાવિક્રમી યથાર્થ પળે આણયા સદ્ગુણા પ નિર્ઘે જ્ઞાન તે મોક્ષનું કારણ છે જે જીવ જ્ઞાન પામ્યો તે જીવ ધિરવિ કરે છે તે ધારિત્ર કાર્યો જ્ઞાનનું ફલ ધિરવિપળો છે તે મોક્ષનું તત્કાલ કારણ છે

હવે નિર્ઘેધારિત્ર અને મ્યવહાર ધારિત્રનો ધિષાર કહે છે તેમાં પ્રથમ વ્યવહાર ધારિત્ર તે જે પ્રાણાતિપાત વિરમણ પ્રમુલ પત્તમશાત્રતરૂપ તે સર્વધિરવિ કાર્યો અને સ્પુલ પ્રાણાતિપાત વિરમણપ્રતાયિક કાર્યકના વાસ્તવ તે દેશધિરવિ

ચારિત્ર જાણવું પર બ્યવહાર ચારિત્ર સુલભું કારણ છે પથી કરણીરૂપ શ્રાયકના ધારવ્રત અને યતિનાં પાંચ મહાવ્રત તે અમ્યને પળ આયે તેથી વેયતાની ગતિ પામે પણ સકામ નિર્જરાનું કારણ ન થાય ઇહાં કોઈ પૂછેકે મોક્ષનું કારણ નથી તો પટલું કટ ધાયાસ્તે કરિયે તેને સત્તર એ ત્યાગ યુક્તી નિર્ધે જ્ઞાનસહિત ચારિત્ર તે મોક્ષનું કારણ છે માટે નિર્ધે ચારિત્ર સહિત બ્યવહાર ચારિત્ર પાછવું તે નિર્ધે ચારિત્ર કહે છે ધરીર ઇન્દ્રિય વિપય કપાય યોગ પર ધસ્તુ જાણી છાંહ્યા તથા આહાર તે પુત્રલ ધસ્તુ જાણી છાંહ્યો આત્મા અણાહારી છે તે માટે મુક્તને આહાર કરવો ઘટે નહી આહાર તે પુત્રલ છે આત્મા અપુત્રલી છે તે માટે ત્યાગ કરવો તદ્રૂપ એ સપ તે સપ નિર્ધે ચારિત્રમાં જાણવું ચારિત્ર કહેતા ધંચલતા રહિત ચિરતાના પરિણામ અને આત્મસ્વરૂપને વિષે પદ્મવ્યતે રમણ તન્મયતા સ્વરૂપ વિશ્રાંતિ તલ્લાનુમય તે ચારિત્ર કહિયે તે ચારિત્રના વ મેવ છે એક વેદચિરિતિ ધીજો સર્વ ચિરિતિ તિહાં વેદ ચિરિતિ કહેતા શ્રાયકના ધારવ્રત નિર્ધે સપા બ્યવહારથી કહે છે

૧ પ્રાણાતિપાત ચિરમણ વ્રત તે પરજીવને આપણા જીવસરીસો જાણી સર્વ જીવની રક્ષા કરે તે બ્યવહાર વ્યા થયી માટે બ્યવહાર પ્રાણાતિપાતચિરમણ વ્રત જાણવું અને એ આપણો જીવ કર્મવશપર્યો યુક્તી થાય છે તે આપણા જીવને કર્મધંધનથી મુકાવવું અને આત્મગુણ રક્ષા કરી ગુણવૃદ્ધિ કરવી તે સ્વદયા ધંધેતુ પરિણતિ નિયારી સ્વરૂપગુણને પ્રગટવે કરવા જે ગુણ પ્રગટ થયો તે રાલ્લવો પટલે જ્ઞાને કરી મિથ્યાત્વ ટાલી આપણા જીવને નિર્મલ કરે તે નિર્ધેથી પ્રાણાતિપાત ચિરમણ વ્રત કહિયે

૨ મૃપાઘાદ ચિરમજાત કહે છે શુદ્ધ ઘષ્ટન વિલકુલ લોભ્યું નહીં તે બ્યવહાર મૃપાઘાદ ચિરમજાત અને જે પર પુત્ર લાદિક વસ્તુને આપણી કહેવી તે મૃપાઘાદ યષ્ટન છે અને શીલને અઝીવ કહે તથા અઝીવને ઝીવ કહે ક્રિયાદિક અજ્ઞાન ભાવ તે સર્વે નિષ્ઠે મૃપાઘાદ છે અથવા સિદ્ધાન્તના અર્થ સ્પોટા કહે ૫ મૃપાઘાદ જેને છોલ્યો તે નિષ્ઠે મૃપાઘાદ ચિરમજાત કહિયે પટલે વીજા અવસાદાનાદિક પ્રત જો માંજે સો તેનો માત્ર ચારિત્ર મંગ થાય પણ જ્ઞાન દર્શનનો મંગ ન થાય અને જેને નિષ્ઠે મૃપાઘાદનો મંગ કસ્યો તેને સમકેસ તથા જ્ઞાન અને ચારિત્ર ૫ ઘણેનો મંગ કસ્યો તથા આગમમા ૫મ કસુ છે જે એક સાધુયે ષોયો પ્રત મંગ કસ્યો અને એક સાધુયે વીજો મૃપાઘાદ પ્રત મંગ કસ્યો તો જેને ષોયો પ્રત મંગ કસ્યો તે આલોચણ હેર શુદ્ધ થાય પણ જે સિદ્ધાન્તના અર્થનો મૃપા સપવેશ આપે તે આલોચણ હીલે પણ શુદ્ધ થાય નહીં

૩ અવસાદાન ચિરમજાત કહે છે જે પારકુ ધન વસ્તુ શુપાલે ષોરી કરે ઠગવાજી કરી હીચે તે ષોરી છે પટલે પારકી વસ્તુ ઘણીના વિધા વિના લેવી નહીં ૫ બ્યવહારવી અવસાદાન ચિરમજાત પ્રત જાણવું અને જે પાચ ટ્રિપિયાના ત્રેલીસ વિપય આઠ કર્મ ધર્મણા ક્રિયાદિક પરવસ્તુ લેવી નહીં તથા તેની ઘાંછા ન કરવી તે આત્માને અપ્રાપ્ત છે માટે તે નિષ્ઠેથી અવસાદાન ચિરમજાત પ્રત કહિયે જ્યાં કોઈ પૂછે જે વિપયની અને કર્મની ઘાંછા કોણ કરે છે તેને લક્ષર જે પુણ્યને લેવા યોગ્ય છે તે ઝીવ કર્મની ઘાંછા કરે છે જે પુણ્યના ૪૨ મેદ છે તે ચાર કર્મની શુભ પ્રકૃતિ છે પટલે જે બ્યવહાર અવસાદાન સો નથી હેતા પણ અતરગ પુણ્યવિકની ઘાંછા છે તેને નિષ્ઠે અવસાદાન લાગે છે

૪ મેપુન ચિરમણ પ્રત કહે છે એ પુરુષ પરત્વીનો પરિહાર કરે તથા જે સ્ત્રી પરપુરુષનો પરિહાર કરે શ્રદ્ધા સાધુને સ્ત્રીનો સર્વંયા ત્યાગ છે અને ગૃહસ્યને પરણેલી સ્ત્રી મોકલી છે પરત્વીનો પદ્મલાગ છે તે સ્યવહારથી મેપુનનું ચિરમણ કહિયે અને જે વિપવના અભિલાષનું તથા મમતા તુગ્ગાનો ત્યાગ પરમાથ યર્ણાદિક પરદ્રબ્યના સ્વામિસ્થાદિક તેનો અમોગી પળો આત્મા સ્વગુણ જ્ઞાનાદિકનો મોગી છે અને એ પુમ્મહસંઘ તે અનતા જીવની પટછે તેને કેમ મોગવે પ રીતે ત્યાગ તે નિર્બંધી મેપુન ચિરમણ કહિયે જેને ષાઘ્ર વિપય છોડ્યો છે અને અતરંગ હાલષ છૂટી નથી તો વેહને તે મેપુનના કર્મ હાગે છે

૫ પરિમ્મહ પરિમાણપ્રત કહે છે પરિમ્મહ ધન-ધાન્ય--દાસદાસી-ઔપદ-ઝમીન-વસ્ત્ર-આમરણનો ત્યાગ તેમા સાધુને તો સર્વંયા પરિમ્મહનો ત્યાગ છે તથા શ્રાવકને શ્ચ્છા પરિમાણ છે જેટલી શ્ચ્છા હોય તેટલો પરિમ્મહ મોકલો રાસે ધીઝાની પ્રતી કરે એ સ્યવહારથી કહ્યો અને જે કર્મ રાગદ્વેષ અજ્ઞાનદ્રબ્ય જ્ઞાનાપરણી પ્રમુક્ષ આઠ કર્મ અને શરીર શ્ચ્ચિદ્ર્યનો પરિહાર પટલે કર્મને પરિમ્મહ જાણી છાઢ્યો તે નિર્બંધી પરિમ્મહનો ત્યાગ પટલે પરવસ્તુની મૂર્છાં છાઢ્યી જેને મૂર્છાં છોઢિ તેને પરિમ્મહ છોડ્યોએ છે એમ જાણવુ

૬ વિશિષ્ટિપરિમાણ પ્રત કહે છે તિહાં તિરછિ ચાર વિશી પાંચમી અથો છટ્ટી ઝર્થ્ય એ છવિદીશીના સ્ત્રેત્રનો માન કરી મોકલો રાસે તે સ્યવહારથી વિશી પરિમાણ કહિયે અને ચાર ગતિમા મટકવુ તે કર્મનું ફલ છે એમ જાણી તેથી હદા સીનપળો અને સિદ્ધ મવસ્યાશું સપાલેય પળો તે નિર્બંધિવિશિષ્ટિપરિમાણ પ્રત કહિયે

૭ મૌનોગોપમોગ પરિમાણ વ્રત કહે છે એ ઇકવાર મોગવધું તે મોગ અને એ ઘારંયાર મોગવધું તે ઇપમોગ તેનો પરિમાણ કરે તે વ્યવહાર મોગોપમોગ વ્રત કહિયે અને એ વ્યવહારનયે કર્મનો કર્તા મોક્ષા સીધ છે અને નિશ્ચય નયે સો કર્મનો કર્તા કર્મ છે આત્મા અનાદિનો પરભાવ મોગી થયો છે તેથી પરમાધ્યાત્મક અને પરમાધરશ્વક ઘયો પટલે આત્માની જ્ઞાયકતા પ્રાહકતા મોગ્યતા રશ્વકતા ળીગઢે કર્તા પળો ળીગઢ્યો તેવારે પરભાવ કર્તા થયો તે પળ પરભાવ રંગીપળે આઠ કર્મનો કર્તા થયો છે પળ સત્તાયે તો સ્વભાવનો કર્તા છે પળ ઇપગરણ અવરાણા તેથી સ્વકાર્ય કરી શકતો નથી ળિમાયને કરે છે અજ્ઞાન પળે જીવનો ઇપયોગ મસ્યો છે પળ મ્યારો છે પોતાના જ્ઞાનાદિક ગુણનો કર્તા મોક્ષા છે ઇહયો સ્વરૂપાનુયાયી પરિણામ તે નિશ્ચે મોગોપમોગ વ્રત ત્યાગ જાળવો

૮ અનર્યદળ ળિરમણ વ્રત કહે છે એ કામ ળિના જીવનો ળધ કરવો પારકાયાસ્તે આરમ પ્રમુસ્ય કરવાની આજ્ઞા પ્રમુસ્ય આપથી તે વ્યવહાર અનર્ય દટ અને શુભાશુભ કર્મ તે મિશ્ચાત્વ અળિરતિ કપાય ળોગથી વધાય છે તેને જીવ આપણા કરી જાળે પ નિશ્ચેથી અનર્યદટ

૯ સામાયક વ્રત કહે છે એ મનયષનકાયાના આરમ ટાલીને તેને નિરારમપળે ળર્ચાયે તે વ્યવહાર સામાયક જાળ્યો અને એ જીવના જ્ઞાન ઢર્શન ળારિત્ર ગુણ ળિચારે સર્વ જીવના ગુણની સત્તા ઇક સમાન જાળી સર્વ જીવ સાથે સમતા પરિણામે વર્તે તે નિશ્ચેથી સમતારૂપ સામાયક કહિયે

૧૦ ઢેશાયગાશિક વ્રત કહે છે એ મન ળષન કાયાના ળોગ ઇક ઠોર કરી ઇકસ્થાનકે ઢેસી ળર્મ ળ્યાન કરયો તે

व्यवहार वैश्यापगाशिक कहिये अने जे सुत ज्ञाने करी छ द्रव्य ओखलीने पांच द्रव्यनो त्याग करे अने ज्ञानयंत जीयने ध्याये ते निखे वैश्यापगाशिक मत कहिये

११ पोशाह मत कहे छे जे चार पहोर अथवा आठ पहोर सुधी समता परिणामे सावध छोडी निरारमपणे सिद्धा यत्नानमां प्रवर्त्ते ते व्यवहार पोशाह कहिये अने पोताना जीवने ज्ञान ध्यानयी पोपीने पुट करे ते निखेयी पोशाह मत कहिये जीवने पोतानां स्वगुणे करी पोपीजे तेने पोशाह कहिये

१२ प्रतिपिसंधिभाग मत कहे छे जे पोशाहने पारणे अथवा सदा सर्वदा साधुने तथा जैनधर्मि श्रायकने पोतानी शक्तिप्रमाणे दान देबुं ते व्यवहार अतिधिसंधिभाग कहिये अने पोताना जीवने अथवा विष्यने ज्ञाननु दानते भणबुं भणायबुं सुणनु सुणाबुं ते निखेयी अतियि संधिभाग मत कहिये पटले श्रायकना पारमत कक्षां ते समकित्त सहित जे निखे तथा व्यवहारयी पार मतपारे ते जीवने पांचमें गुणगणे वैश्यापगाशिक श्रायक कहिये वैश्या केहतां वैश्याकी योडीशी प्रतिपणो छे माटे अने यतिने सर्वयी प्रतिपणो छे तेयी पांच महाप्रतज छे साधुने पांच महाप्रसमा सर्व मत आख्यां ए निखे त्यागरूप ज्ञान ध्यान संवर निर्ज्वरामा यिरताना परिणाम ते निखे चारित्रना एक चत्सर्ग बीजो अपवाद ए वेमार्ग छे तेमां जे बल्कूट तीक्ष्ण परिणाम ते चत्सर्ग अने जे चत्सर्ग राखवाने कारणरूप ते अपवाद-वर्कच ॥ “संधरणमि असुबं, दुन्नयि गिबुंवेतयाणडहियं ॥ मात्र विट्टतेण, ते वेयहियं असंधरणे” ॥१॥ पटले स्यां सुधी साधक मात्रने साधक नपरे त्यासुपी जेदनी नाकही ते आदरयो नही अने जो साधक परिणाम रहेता न वीठा तेयारे जेदनी ना ते

આપરે તેને અપવાદમાર્ગ કહિયે એ આત્મગુણ રાક્ષયને કરવો તે અપવાદ અને ગુણીને રાગે સક્ષિયે કરવો તે પ્રશસ્તિ
 પ એ હો સાધન છે અને એ ઉદ્દેશને અલસવાથી કરવું તે અભિચાર છે તથા સઘળો અને ઉદ્દેશ માટે અક્ષય પળે કરવું
 તે પશ્ચિદા છે તે મધ્યે અપવાદ માર્ગ તે પરિણામ દૃઢ રહે તેમ આજ્ઞાયે કરવો

હવે ચાર ધ્યાન કહે છે ૧ આર્તધ્યાન ૨ રોદ્રધ્યાન ૩ ધર્મધ્યાન ૪ શુદ્ધધ્યાન તિહાં પહેલા એ ધ્યાન તે અશુભ
 કહિયે અને પાછલા એ ધ્યાન તે શુદ્ધ છે તિહાં મનમાં આહટ યોદ્ધતા પરિણામ તે આર્તધ્યાન કહિયે તેના ચાર પાયા
 છે ૧ માત્ર મિત્ર સખન માતા પિતા સ્ત્રી પુત્ર ધન પ્રમુલ્હ શ્વેત ધસ્તુનો વિયોગ થયાથી વિલાપ કરે તે પહેલો શ્વેત વિયો
 ગનામા આર્તધ્યાન તથા ૨ અનિદ્ર એ મુંઝાં ઘુસ્તના કારણ પુસ્મન વરિદ્રીપણો તથા કુપુત્રાવિ મલયાથી મનમાં ઘુસ્ત
 ચિંતા ઉપલે તે અનિદ્ર સંયોગ નામ આર્તધ્યાન ૩ ઘરીરમાં રોગ ઉપના થકા ઘુસ્તકરે ચિંતાઘણી કરે તે રોગચિંતા
 નામા આર્તધ્યાન ૪ મનમાં આગલના વલતનો સોચ કરે એ આયર્ષમાં આકામ કરવું આવતા ઘર્ષમાં અમુક કામ કરવું
 હો અમુક હામ થશે અથવા દાન સ્ત્રીહ તપનું ફલ મળે એ આ મધમા તપ ક્ષીવો છે માટે આવશે મર્વે દંત્ર ધર્મ્ય
 ચિંતી પવવિ મહે પશ્ચી આગલા મધની ઘાંઠા છે તે અમ્મશોચ આર્તધ્યાનનો ઘોષોપાયો જાણવો ૫ આર્ષધ્યાનના ચાર
 મેદ કહ્યા ૫ તિર્યચ ગતિના કારણ છે ૫ ધ્યાનના પરિણામ તે પાંચમા અથવા છઠ્ઠા ગુણઠાણા સુધી હોય

૨ એ ક્ષોરપરિણામનું ચિંતયન તે રોદ્રધ્યાન તેના ચાર મેદ છે ૧ ક્ષીવ હિંસાકરીને હર્ષ પામે અથવા બીજો કોઈ હિંસા
 કરતો હોય તેને વેલ્લી સુશી ઘાય અથવા યુદ્ધની અનુમોષના કરે તે હિંસાનુભવે રોદ્રધ્યાન ૨ શુદ્ધ વોલિને મનમાં હર્ષ

पाने के जुओ में केवोणपटकेखव्यो मारा उडापयानी खयर कोइने पडी नही पको मृपाषाद रूप परिणाम ते मृपानु
 पंभी रौद्रध्यान १ बोरी करी अथवा टगाइ करी मनमा खुशी थाय के मारा जेबो सोयधर कोण छे हुं पारको माल
 लाव छु पको परिणाम ते बोरातुयंघि रौद्रध्यान ४ परिग्रह धन धान्य परिवार धणो घघवानी लालध होय ते धन
 अथवा कुटुम्बने माटे गंभे तेहुं पाप करे अथवा धणो परिग्रह मिथ्याधी अहंकार करे ते परिग्रह रक्षणानुबंधी रौद्रध्यान
 ५ रौद्रध्यानना चारमेद कथा ५ ध्यान नरकलति पमाइवानु कारण छे महाभयुभकर्मबंधनु कारण छे ५ पांषमा गुण-
 ठाणा सुधी छे अने छठे गुणठाणे पण एक हिसानुबंधी रौद्रध्यानना परिणाम कोइक जीयने होय

हवे धर्म ध्यान कहे छे जे स्वयंहर क्त्वाक्य कारण से धर्म तथा शुभज्ञान अने चारित्र ५ उपादानपणे साधन
 धर्म तथा रसप्रयी भेदपणे ते उपादान शुद्ध न्यवहार उत्सर्गाऽनुयायी छे अपवाद धर्म जाणयो अने अमेदरुद्धयी से
 साधन शुद्ध निबे नये उत्सर्ग धर्म अने (धम्मो वरु सुबाको) जे वस्तुनो उत्सर्गम शुद्ध परिणामिक स्वगुण प्रवृत्ति
 कर्षाधिक अनतानंद रूप सिंहायस्माये रह्यो ते पर्यभूत उत्सर्ग उपादान शुद्ध धर्म ते धर्मनुं मासन रमण एकाभतापणे
 चिंतन तन्मयतानो उपयोग एकल्यनो चिंतववो ते धर्म ध्यान कहिये तेना पाया चार छे ते कहे छे

१ आश्वाधिषपधर्मध्यान ते जे बीतराग वेधनी आश्वा साधी करी सर्दहे पटले भगवंते छ द्रव्यनुं स्वक्य नय प्रमाण
 निक्षेया सहित सिद्ध स्वरूप निगोद स्वरूप जेम कथा तेम सर्दहे बीतरागनी आश्वा नित्य अनित्य स्वाध्याय पणे निबे

વ્યયદાર પને માને સદહે તે પ્રાણ પ્રમાણે યથાર્થ ઉપયોગ માસન ધવો તેને હોઈ કરી તે ઉપયોગ મધ્યે નિરવાર, માસન રમણ પ્રતુભવતા પૃક્તા વ મય પળો તે આજ્ઞાવિષયધર્મધ્યાન કહિયે

૨ પ્રપાયવિષયધર્મધ્યાન તે જીવમાં અશુદ્ધપણે કર્મના યોગથી સંસારી અવસ્થામાં અનેક અપાય કેહતાં દૂષણ છે તે ગજ્ઞાન રાગ દ્વાર કપાય આશ્રય પ મારા નથી હુ પ્યષ્ઠી ન્યારો હુ હુ અનંતજ્ઞાન દર્શન ધારિત્ર યીર્વમયી શુદ્ધ, શુદ્ધ પ્રતિનામી પું અજ, અનાદિ, અનંત, અશ્વય, અધર, અનશ્વર, અષલ, અકલ, અમલ, અગમ્ય, અનમી, અરુચી, અક-
 મ્માં, અપપરુ, અનુદય, અનુદીરક, અયોગી, અમોગી, અરોગી, અમેદી, અહેવી, અસેવી, અકપાયી, અસલાહ, પ્રતેડી, અશરીરી, અગાહારી, અબ્યાધાપ, અનયગાહી, મગુરુલુપુપરિણામી, અતેત્રી, અપ્રાણી, અયોની, અસંસારી, મમર, અપર, અપરપર, અધ્યાપી, અનાશ્રિત, અકપ, મધિરુદ્ધ, અનાશ્રય, અલસ, અથોક્ત્રી, અસંગી, અનારક, લોકા
 છોક શાયક પ્યો શુદ્ધ ચિદાનંદ મારો જીવ છે પહ્યો પૃકામતાકુપ ધ્યાનતે અપાયવિષયધર્મધ્યાન જાણવો

૩ વિપાકવિષયધર્મધ્યાન કહે છે જે પહ્યો જીવ છે તે પળ કર્મ ઘસેં શુદ્ધી છે તે કર્મનો વિપાક ચિત્તવે સે જીવનો જ્ઞાનગુણ તે જ્ઞાનાપરળી કર્મે દાહ્યો છે અને દર્શનાવરળી કર્મે દર્શનગુણ દાહ્યો છે પમ આઠ કર્મે જીવના આઠગુણ દાહ્યા છે પટલે મા મંમારમાં મમતાં ધકાં જીવને જે સુસ્તુલ છે તે સર્વ કર્મના ક્ષીધાં છે માટે સુલ ઉપને રાષ્ટું નરી મને શુદ્ધ રૂપને દિલગીર ધરું નહી કર્મ સ્વરૂપની પ્રકૃતિ સ્થિતિ રસ અને પ્રવેશનો ઘંધ સ્વદય સ્વીરણા તથા સ્વા ગિતવપ્યાનુ પૃકામતા પરિણામ તે વિપાકવિષયધર્મધ્યાન

૪ સંસ્થાનવિષયધર્મધ્યાન કહે છે તે ષડવરણમાન લોકનું સ્વરૂપ વિષારે જે એ લોક તે ષડવરણ કુંઘો છે તે મધ્યે કાઢક અધિક સાત રાજ અથો લોક છે વિષમાં અદારસો યોજન મનુષ્ય છે ત્રિછો લોક છે તે રૂપર કાંઈક ક્રમો સાત રાજ કાર્ય લોક છે તેમા સર્વ વૈમાનિક વેયતા વસે છે અને કપરે સિદ્ધ શિલા સિદ્ધલેખ છે એ રીતે લોકનું પ્રમાણ છે એ લોકનું સંસ્થાન વૈશાલ છે અનતો કાલ આપણા જીવે સંસારમાં મમતાં સર્વ લોકને જન્મમરણ કરી ફરસો છે એ લોક સ્વરૂપ તથા લોકને વિષે વૈષ્ણવિકાચનું અવસ્થાન તથા પરિણમન દ્રવ્યમધ્યે ગુણ પર્યાયનું અવસ્થાન તેનો એ વૈષ્ણવતાયે તન્મયચિંતવણ પરિણામ વૈષ્ણવ એ ધ્યાન તે સંસ્થાનવિષયધર્મધ્યાન કહિયે એ ધર્મધ્યાનના ચાર પાયા કહ્યા એ ધર્મધ્યાન ધોયા ગુણઠાણાથી માંડીને સાતમા ગુણઠાણા સુધી છે

હવે શુદ્ધધ્યાન કહે છે શુદ્ધકેહતાં નિર્મલશુદ્ધ પરમાલંપન વિના આત્માના સ્વરૂપને તન્મય પળે ધ્યાવે વૈષ્ણવ ધ્યાન તેને શુદ્ધધ્યાન કહિયે તેના પાયા ચાર છે તે કહે છે

૧ વૃથક્ત્વચિત્તર્કસપ્રવિચાર તે વૃથક્ત્વ કેહતાં જીવથી અજીય જૂદા કરયા સ્વમાધ વિમાધ તેને જૂદા વૃથક્ત્વને વૈષ્ણવ કરવી સ્વરૂપને વિષે પણ દ્રવ્ય તથા પર્યાયનો વૃથક્ત્વને ધ્યાન કરી પર્યાય તે ગુણમા સંક્રમાવે અને ગુણ તે પર્યાયમાં સંક્રમણ કરે વૈષ્ણવે સ્વધર્મને વિષે ધર્માતર મેવ તે વૃથક્ત્વ કહિયે અને તેનો ચિત્તર્ક તે જે શુદ્ધધ્યાને સ્થિત વૈષ્ણવ વૈષ્ણવ અને સમવિચાર તે સવિકલ્પોપયોગ વૈષ્ણવ એક ચિંતક્યા પછિ ધીજો ચિંતક્યો તેને વિષાર કહિયે વૈષ્ણવ નિર્મલ વિકલ્પ

મહિા ગોઠાની ગણાને ડ્યાએ તે ટુપમસ્યપિતર્કમપ્રથિષાર વેહેલો પાયો ડ આઠમા ગુણ ઠાણાથી માંડી ડગ્યારમા ગુણ ઠાણા ગુપી છે

૨ ડરપરવિત્કમપ્રથિષાર નામા ધીગો પાયો કહે છે જે ગીચ આપણા ગુણ ડર્યાયની ડક્તાકરી ડ્યાએ તે આપી ઠીગ કે ઠીપના ગુણ ડવાય મને ઠીચતે ડકજ છે અને મહારો ઠીચ સિદ્ધસ્વરુપ ડકજ છે ડવો ડફત્ય સ્યરુપ તમય ડવે મનંગા આતમ ડર્મનો ડફત્યપણે ડ્યાન વિતર્ક કેહવાં શુવજ્ઞાનાયર્લથી ડણે અને અપ્રથિષાર કેહતાં ચિકત્ય રહિત ડ્યાન જ્ઞાનનો ગમપાંતરે કારણઠા વિના રત્નત્રપીનો ડક સમપી કારણ કાર્યતા ડણે જે ડ્યાન ઠીચ સપયોગની ડકા ડના તે ડરપરવિતર્ક મપ્રથિષાર આણયો ડ પાયો યારમા ગુણઠાણે ડ્યાવે ડ વેદુ ડાયમાં શુવજ્ઞાનાયર્લપની ડણો છે ડા મપરથિ મનપયય જ્ઞાનોપયોગે ડર્ષતો ઠીચ કોઢ ડ્યાન કરી મકે નથી ડ ડે જ્ઞાન ડરાનુયાયી છે માટે ડ ડ્યાનર્થી ડનપાતિયા ષાર કર્મ મપાયે નિર્મત્ત કેચલ જ્ઞાન ડામે વટે ષેરમે ગુણઠાણે ડ્યાનતરિકા ડણે છે તેરમાના ઠતે અને ષર ડમ ગુણઠાણે ડ ષ ડાયા ડ્યાવે

૩ ડુસ્મપ્રિયા ઠમવિપાતિ ડાયો કહે છે તે ડુસ્મ મન ષવન કાયાના યોગ ઠંઘે ડેલેડી કરણ કરી અયોગી ડાય તે ઢે મમતિપાતિ નિમત્તધીય અષલતાક્રુપરિણામ તે ડુસ્મપ્રિયાઅપ્રતિપાતિ ડ્યાન આણયું ડહાં સત્વાયે ડ૫ પ્રકૃતિ રથી ડની તેમાપ ૭૨ મપાયે

૫ ઠટિપ્રક્રિયાનુગૃપિ ડાયો કહે છે જે યોગ નિરુપ ઠીપાવટે ઠેર પ્રવૃતિ ડપાયે અકર્મા ડાય સર્વ પ્રિયાથી રહિત

ધાય છે સમુષ્ઠિન પ્રિયા નિવૃત્તિ શુદ્ધધ્યાન કારિયે પ ધ્યાન ધ્યાવતા રોપ વહ સ્વરણ રુપ ત્રિવ્યા વષ્ટેવે અવગાહના
 વેદમાનમાંથી ત્રીજો ભાગ ઘટાડે શરીર મૂકી ર્શાંપી સાત રાજ કપર હોકને અંતે જાય સિદ્ધ થાય ર્શા શિષ્ય પૂઠે
 જે વીવમે ગુણઠાને તો અમિય છે તો સાતરાજ વધો ગયો પ ક્રિયા કેમ કરે છે તેને વષર જે સિદ્ધ તો અક્રિય છે
 પંતુ પૂર્વ પ્રેરણાંયે તુતીને દુષ્ટાન્તે ળીયમાં ધાલયાનો ગુણ છે ધર્માસિકાય મધ્યે પ્રેરણા ગુણ છે તેથી કર્મ રહિત ળીય
 મોદેવતા હોકને અંતે જાયી રહે ર્શાં કોર પૂઠે જે આગલ વંધો અહોક છે તર્હાં ક્ષિત્ત જાતો નથી તેને વષર જે આગલ
 ધર્માસિકાય નથી માટે ન જાય વલી કોર પૂઠે જે તો અધોગતિયે અથવા તિરષ્ઠી ગતિયે કેમ નથી જાતો તેને વષર
 જે કર્મના મારથી રહિત ધયો હલુવો ધયો માટે નિવો તથા ઠાવો ળિમણો ન જાય કારણ કે પ્રેરક કોર નથી તયા
 કયે નથી કેમકે અક્રિય છે માટે તયા કોર પૂઠે જે સિદ્ધને કર્મ કેમ હાગતા નથી તેને કહે છે જે કર્મ તો ળીવને
 અજ્ઞાનથી તથા યોગથી હાગે છે તે સિદ્ધના ળીવને અજ્ઞાન તયા યોગ નથી માટે કર્મ હાગે નથી પ ધાર ધ્યાનનો
 અધિકાર વધો

હયે વલી વીજા ધાર ધ્યાન કહે છે ૧ પદસ્ય ૨ પિંડસ્ય ૩ રુપસ્ય ૪ રુપાતીત તેમાં પહેલુ પદસ્ય ધ્યાન કહે છે જે
 અરિહંતાદિક પાંચ પરમેષીના ગુણ સમારે તેનો વિષમાં ધ્યાન કરે તે પદસ્ય ધ્યાન ૨ પિંડસ્ય કેહતાં શરીરમા રહ્યો
 જે માપણો ળીય તેમાં અરિહત સિદ્ધ આચાર્ય વપાચાય અને સાધુપણાના ગુણ સર્થ છે પશ્યો જે ધ્યાન તે પિંડસ્ય ધ્યાન
 અથવા ગુણીના ગુણ મધ્યે પક્લ્યતા વપયોગ કરયો તે પિંડસ્ય ધ્યાન ૬ રુપમાં રહ્યો ધકો પળ પ મારો ળીય બરુપી

પ્રતીક ગુર્ણ છે તે વસ્તુનો સ્વરૂપ ગતિનિયમયથી ધયા પહે આત્માનું રૂપ ફક્તા પણો પદ્યો જે ધ્યાન તે રૂપસ્ય ધ્યાન
 વગ ધ્યાન પર્મ ધ્યાનમા ગણયા ૪ નિરંજન નિર્મલ મંરુપ ચિક્રસ્ય રહિત અમેદ પકચુદતા રૂપ ચિદાનંદ તસ્થામૃત
 પ્રાંગ પ્રગંદ મનંનગુણ વ્યાયરૂપ આત્મસ્થરૂપનું ધ્યાન તે રૂપાતીત ધ્યાન આણવુ ફદાં માર્ગેણા ગુણઠાણા નયમમાણ
 મહિમારિક શૂન ધયાપાપમ માવ મર્વ છાંટયા યોગ્ય થયા ફક સિદ્ધના મૂલ ગુણને વ્યાપે તે રૂપાતીત ધ્યાન આણવો
 પટને મોચનુ કારણ ૧ ધ્યાન તે કવુ

દર ખાતના શહે છે તેમાં પર્મ ધ્યાનની પાર માયના કહે છે ૧ મંત્રીમાયના તે સર્વ જીવ માયે મિત્રતાનો ભાવ
 ધિયત્વો મર્વનુ મર્વનું પાદનું પણ કોઈનું માદું ચિંતવવુ નહીં સય જીવ રૂપર દિત્વયુદ્ધિ રાત્વથી તે મંત્રીમાયના ૨ ગુણવંત
 મન શનારિક ગુણ રૂપરે રાગ તે પીની પ્રમોદમાયના ૩ જે પર્મવંત રૂપર રાગ અને મિથ્યાત્વી રૂપર રાગ નહીં તેમ
 દારા નહીં કારણ ફ દિમક રૂપરે પણ ઉચમ ચીયને કમ્પા રૂપને જો ઉપદેશ ધક્ષી સારામર્ગે આવે છો તેને શુદ્ધ
 મર્ગે પ્રાગ્વો કદાપિત-મર્ગે ન માર્યે લોષણ દેવ ન રાત્વયો કેમકે તે અજાણ છે એમ સમજવુ પદ્યા જે પરિણામ તે
 મત્વમ્પમાના ૪ મર્વ ચીયની વૈભાને મુસ્વજાણી દયા પાલે કોઈને હળે નહીં તથા લે દુશી અથવા પર્મહીન તેહના
 રૂપર દરના તેના મુગ ટાડ્યાનો પરિણામ તથા પર્મહીન જીવ વેલીને વ્યો ચિંતવે જે વ જીવ ચિયારે ધર્મ પામવો
 વધાર્ય આત્મમાપન પામી સમ્ય પમને ચિયારે અપલંબદે વ્યો પરિણામ તે પોથી કઠુના કેહતો દયામાયના વ ચાર
 ખાતના કથી

૧ હવે ધાર ભાયના કહે છે શરીર કુટુંબ ઘન પરિચાર સર્વ વિનાશી છે બીયનો મૂલ ધર્મ અધિનાશી છે એમ ચિંતિત
 વધું તે પહેલી અનિસ્થભાયના ૨ સંસારમા મરણસમયે જીયને શરણ રાક્ષનાર કોઈ નથી એક ધર્મનો શરણ છે વધું ચિંતિત
 વધું તે બીજી અશરણ ભાયના ૩ મારા જીવે સંસારમાં મમતા સર્વ ભયકીયા છે એ સંસારથી મુ કેવારે છુટીશ એ સંસાર
 મારો નથી મુ મોક્ષમયી છુ એમ ચિંતારવું તે ત્રીજી સંસારમાયના ૪ એ માહરો જીવ એકલો મોગયનો એમ ચિંતવવું તે
 વોથી એકરથભાયના ૫ આ સસારમાં કોઈ કોઈનો નથી એમ ચિંતવવું તે પાષ્ઠની અન્યત્વભાવના ૬ આ શરીર અપચિત્ર
 મહમૂત્રની સાણ છે રોગ-જરાથી મર્યો છે એ શરીરથી મુ ન્યારો છું એમ ચિંતવવો તે છઠ્ઠી અચુચિમાવના ૭ રાગદ્વેષ
 અજ્ઞાન મિથ્યાત્વ પ્રમુહ્ય સર્વ આશ્રવ છે એમ ચિંતવવું તે સાતમી આશ્રવભાયના ૮ જ્ઞાનધ્યાનમાં ઘસતો જીવ નવા કર્મ
 ઘાથે નથી તે આઠમી સંચરભાવના ૯ જ્ઞાનસહિત ક્રિયાતે નિર્જરારુ કારણ છે તે નયમી નિર્જરારુભાયના ૧૦ ઘવદરાલ
 છોકનુ સ્વરૂપ ચિંતારવું તે દશમી લોકસ્વરૂપમાયના ૧૧ સંસારમાં મમતા બીયને સમક્ષિત જ્ઞાનની પ્રાપ્તિ પામવી વુર્લમ
 છે અથવા સમક્ષિત પામ્યો પણ ચારિત્ર સર્વ ચિરતિ પરિણામ રૂપ ધર્મ પામવો વુર્લમ છે તે દગ્યારમી વોધવુર્લમભાયના

૧૨ ધર્મના કહેણદારગુરુ તથા શુદ્ધ આગમનું સામલણુ એથી ઓગયાદ મલચિ વોટ્ટેલી છે તે ધારમી ધર્મવુર્લમમા
 યના એટલે ધાર ભાયના કહી એ ચારિત્રનુ સ્વરૂપ સંપૂર્ણ કહુ

એવો સમક્ષિત સહિત જ્ઞાન ચારિત્ર તે મોક્ષનું કારણ છે તેના રૂપર મવ્ય પ્રાણીયે વિશેયે સચમ કરવો અને જો તેવું

ते ब्रह्म खेत्र फाल भायसहित जाणे नामादिचार निश्चेषा पोतानी बुद्धिची जाणे सव्हे वीतरागना भास्या भाव ते सत्य छे एषी सद्गुणा होय

२ उपवेसरुचि नयतत्य सथा छ ब्रह्मने गुरु उपवेशथी आणी सव्हे ते उपवेशरुचि

३ आझारुचि ते रागद्वेष मोह जेमना गया छे अज्ञान मित्यु छे एवथा भरिहतदेव तेणे जे भाशा कही तेने माने सव्हे ते आझारुचि

४ सूत्ररुचि १ आचारांग २ सुयगडांग ३ ठाणांग ४ समथायांग ५ भगवती ६ ज्ञाताधर्मकथा ७ उपासकव-
शांग ८ अंतगढदशांग ९ अनुचरोवयाइ दक्षांग १० प्रश्रव्याकरण ११ विपाक ए इग्यार अग तथा धारसुं अगद
टिपाद जेमां चतद पूर्वं हता ते हमणा विच्छेद गया छे तथा १ उपधाइ २ रायपशेणी ३ जीवामिगम ४ पक्षवणा
५ अनुद्धीपपन्नति ६ चंदपन्नति ७ सूरपन्नति ८ कपिआ ९ कप्यविबंसिया १० पुष्किआ ११ पुष्कजुलीआ १२ य
द्विविधा ए धार उपाग जाणया अने १ ब्यवहार सूत्र २ वशाश्रुतस्कंध ३ निशीय ५ महानिशीय
६ जीतकल्प ए छ छेदप्रंय तथा १ चौसरण २ संयारापयक्षा ३ तनुलवेयालिया ४ चदविजय ५ गणियिजय ६
देधिदपुओ ७ धीरपुओ ८ गन्जाचार ९ जौतिकरंड १० आयुःपद्धत्याण ए वशा पयक्षाना नाम तथा १ आव
इयक. २ दशवैकालिक ३ उचतराध्ययन ४ ओषनिर्णुकि ए चार मूलसूत्र सथा १ नंधि २ अनुयोगद्वार पपिकाहीस

आगम ते १ मूल सूत्र तथा २ निर्युक्ति ३ भाष्य ४ धूर्ति ५ टीका ६ पंथांगीना वचन से जीव माने तथा आगम सामलघानी तथा भणवानी जेने घणी चाहना होय ते सूत्ररुचि जाणवी

५ से जीव गुरुमुखयी एक पदनो अर्थ सामलीने अनेक पद सवहे ते वीधरुचि

६ अमिगमरुचि ते से सूत्र सिद्धान्त अर्थ सहित साणे अने अर्थ विचार सांमलवानी घणी चाहना होय ते अमिगमरुचि

७ से छ द्रव्यना गुण पर्यायने चार प्रमाण तथा सात नये करी जाणे ते विस्ताररुचि

८ क्रियारुचिते दर्शन ज्ञान चारित्र तप विनय सुमति गुधि वाद्य क्रिया सहित आत्मधर्म साये जेने रुचि घणी होय ते क्रियारुचि

९ संक्षेपरुचि ते से अर्थने ज्ञानमां बोडो कहे धके घणो जाणीने कुमतिमां पढे नही जिन मतमां प्रतीति माने ते संक्षेपरुचि

१० से पांच अस्त्रिकायनुं स्वस्म जाणे सुतज्ञाननो स्वभाव अतरंग सत्ता सवहे ते धर्मरुचि

हवे समकितना भाठ गुण कहे छे १ निरसका ते विनागम मध्ये सूस्म अर्थ कथा ते सांघा सवहे तेमां संवेद आणे नही तथा सात मययी पण हरे नही २ निरंकला गुण ते पुण्यरूप फलनी चाहना न राखे केमके जिहां इच्छा तिहां कर्मनो बंध छे माटे ३ निविचिगिच्छागुण ते शुभ अशुभ पुत्रल एकसरिला छे तेमां पुण्यना सवययी शुभयोग मिस्या

સુશી ઘડ અહકાર ન કરવો તથા પાપના સ્વયંથી શુભસયોગ મિત્ર્યા વિલગીર યોગું નહીં ધ અમૂઢ દૃષ્ટિ ગુણ તે જે આગમમાં સૂક્ષ્મ નિગોદના તથા છ દ્રવ્યના સૂક્ષ્મ વિચાર કઠ્યા છે તે સાંભલતો યકો મુજાય નહીં જે પોતાની ધારણામાં આવે તે ધારી રાલ્લે અને એ ધારણામાં ન આવે તેને સદ્દે ૫ સ્વયંદુરુણ એ પ આપણા જીવમાં અનલ જ્ઞાનાલિક ગુણ છે તે છુપાયવા નહીં શુદ્ધ સત્તા જેવી તેવી કહેવી રાગ દ્વેષ અજ્ઞાન તે કર્મની સ્વપાલિ છે જીવ પ સ્વપાથીયી ન્યારો છે ૬ સ્થિરિકરણ ગુણ તે આપણા પરિણામ જ્ઞાનમાં સ્થિર કરવા સ્વાગવવા નહીં અથવા કોઈ મન્ય પ્રાણી ધર્મથી પડતો હોય તેને સાદ્દેશ સ્વપદેશ આપી સ્થિરકરવો ૭ ઘાસસ્વત્પ્ત્વાગુણ તે જેની સાચે જ્ઞાન ધ્યાન તપ પશ્ચિક્મણો મેલો કરતા હોયે અને સદ્દેશના પળ પૂજા હોય તે આપણો સાધર્મિમાદ છે તેની મક્કિ કરવી અથવા સર્વ જીવના જ્ઞાનાલિ ગુણ આપણા સમાન છે માટે સર્વ જીવ ઉપર દયા કરવી અથવા વીજા જીવના પળ આપણા હુલ્ય જ્ઞાનાલિગુણ છે તે જીવને પોપયા યોગ્ય જ્ઞાનધ્યાનનો ઘણો અન્યાસ કરાવે ૮ પ્રમાલક ગુણ તે મગર્વતના ધર્મની પ્રમાલના મહિમા કરવી અથવા પોતાને જ્ઞાનાલિ ગુણયધારવા લાન શીલ તપ માય પૂજા કરી ઘણી મહિમા કરવી પ સમકિતના આઠ ગુણ

દ્વે સમકિતના પાચ મૂળ કહે છે ૧ સ્વપશમમાલમૂળ તે વિલેકી પ્રાણી પ્રાયે કપાય ન કરે અને ઓ કલ્યાલિત કપાય કરે સો પળ તરત મનને પાછોલાલે ૨ આસ્રામૂળ તે મગર્વતના લષન ઉપર શુદ્ધ પ્રતીત રાલ્લે મગર્વતે જેમ આગમમાં આજ્ઞા કરી તેમ સદ્દે ૩ લયામાલમૂળ તે સર્વ જીવ પોતાના સરીલા આણી દયા પાલવી ધ સંલેગમૂળ જે સંસારથી તથા ઘનથી શરીરથી સ્વાસી પળો રાલ્લયો ૫ નિરલેષમૂળ તે ઇન્દ્રિયના મુલ જીવે અનલી ધાર

ભોગવ્યા પણ તે દુઃખના કારણ છે. એક ચિદાનંદ મોક્ષમયી અર્થીત્રિય સુલને આપણા કરી જાણે. ૫. સમકેતના પાંચ મૂળ કષ્ટા.

હવે છ આયતન કહે છે. ૧. નિશ્ચયકુગુરુ તે મગ્યતના વચનના લોટા અર્થ કરે. લોટી પરુપણા કરે. ૨. વ્યવહારકુગુરુ તે યોગી સંન્યાસી વ્રાક્ષણ અને આધારહીન વેપધારી યતિ તેપણ છોટવા. ૩. નિશ્ચય કુદેવ તે જિણે સ્ત્રીવીતરાગવેચનું સ્વરૂપ નથી જાણ્યું. ૪. વ્યવહાર કુદેવ તે જે સરાગીવેચ કૃષ્ણ મહાવેચ સ્ત્રેત્રપાલ વેધી પિતર પ્રમુલ્લ તેપણ છોટવા. ૫. નિશ્ચેયી કુધર્મ તે જે એકાંત માર્ગ યાદાકરણી રૂપર રાખ્યા છે. અતરંગજ્ઞાન નથી ઓલસ્યો તે. ૬. વ્યવહાર કુધર્મ તે પારકા અન્ય દર્શનીના મત સર્વ છોટવા. ૭. કુદેવ કુગુરુ તથા કુધર્મને છોટી શુદ્ધવેધ ગુરુ તથા ધર્મ સદ્દે તે સમકિતની સદ્દહણા જાણથી સમકિતના શ્રદ્ધાન પદ્મવળા સૂત્રથી કહે છે.

પરમરથસયધો વા, સુદિદ્ઢુપરમરથસેવણાવાવિ । વાવલ્લ કુદસણવજ્ઞણાય સમત્તસદ્દહણા ॥ ૧ ॥

અર્થ—પરમાર્થ છ દ્રવ્ય નવતત્ત્વના ગુણ પર્યાય મોક્ષનુ સ્વરૂપ પડલે જે પરમાર્થ સૂક્ષ્મ અર્થ છે તે જાણવાનો ઘણો પરષ્વો કરે. અથવા જાણવાની ઘણી જાહના રાલ્લે અને સુદિદ્ઢુ કેહતા મહી રીતે દીઠા જાણ્યા છે. પરમાર્થ છ દ્રવ્ય મોક્ષ માર્ગ જેણે પદ્ધતિ ગુરૂની સેવા કરે. પડલે જ્ઞાની ગુરુ ધારવા અને વાક્યલ કેહતાં બિનમતિ યતિના નામ ધરાવીને જે સ્ત્રેત્રપાલ પ્રમુલ્લને સમકિત યિના માને. ૫. ગુરૂનો સંગ યજે અને કુદર્શની જે અન્યમતિ તેનો સગ ન કરે. ૬. વા જે પરિ જામ તે સમકિતની સદ્દહણા જાણથી

धिरया सात्रजाओ, कपायहीणा महद्वयधरावि । सम्मदिट्टिविहुणा, कयाविमुरक न पावति ॥ २ ॥
अर्थ—जे सायद्य आरंभयी धिरम्या छे क्रीधाधि चार कपाय जीत्या छे अने शुद्ध पांचमहाप्रतपाळे छे पण समकित
धिना छे ते जीव मोक्ष पांमे नहीं

हवे समकित ते सी यस्तु छे ते पिय गाया कह छे

नयभगपमाणेहिं, जो अप्पा सायवायभावेण । जाणइ मोक्खसरूव, सम्मदिट्टिउ सो नेओ ॥ ३ ॥

अर्थ—नय तथा भंगेकरी तथा प्रमाणेकरी जे पोताना आत्माने जाणे ओलखे स्वाद्वाय आठ पक्षे जाणे अने पम
स्वाद्वावपणे मोक्ष निकर्माड्यस्थाने पण जाणे परयस्तुने हेय जाणे जीयगुण उपादेय जाणे तेने समकिति जाणवा
हवे जीवस्वरूप ध्यान करयाने गाया कह्हे छे

अहमिको खलु सुद्धो, निम्ममओ नाण दसण समगो । तम्मि दिट्टिओ तच्चित्तो, सवे ए ए खय नेमि॥४॥

अर्थ—ज्ञानी जीव पहलुं ध्यान करे के हुं एकहुं परपुत्रलधी न्यारोछु निश्चय नयकरी शुद्ध अज्ञानमलयी न्यारोछु
निर्मलपुं ममतायी रहित छु ज्ञानदर्शनधी भस्वो छुं हुंमाराज्ञानस्वभाष सहित छुं हुंमारागुणमां रओ छुं भेवनागुणते
महारीसुष्ठा छे हुंमाराआत्मस्वरूपने ध्यावतो सर्व कर्म खय कठं छुं

નિરજગ નિકલ અચલ, દેવઅગાહ અણદ અણતં । વેયળલરકળ સિદ્ધસમ, પરમપ્પાસિવસત ॥ ૫ ॥

અર્થ—કર્મ ભક્ષનથી રહિત નિરજન હું ફલકરહિત છું અચલ કેહતા પોતાના સ્વરૂપથી ક્રિયારે ખલાયમાન થાતે નથી પરમદેવ છુ જેની આદિ નથી તથા જેનો અંત નથી ચેતના હક્ષણ છું સિદ્ધ સમાન છુ સંતસવા મયી છુ

જીવાદિસહજા, સમ્મત્ત પૂસ અધિગમો નાણ । તત્યેવ સયા રમણ, ચરણ પૂસો હુ મુરકપહો ॥ ૬ ॥

અર્થ—જીવાદિક હ બ્રહ્મ જેવા છે તેવા સહજવા તે સમક્ષિત અને હ બ્રહ્મ જેવા છે તેહવા ગુણપર્યાયસહિત જાણે તે જ્ઞાન જાણહુ તે હ બ્રહ્મ જાણીને અજીવને છાંટે અને જીવના સ્વગુણમા સ્થિર થયીને રમે તે વારિત્ર કહિયે પ જ્ઞાનવર્શન વારિત્ર શુદ્ધરક્ત્રયી તે મોહનો માર્ગ છે માટે પ જ્ઞાનવર્શન વારિત્રનો ઘણો યજ્ઞ કરવો પ રક્ત્રયી પામીને પ્રમાદ કરવો નથી તિહાં નિશ્ચય વ્યવહારની ગાથા

નિષ્ઠય મગ્ગો મુરકો, વધહારો પુદ્ધકારણો વુત્તો । પઢમો સવરૂવો, આસવહેટ તઓ વીઓ ॥ ૭ ॥

અર્થ—નિષ્ઠે નયનો માર્ગ જ્ઞાન સત્તારૂપ તે મોહનુ કારણ છે પટહે મોહ છે અને વ્યવહાર ક્રિયા નય તે પુણ્યનું કારણ કષ્ટો પહેલો નિશ્ચયનય સંધર છે અને નિશ્ચયસધર નિષ્ઠે નય તે પુદ્ધ છે જૂદા નથી વીઓ વ્યવહાર નય તે આશ્રય નવા કર્મ લેયાનો હેતુ છે પટહે શુભ પુણ્યકર્મનો આશ્રય યાય છે અને અશુભ વ્યવહારે અશુભ કર્મનો આશ્રય થાય છે કોઈ પૂઠે જે વ્યવહાર નય આશ્રયનુ કારણ છે તેો અમે વ્યવહાર નથી આદરસું પેક નિષ્ઠે માર્ગે આદરસું તેને સ્પષ્ટર કહે છે

जइ जिणमयं पवज्जह, ता मा ववहारनिच्छपसुयह । पकेणविणा तित्थ, छिज्जई अझेणओ तच्च ॥ ८ ॥

अर्थ—अहो भय्य प्राणी ! जोतमने खिनमतनी बाहना छे अने जो तुमे खिनमतने इच्छो छो मोक्षने बाहो छो तो निश्चै नय अने ब्ययहार नय छाडयो नही पट्ठे येहु नय मानओ ब्ययहार नय बाडओ अने निश्चय नय सवहजो जो तुमे ययहार नय बयायदो तो खिन शासतना तीर्यनो बच्छेद भासे जेणे ब्ययहार नय नमान्यो तेणे गुरु यदना खिन भक्ति तप पचसाण सर्व नमान्या एम जेणे आचार बयाव्यो तेणे निमित्त कारण बयाव्यो अने निमित्त कारण बिना एकलो उपादान कारण ते सिद्ध नयाय माटे निमित्त कारण रूप ब्ययहार नय अरु मानबुं अने जो एकलो ब्ययहार नय मानिये तो निश्चय नय ओलख्या बिना तत्वनु स्वरूप आण्युं नही माटे तत्यमार्ग अने मोक्षमार्ग ते निश्चय नय बिना पामिये नही अने तत्य ज्ञानबिना मोक्ष नयी पट्ठे निश्चयबिना ब्ययहार निःफल छे अने निश्चय सहित ब्ययहार ते प्रमाण छे तेनो हटान्त—जेम सोनाना आमूपणमां उपघातु अपया किणजो मिल्यो होय तेपण वंचा सोनाने माये छेइ राखिये छिये अने जो ते किणजो तथा सोनुं जूदु करिये तो सहु कोइ सोनाने छे पण कोइ किणजो जे फुघातु ते लीये नही तेम निश्चय नय सोना समान छे माटे निश्चय नय सहित सर्व भला छे अने निश्चय नय बिना सर्व अलेखे छे माटे आगममा निश्चय ब्ययहार रूप मोक्ष मार्ग छे ते कस्यो

यही धरीर ऊपर मोइ करे नही ते बिये

ચિહ્નો મિજો જાય સ્વઓ, જો ફહ મે હુ શરીર । અપ્પા માવે નિમ્મલો, જ પાવ મવતીર ॥ ૯ ॥

અર્થ—મમ્મ પ્રાણી એમ ચિંતવે એ પ શરીર છીઅઆઓ મેવીઅઓ ક્યયયજાઓ વિણશીજાઓ પ માહારું શરીર પુરછીક છે પરવરતુ છે તે એકવિવસેં મૂકવું છે માટે રે પ્રાણી ! હું આપણી આત્માને નિર્મલ પળે ધ્યાવ તો સંસારથી સરીને કાંઠો પામીશ

પહિજ અપ્પા સો પરમપ્પા, કમ્મ વિસેસોર્દેં જાયોજપ્પા ।

ફ્યમે દેવજ્જાજુસો પરમપ્પા, વહુ તુલ્લે અપ્પો અપ્પા ॥ ૧૦ ॥

અર્થ—અહો મમ્મ જીવ ! પહીઅ આપણો આત્મા છે તે શુઅ બ્રહ્મ છે પળ કર્મને યશ પચ્ચો અન્મમરણ કરે છે પળ પ શરીરમા એ જીવ છે તે વેવ છે પરમાત્મા છે માટે તુમે આપણો આત્મા ધ્યાવો તરણ તારણ ચિહ્નાજ પ આપણો આત્માજ છે એમ શ્રી હેમાચાર્યેં વીતરાગ સ્તોત્રમાં કહ્યો છે

ય પરાત્મા પર જ્યોતિ, પરમ પરમેષ્ઠિનામ્ । આદિત્યવર્ણોત્તમસ, પરસ્તાદામનતિ ય ॥ ૧ ॥

સર્વે યે નોદમૂલ્યત, સમૂલા ક્લેશપાવપા ફલ્યાદિ ॥

અર્થ—પરમાત્મા છે પરમગ્યોતિ છે પંચપરમેષ્ઠીથી પળ અધિક પૂચ્ય છે કેમ કે પંચપરમેષ્ઠીતો મોક્ષમાર્ગના વેલાદ નારા છે પળ મોક્ષમાં જવાવાહો તો આપણો જીવ છે અજ્ઞાનનો મિટાવનાર છે સર્વે કર્મ ક્લેશનો ક્ષપાયનાર છે વળે

આત્મા પ્યાવો પહિજ પરમ શ્રેયનું કારણ છે શુદ્ધ છે પરમ નિર્મલ છે પશ્યો આત્મા સ્વપાદેય જાણી સદ્દેહ અને ભ્રેયો પોતાથી નિરવાહ ધાય તેવો ત્યાગ વૈરાગ્ય પ્રવર્તે પટલે ઘન તે પરવસ્તુ જાણી સુપાત્રને વાન આપે અને ઇન્દ્રિયના ચિકાર તે કર્મ યજ્ઞના કારણ જાણી પરિહરે શીલ પાલે જે આહાર છે તે પુત્રલીક વસ્તુ છે શરીર પુટીનું કારણ છે અને શરીરપુટ ક્ષીણથી ઇન્દ્રિયોના ચિપ્પનો વોપ ધાય માટે તે પરસ્વભાવ છે અજ્ઞાન સંસારનું કારણ છે માટે આહારનો ત્યાગ કરવો તેને તપ કહિયે તથા પૂજા તે જે શ્રી અરિહંત દેવે મોક્ષમાર્ગ સ્વપદેશ્યો તે આપણે માટે આપણા તપ કારી છે તે તપકારીની યજ્ઞમાન સદ્વિષ મક્ષિ કરિયે માટે શ્રી અરિહંત દેવાધિદેવની પૂજા કરવી પદ વાનશીલ તપ પૂજા સર્વ જીવ મજીધનું સ્વરૂપ ઓલરૂયાયિના જે કરવું તે પુણ્યરૂપ ઇન્દ્રિય સુલ્લન કારણ છે અને જે જીવને સ્વપાદેય કરી વાંછા ચિન્તા કરણી કરે છે તે નિર્જરાનુ કારણ છે એમ દયાપણ શ્રીમગવતી સૂત્રમાં સાતાવેવની કર્મનું કારણ છે પટલે સમ્યક્ જ્ઞાનીને સર્વ કરણી તે નિર્જારારૂપ છે અને જ્ઞાન ચિન્તા સર્વ કરણી બંધનુ કારણ છે માટે જ્ઞાનનો ઘણો મહ્યાસ કરવો એ મગ્યતે સીલામણ ક્ષીણી છે

સ્વપા જ્ઞાનનુ કારણ શુભ જ્ઞાન છે તેનો ઘણો માય રાસજો શ્રીઠાળાંગમાં તથા સ્વપરાધ્યયનમાં તથા મગ્યતીમાં ૧ પાષના ૨ પૂછના ૩ પરત્વર્તના ૪ અનુમેક્ષા ૫ ધર્મકથા ૬ સિદ્ધાયા મળથા ગુણવાનું ફલ મોક્ષ કલ્પો છે સિદ્ધાયા કરવાથી જ્ઞાનાચરણી કર્મ સ્વપાદે કેમકે વાષનાથી તીર્થધર્મ પ્રવર્તે મહા નિર્જરા ધાય પૂછવાથી સૂત્ર તથા અર્થ શુદ્ધ ધાય મિધ્યાલ્ય મોહનીય સ્વપાદે તે જેમ જેમ ગર્થ વિચાર પૂછે તેમ તેમ સમક્ષિત નિર્મલ ધાય અને અનુમેક્ષા તે મર્ષ વિચારતા

सात धर्मनी स्थितिना रस पातला करे अनंतो ससार ल्पार्थीने पातलो करे तथा श्रुत ज्ञाननी आराधनायी अज्ञान मिटे पवा फल कक्षा छे

माटे बांधवा तथा भणवानो धणो उद्यम करवो केमके आज पांचमा आरामा कोइ केवली नयी तथा मनपर्यवशानी अने अविज्ञानी पण नयी एक मात्र श्रुतज्ञान तेहिज आगमनो आराधक छे यत—
कत्य अम्हारिसापाणी, तुसमादोस दूसिया । द्यायणा हाकह हुता, नहु तो जइ जिणागमो ॥ १ ॥

अर्थ—हे भगवंत ! अम सरिखा प्राणीनीशी गतिपाव जे अमें आ दुसम पंचमकालमां अवतार लीषो हा-इति खेदे, भमे अनाथ छु जो जिनराखना कहैलां आगम न होत तो आज सु यात पटले आज आगमनोज आघार छे माटे आगम अने आगमघर जे बहुश्रुत तेनो धणो विनय करवो आगममां विनयनु फल ते सामलवुं अने सांभलवानुं फल ज्ञान छे ज्ञाननुं फल मोक्ष छे एम आगम सांभली लेया योग्य लेजो अयोग्य छाडजो सदहणा शुद्ध राखजो सदहणा ते मोक्षनु मूल छे ए इन्द्रिय सुख तो आ जीवें अनंतीधार पाम्या छे पइवी आति-जन्म-योनी कोइ रही नयी जे आपणा जीवे नही करी होय ए जीयने ससारमा भमठा अनंता पुद्गल परार्थतन थया पण धर्मनी जोगयायी मली नही तो हवे मनुष्यमय आयककुठ निरोगशरीर पंचेंद्रि प्रगट बुद्धि निर्मल पटला संयोग मल्या यही श्रीबीतरागनी धाणीना केहेनारा शुद्ध गुस्नी जोगवाइ पामीने भहो भव्यलोको ! तुमे धर्मने विये विशेष उद्यम करजो फिरियी एबी जोगवाइ मिळबी बुर्लम छे माटे प्रमाद करशो नही ए शरीर धन कुटुंब आयुष्य सर्व बचल छे धण धण लीजे छे माटे पांच

સમયાય કારણ મત્ત્યા મોક્ષરૂપ કાર્ય સિદ્ધ કરવું તે પંચસમયાયના નામ કહે છે ૧ કાલ ૨ સ્વમાય ૩ નિયતિ ૪ પૂર્વ કૃત ૫ પુરુષાકાર ૬ પાંચ સમવાય માને તે સમક્ષિતિ છે એમાં પૈક સમવાય તત્ત્યાપે તેને મિષ્ટ્યાત્વી કહિયેં એમ સમ્મતિ સૂત્રમા કહ્યો છે

કાલો સહાવનિયદ્, પુષ્કય પુરિપકારણે પચ । સમવાય સમત્ત, પગ તે હોય મિષ્ટ્ત ॥ ૧ ॥

અર્થ—કાલ લઙ્ઘિયિના મોક્ષરૂપ કાર્ય સિદ્ધ થાય નહીં પટલે કાલ સર્વનું કારણ છે જે કાર્ય થવાનો હોય તે કાર્ય તે ફાલેં યાય ૬ કાલ સમવાય અગીકાર કરી કહ્યો ત્રહાં કોદ્ર પૂછે જે અમભ્ય જીવ મોક્ષ કેમ જતા નથી તેને ઉત્તર જે અમભ્યને કાલમલે પળ અમભ્યમા સ્વમાય નથી તેથી મોક્ષ જાય નહીં કેમકે કાલ સ્વમાય ૬ જે કારણ જોડાયે તેયારેં ફારિ પૂછ્યુ જે અમ્યજીયમા તો મોક્ષે જવાનો સ્વમાય છે તો સર્વ અમ્ય કેમ મોક્ષ જતા નથી તેને ઉત્તર જે નિયતિ કેહતાં નિશ્ચય સમક્ષિત ગુણ જાગે તેયારેં મોક્ષ પામે પટલે કાલ સ્વમાય નિયતિ ૬ ત્રણ કારણ માન્યા તેયારેં ફારિ પૂછ્યું જે સમક્ષિત આદિ કારણ તો શ્રેણીક રાબાને હતા તો મોક્ષ કેમ ન પયો તેને ઉત્તર જે પૂર્વકૃત કર્મ ઘળા હતા અથવા પુરુષાકાર જે ઉચ્ચમ કહ્યો નહીં ફરી પૂછ્યુ જે શાક્ષીમદ્ર પ્રમુલેં તો ઉચ્ચમ ઘળો ક્ષીધો તેનું ઉત્તર જે તેમના પૂર્વકૃત શુભકર્મ સત્ત્યા નહતા માટે પાંચ સમવાય મિત્ત્યા કાર્યની સિદ્ધિ થાય તેયારેં ફારિ પૂછ્યુ જે મરુદેયામાતાને તો ચાર કારણ મિત્ત્યા પળ પાંચમો પુરુષાકાર ઉચ્ચમ કાંદ્ર ક્ષીધો નહીં તેને ઉત્તર જે ક્ષપક શ્રેણી ચઢવાનો શુદ્ધ ધ્યાન રૂપ ઉચ્ચમ ક્ષીધો છે માટે પાંચ સમવાય મીત્ત્યા મોક્ષરૂપ કાર્ય સિદ્ધ થાય

એવારે કેયલજ્ઞાને કરી સર્વ દ્રવ્ય જેમ રહ્યા છે તેમ વેચે પટલે આકાશદ્રવ્ય લોકાલોક પ્રમાણ છે તેમાં અલોકમાં વીજુ દ્રવ્ય કોઈ નથી લોકાકાશના એકેક પ્રવેશે ધર્માસ્તિકાય અધર્માસ્તિકાયનો એકેક પ્રવેશ રહ્યો છે તથા અનતા ઝીવના અનતાપ્રવેશ રહ્યા છે અનતા પુત્રહ પરમાણુ રહ્યા છે કાલનો સમય સર્વત્ર વષ્ટે છે

દશે છ દ્રવ્યની ફરશના કહે છે ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રવેશે ધર્માસ્તિકાયના છ પ્રવેશ ફરસ્યા છે તે આથી રીતે કે ચાર વિદિના ચાર અને પાંચમો નીચે છઠ્ઠો ઊપર પ છ પ્રવેશ ફરસ્યા છે તથા એક મૂલ પોતે પ્રવેશ એમ સાત પ્રવેશનો સંપર્ષ છે અને ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રવેશને આકાશદ્રવ્ય તથા અધર્માસ્તિકાયના સાત સાત પ્રવેશ ફરશે છે તે એકમૂલના પ્રવેશને ધીજા દ્રવ્યનો મૂલનો પ્રવેશ ફરશે માટે સાત પ્રવેશની ફરશના છે અને ધર્માસ્તિકાયના એક પ્રવેશે ઝીવ પુત્રહના અનંતા પ્રવેશની ફરશના છે અને લોકને અંતે એ ધર્માસ્તિકાયના પ્રવેશ છે તેને આકાશની ફરશના તો છપ્પ વિદીની છે અને એકમૂલ પ્રવેશ સુદ્ધા સાત પ્રવેશની ફરશના છે અને ધીજા દ્રવ્યની ત્રણ વિદીની ફરશના છે એમ સર્વ દ્રવ્યની ફરશના છે અને આકાશથી ધર્મ અધર્મની અવગાહના સૂક્ષ્મ છે ધર્મ અધર્મ દ્રવ્યથી ઝીવની અવગાહના સૂક્ષ્મ છે ઝીવથી પુત્રહની અવગાહના સૂક્ષ્મ છે

એમ છ દ્રવ્યના ગુણ પર્યાય સામાન્ય સ્વભાવ ૧૧ છે અને વિશેષ સ્વભાવ ઘરા છે તે શ્રીકૈયલી ભગવંત જ્ઞાનથી જાણે દર્શનથી વેલે તે ઇગ્યાર સામાન્ય સ્વભાવ કહે છે ૧ અસ્તિ સ્વભાવ ૨ નાસ્તિ સ્વભાવ ૩ નિત્ય સ્વભાવ ૪ અનિત્ય સ્વભાવ ૫ એક સ્વભાવ ૬ અનેક સ્વભાવ ૭ મેદ સ્વભાવ ૮ અમેદ સ્વભાવ ૯ મઘ્ય સ્વભાવ ૧૦ અમઘ્ય સ્વભાવ ૧૧ પરમ

સ્વભાવ ૫ શુભ્યાર સામાન્ય સ્વભાવ સર્થ દ્રવ્યમા છે ૫ સામાન્ય સ્વભાવ ૬ વશ વિશેષ સ્વભાવ કહે
 છે ૧ ચેતન સ્વભાવ ૨ અચેતન સ્વભાવ ૩ મૂર્તિ સ્વભાવ ૪ અમૂર્તિ સ્વભાવ ૫ એકપ્રવેશ સ્વભાવ ૬ અનેકપ્રવેશ સ્વભાવ
 ૭ શુદ્ધ સ્વભાવ ૮ અશુદ્ધ સ્વભાવ ૯ વિભાવ સ્વભાવ ૧૦ સ્વચરિત સ્વભાવ ૧૧ વશ વિશેષ સ્વભાવ તે કોઈક દ્રવ્યમા
 કોઈક સ્વભાવ છે કોઈક દ્રવ્યમા કોઈક સ્વભાવ નથી ૧૨ જ્ઞાનથી જાણે પટલે સિદ્ધ મગધાન લોકાલોક સર્થ જ્ઞાનોપ
 યોગથી જાણી રહ્યા છે વર્ણનોપયોગથી દેહી રહ્યા છે પદ્મ અનત ગુણી અરૂપી સિદ્ધ ભગવાન છે તે સમાન પોતાની
 આત્માને જાણે સ્વપદ્મથી કરી ધ્યાય તે સમક્ષિત આગવો

॥ કોટા ॥

અટ કર્મ યન દાહકે, મણ સિદ્ધ જિનચર ૧ તા સમ જો અવ્યાગણે, વલે તાકો શ્વ ॥ ૧ ॥
 કર્મરોગ ઓપથસમી, જ્ઞાન સુધારસ શ્રુટિ ૧ શિવસુક્ષ્મામૃત સરોધરી, જય ૨ સમ્યક્ દૃષ્ટિ ॥ ૨ ॥
 પદ્મિજ સર્વગુરુ શીલ છે, પદ્મિજ શિવપુર માગ ૧ તેજો નિજ જ્ઞાનાભિગુણ, કરજો પરગુણ ત્યાગ ॥ ૩ ॥
 ગ્યાન યુદ્ધ સેવો મધિક, ધારિત્ર સમક્ષિત મૂલ ૧ અમર અગમ પદ ફલ લહો, જિનવર પવથી ફૂલ ॥ ૪ ॥
 સંયત સત્તર છિદ્રુચરે, મનશુદ્ધિ ફાગુણ માસ ૧ મોટે કોટ મરોટ મે, ધસતાં સુલ સોમાસ ॥ ૫ ॥
 સુવિદિત સરતર ગચ્છ સુધિર, યુગવર જિનધંદસુર ૧ પુણ્ય પ્રધાન પ્રધાન ગુણ, પાઠક ગુણે પંદુર ॥ ૬ ॥

तास शिष्य पाठक प्रथर, सुमत्तिसार गुणवत् । सफल शाला शायक गुणी, साधुराग असर्धत ॥ ७ ॥
 तासशिष्य पाठक विनुध, अिनमत परमतजाण । अधिककमल प्रतिबोधवा, राज सार गुरुभाण ॥ ८ ॥
 ग्यानधर्म पाठक प्रथर, शमदम गुणे अगाह । राजहंस गुरु गुरु शक्ति, सधुजगकरे सराह ॥ ९ ॥
 तासशिष्य आगमरुधि, जैनधर्मको दास । वेवधंद आनंदमें, कीनो प्रथ प्रकाश ॥ १० ॥
 आगमसारीद्वार पह, प्राकृत सस्कृत रूप । प्रथ कियो वेवधदमुनि, ग्यानानृत रस कूप ॥ ११ ॥
 कस्यो इहां सहाय अति, दुर्गदास शुभचिच । समजावन निज मित्रकुं, कीनो प्रथ पविच ॥ १२ ॥
 धर्ममित्र अिन धर्म रतन, भविजन समकित्तवत । शुद्ध अमरपद ओलखण, प्रथ कियो गुणवत् ॥ १३ ॥
 तत्वग्यानमय प्रथ सह, जोषे बाळा बोध । निजपर सच्चा सब लिखे, ओताळहे प्रबोध ॥ १४ ॥
 ताकारण वेवधद मुनि, कीनो आगम प्रथ । भणसे गुणसे जे भविक, लहेशे ते शिष्यपय ॥ १५ ॥
 कयक शुद्ध भोतारुषी, मिळजो पह संयोग । तत्वग्यान अत्रासहित, वली काय निरोग ॥ १६ ॥
 परमागमधुं राचजो, लहेसो परमानंद । धर्मराग गुरु धर्मसे, धरजो प सुसर्कद ॥ १७ ॥
 प्रथ कियो मनरंगसे सितपल फागुणमास । सोमवार अर तीज तिथि, सफल फली मन आस ॥ १८ ॥

॥ इति श्रीआगमसारीद्वार प्रथ समास ॥

श्रीपद्धितदेवचद्रजीकृत-आगमसार ।

(पत्र ६१ दूसरी पृष्ठकी पचमी पस्तिकी अशुद्धि है)

तथा क्षेत्र पृष्ठे जे प्रतिमानी पूजाते पहला आश्रय मध्ये लक्ष्मी छे वेने कहीये जे तुम्हे मृपाषाढ बोलो छो इहां प्रमख्याकरण सूत्रमां पाठ इम छे नही, तिहां पाठ छे ते । लिखीये छे अधिजाणओ परिजाणओ विसयहेच इमेहिं कारणेहिं किं ते करीसण पोक्खरणी याचि वप्पणी पूयसरतलाग चिति वेति खाति आरामविहार धूम पागारदार गोपूर अट्टाखगच-रीय सेतु संकम पासाय विकप्प भयण धर सरणि लेण आधण चैइय देवकुल चित्तसभाए या आयत णवसई मूमिघर मढयाणं कए ईंसति इहा पांच थावरना पांच आलावा छे तेहने छेठे कोहा माणा माया लोभा हिंसा रती इत्यादि पाठ छे ते जे जीव इंद्रीना सवादनने माटे चैइअ य कहेता प्रतिमाधिक करे ते आश्रय खाते ए पाठ छे पण पूजानो पाठ नयी ते मृगा ग्रामाटे बोलो छो तथा प्रमख्याकरणसूत्रे बीजे सयरद्वारे जे आलावो छे ते लिखीये छे स्वयमवचसि आयरीय उवग्ग्माय सेह छाहंणीए तयसि सीस मुहु कुल गणसंघ चैइंयठ्ठे निज्जरठी देयाधं अग्निस्त्रीओ दसविहंघुधिद करेई एआलावे आश्रज प्रमुख चैइंय केहेतां यिनप्रतिमानो देयावध करे निज्जराना

अर्थी अभिस्वीओ कहेता अस कीर्त्तिनी बांछा रहितथको बैयावस्य दशप्रकार तथा अनेक प्रकारनो करे इहां बेईय
 कहेतां प्रतिमा छे तो खोटी फलपना स्यामते करो छो तथा बीजे प्रभे पूछ्यो से अहिसाना ६० नाम कख्या छे अमओ
 सच्यस्सधि अनाघाओ चुक्स्थाय विधी पूया विमलप्यमा निम्मल करीधि एव माइणी निय-गुण निम्मियाइं पज्यय
 नामानि इति अहिसाप तिहां प्रतिमा तथा पूजानो नाम नयी तेहनो उचर तिहां अहिसानो नाम जाणो तेहनो अर्थ
 देयपूना छे पूजा पहवो दयानो नाम छे तो अजाण्यो इमस्यो प्रक्यणा करो छो बीजुं पूजा तो श्रीअरिहंत प्रतिमानी
 ते तो विनय तथा बैयावस्य ते अम्मितर तपना मेद छे ते तप मोखनो मार्ग छे भी सस्तराप्ययन सूत्रे २८ मे अव्य
 यने तपने मोखनां प्यार करण कख्या ते मध्ये गज्यो छे तथा तो पछे पुछ्यो जे बोलनी खबर न होये ते बिचारी
 धोलीये तथा आथके कोणे देहरा कराब्या तथा प्रतिमा पूजी तेहनो उचर श्रीसमवायाग सूत्रे तथा नवी सूत्रे सर्व
 भागम्नो नूष छे ते मध्ये ए पाठ छे तिहा उपासक वशानो नोष छे ते आलायो छे ते लखीए छे सेकिते सवास-
 गदसाओ तथासगदसागुण समणोवासगणं नगराईं उजाणाईं बेइआईं वणसंढाईं समोसरणाईं रायाणो अम्मा-
 पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह ओइआ पारलोईया इहिविसेसा मोगा परिआउ सुअपरिगहीया तवोवहाणाइ
 सीलययगुणवेर-मण पचक्खाणपोसहोयथास पडियज्जणा पडिमा-ओ उवसगसंछिइणाओ भउपकरकाणइया
 उ-यगमणं देवलोगगमणं सुकुउपआया पुण धोहि-उभो अंत किरिया आपरिज्जंति ए पाठ है इहां बैइयाइ अच्य देहरा
 तथा अिन प्रतिमा साग ग्यो इहा बैइय पहनो अर्थ बीजो धामे नही जे बननो अर्थ करे तेतो उचान बनन-उनो

पाठ जूदो छे कोइ साधुनो अर्थ करे ते घम्मायरीया प पाठ जूदो छे ज्ञाननो अर्थ करे ते सुय प पाठ जूदो छे ते
 वास्ते वैश्य शब्दे बिन प्रतिमानो अर्थ छे तथा तुम्हे पुच्छयो जे द्वारिका राजप्रहमे देहरा सया प्रतिमानो पाठ किहां
 छे तेहनो उचर नवीसूत्रे अणुतरोयवाइ तथा असगबना नौपनो पाठ जो ज्यो तथा तुम्हे कहेस्यो इतला बोल
 उपासफ वशा प्रमुखे दीसता नयी तेहनो उचर जे नवी तथा समकार्यागमे जे पाठ तेहनो कोण उत्थापी श्रके
 ते जो ज्यो तथा तमे पुच्छूं जे किणे भावके प्रतिमा पूजी छे तेहनो उचर घणे भावके प्रतिमा पुजी छे ते पाठ
 श्रीमगयतीसूत्रे तुंगीया नगरीना भावको धरणब्या लिहां अभिगय जीवाजीया इत्यादिक पाठ घणा छे तिहां
 पहयो पाठ छे असद्विज्जवेयासुदनागसुयभजक्खरक्खसकिंभरकिंपुरिसगल्लगघमहोरगादी-पदिं वेधगणेहिं निगाथा
 ओपाययणाओ अणतिकम्मणिज्जा निगये पायणेनिस्संकीया निफंसीया लच्छट्टा गहीयट्टा इत्यादि जे भावक कोइ
 जातिना देयतानो साहज याछंता नयी तो कोइ विजा देयतानी पूजा किम करे पहया भावक जे वेधने देय बुद्धि
 मानता ह्ये तेहनेज पूजे ते भावक, यियर आब्या तेवारे एकवार सर्व एकट्टा मिल्यां पहयो विचार कस्यो जे पहया
 निप्रयनो नाम संभल्यानो पिण महा लाभ छे सो तेहनो धांववा जावां सेवा करता तो महानिर्जरा महा पर्ययसान
 कहेवां मोक्ष धाय इम विचारी पोते पोताने घरे गया पछी सूत्रे पाठ छे ण्हाया कययलि कम्मा कयकोउयमगलपा
 यछिचा शुब्बा पायेसाइ पयरपरिहीया अप्पामहग्घाभरणालंकीयशरीरा सयाजोगिहाओ पठिनिक्खमति, तिहां
 नाप्पा ते अंघोलकीया कययलिकम्मा, ते वेधपूजा क्खिपी: कयकोउयमगल ते तिलकादिक कर्या पछी यल्ल पेह

કિંચે તાત્કાલ નાશકાર તરત્ત વર્ષી વરણી નિરુસ્થા વૃત્તિને સિદ્ધાપં રાજા તથા શિરામદત્ત મુદરરાજનશેઠ કમ મુખાદપુત્ર
પાત્રક વૈભવ મુગ્ધર્ષી સારક કાર્તિક શેઠ વાંદરા ગવા છે તેતારે કાગણિકમ્મા તથા વર્ષી ઘરે આવી સાહમીચહ્લ
કર્તે ૩ દીખા યાગા ત્રિશરવા તગરે ઘાગા વગવર્ષીમ્મા ૫ ગાઠ છે દ્રવ્યાશિક શ્રારક અન્ય વેચની પૂગા ન કરે
અન્ય ન વૃત્ત અશિર્યે વેવેનંત વૃલે તથા કોર કદરવે કાગણિકમ્મા વાઠ કઠીયારા પ્રમુલ અનેક ધાનકે છે તેમા
ભાગ છે આ વેલે વેવેનુદિ માને તે મેલને પુને યથા રાગદષ્ટ વાલકે ક્ષીમિ પુગા કરી દશે તે તો વાલકને માયત્રે
મુગા વર્ષાર્ષી મો કાં ન કરે માત્ર ૧૧ વાત્રક પૂગા કરાગા દીગે છે તો કાગણિકમ્મા ૫ વાઠનો યીજો અર્થ ઘાતે
દગા ઘો તથા દીખા મરોપ્તજ વાગ દીગે છે ૧૧ ઠિઠાં દરરા મરિમાનો વાઠ નવી તેદનો તરાર જે દીધને ઝગાયલા યથા
ભાગ વ્યુઃ। મરગયાગ વાઠા નવી તો દરરા કરાયાગ તો ઘરે સ્થાને રહે અને વહેલા દેદરા પ્રતિમા છે તે તો નવીચુત્રે
આવ્ધનો વધો તાર ગાનો તા મર્ત મનો વરગે તથા મુગે મુગુને તે તીપકર મદન્યપને ઉત્તં ગાયુ ગાયી શ્રારક
વર્ષાર્ષી વર્ષા નવી તેનો તાર વાગ વાઠા છે તે વાઠ ગાગા મુગ્રમા છે યથા મુમે ઉસ્વો જે પ્રતિમા વર્ષેગ્નિ દહ
છે તેદરા વચન મંગલના તેરને ધગ ન દુયે તે ઘોંઝે ને કારલે શ્રીમગાયતે તો ણિગણિકમા કશી વોઠાવી છે
દરલે શિરામદત્ત કરી વેગાવો તો મુને કલોર વચન સ્થાને વોલો ઘો તથા મુમે શિલી વંચના કરો ઘો તે ક્ષીગી તો
વર્ષાર્ષી તો શિવ વંશો ઘો શિવ મુગે કરાવો ને મગરાઠ મનમે તો શિવ છે તો ત્રિવર્ષિકમા વાંદરા શિવ પ્રગારા
વચન શિવ છે તથા મુગ્રમા મુગ્રના ગાઠની આગાના ઠાગની કરી છે તે વાઠ મર્ષીય છે તે વૈષ્ણ તે મુગ્રનો વડ

માન છે પ્રતિમાને ઘડુમાને સિદ્ધનો ઘડુ-માન છે તથા સુધર્મા સમામાદિ જિનની વાદા છે તે ધવનીક પૂજનીક છે તે તો અર્જીય સ્કય છે તથા તુમે લસ્યો જે પરવેશી રાજાપ પ્રતિમા કર્મ ન કરી તે પરવેશી શ્રાવક થયા પછી ફેટલોક જીવ્યા છે તે તથા સર્વ શ્રાધક પૂજ્ય કરાગી કરેણો નિયમ છે તથા પરવેશીપ તથા આર્ણવ શ્રાધકે કોઈક સાધુને પદિલામ્યા નથી તે માટે તુમ્હે સાધુને વિહરામ્યામે ઘોપ માનસ્યો પ વિષારી સ્યો જ્યો તથા લસ્યુ છે જે સુરીઆમે જે પ્રતિમા પૂજી તે રાજધાનીના મગહીક માટે પૂજાકરી તે ઠો સોડું બોલો છો પ પાઠ સૂત્રમે નથી સૂત્રમે તો પહયો પાઠ છે દિયાપ મુહાપ લેમાપ નિસ્સેસાપ આયુગામીયષ્ટાપ મલિસ્સઈ નિભેચસ ફહેવા મોહ મળીપ અર્થ છે તથા પન્ચા શબ્દે લે ઇહ લોકનો અર્થ છે ઇસ કહે છે તે મૂઠ છે ઘરુર વેષવાને અષિકારે પન્ચા શબ્દે આવતા મયનો અર્થ છે તથા આશારાંગસૂત્રે જસપુવિયિનો સસ પછાયિનો ઇશં પૂર્ય શબ્દે પૂઠલો મય પછા શબ્દે આવતો મય છીપો છે તથા પ મધે સમકિતનો જામતો ઘળો છે તથા તીર્યકર ઘાયાનો ફલનો પાઠ ઉવવાઈ મય્યે તથા પંચમહા વ્રત પાશ્યાનો પાઠ આશારાંગ મબ્દે તિહાં પળ દિયાપ ઇત્યાદિક પાઠ છે તે વે ઠેકાળે જામ માનો છો તો ષ્ચિનપ્રતિમા ઠામે ના સ્યાને કહોછો અને કિહાં જિનપ્રતિમા પૂજાનો પાપ કમ્બો નથી અને હોયતો વેસાલો તુમે સિસ્યુ જે મગયંતે હિસાની ના કહી છે તેતો અમે કિહાં કહ્હું જે હિસા કરવી, પણ મગયંતે કિસે સૂત્રે પ્રતિમા પૂજાની ના કહી નથી પ્રતિમાની ૧૭ પ્રકારની પૂજા સૂત્રે કહી છે તથા તુમે પ્રતિમાની પૂજા હિસામાં ગિળો છો તે ઇમનયી પ્રતિમાની પૂજાતો ષ્ચિનય તથા વેયાવધ ધર્મમા છે તથા પૂજા હિસાને ગળી તો ઠાળાંગે નથીમે પહતી સાશ્વીને સાધુ કાઠે તેમાં હિસા

ગણી નહીં તથા આચારાંગસૂત્રે શીલા સાધુ અજાણે પણ શર્કરાની મૂલે લૂણ શીહરીને પછે જાણે એ લૂણ શીહરાલ્ક્યો તે જાણી તે પોતે લાયકે પોતે પીયે તથા શીલા સાધુ સંમોગીને આપે તે સાયે પીપ તથા ચિપમ ઘાટે વેલને રુક્ષને છતાને ગુચ્છને અવલંબી સઠરે જે પાઠ આચારાંગસૂત્રે છે તથા મગવતી સૂત્રમે સાધુના હરસ કાઠે તેહને ક્રિયા કર્મ છાગે નહીં તથા મહિનાપચ્છી પૂતલીને કવલ મૂંક્યા તે માટે ધર્મમાટે દિસાકરી તથા સુબુદ્ધિ મંત્રીપ પાણી પલટાબ્ધ્યો તે ધર્મ માટે કરી પિણ મદબુદ્ધિ ન કબ્બા છે મગવતી સૂત્રે ૨૫ મે શતકે સાધુ શાસન માટે તેજો હેમ્યા મુકે તેહને આરાધક કબ્બો તથા જશ્દ્વીપદસ્તીપ નિર્વાણમહોચ્ચવ કબ્બો છે ધૂમકર્યા તે ચિણમચિપ ધમ્મોચિ પપાઠ છે ઇમ કેટલા પાઠ છીલીપ અનેક પાઠ છે તથા નવી સૂત્રે એ આગમ કબ્બા તે હત્યાપીને ૩૨ માનોહો તે કેત્તી આજ્ઞા છે તથા આવશ્યકસૂત્ર પરિક્ષમણા વિના સાધુ પળો આધક પળો દ્રવેલ નહી તે તુમ્હે આવશ્યકસૂત્ર પરિક્ષમણો માનતા નથી તો આવકપળો ને સાધુપળો કેમ ઘરાયોહો શ્રીમગવતીસૂત્ર સાધુ સાધ્વી આયક આવીકા પચમા આરાના હેહ્લા પર્યત કબ્બા છે તે તુમારી શ્રદ્ધામેં દિવળાં સાધુ સાધ્વી કોળછે તથા સૂત્રે આચરલ તપાધ્યાય કુલ ગળની નિશ્ચાયે નિષ્કરે તે આરાધક તે વમે કોની નિશ્ચાયે વિષરોહો તે હિસ્યો તથા શ્રીમગવતીસૂત્રે ગાયા છે પહમો ગીયત્ય વિહારો, શીયોગીયત્યનીસીઓ મખિઓ, ઇવો તશ્ય વિહારો, નાણુમાર્ચો ચિણવરેદિ ૨ પહનો અર્થ ગીતાર્થ હોય તે પોતે વિહાર કરે અથવા ગીતાર્થની નિશ્ચાયે વિહાર કર્યો પહથી તીજા વિહારની અરિહંતે આજ્ઞા શીલી નથી, તે માટે તુમે કિસ્યા ગીતાર્થની નિશ્ચાયે વિહાર કરોહો તથા યોગ તપાપાન થદીને સિચાંત મજે તેપણ કાચક આચા-

રાંગાવિકસ્ટ્ર મળે નહી તે નિરીયમાં કચ્છો છે જે મિક્ષુ અષ્ટરથીય ધા ગારથીય ધા ધાવણ ધાપઈ ઘાઠ
 જતં સાઈજ્ઞતિ ઠસચોમાસીયં પરિહાર ઠાળં એ ગૃહસ્થાને સૂત્ર યંધાવે અથવા ધાંધલાને અનુમોવે તેહને ધાર માસનો
 પાસ્યો ધરિત્ર જાધે તથા પ્રમખ્યાકરણસૂત્રે અહ કેરીસીયં પુણ સઘનુમાસિયવં જલયદ્ય્વેઈં ગુણેઈં પખ્ખવેઈં
 કમ્મેઈં ધઠ્ઠિવેઈં આગમેઈં નામાકસ્થાયનિયાય સયસગત્તિઅસમાસ સંધિપવ જોગવળાદિ ક્ષીરીયાધીઠીણસરંધાતસ
 રયિમ્મિ યદ્દજુતં માસિયવં તથા અનુયોગદ્વારે ૭ નય, ૪ નિક્ષેપા, ૩ કાલ ત્રીન લિંગાત્રીન, જાપ્યાધિના સપદેશ
 દેવો છે મારગ નથી ઇત્યાદિક અનેક ઘોલછે તે ગીતાર્યની સેવનાથી પામીયે ઇતિમદ્રં લેકેઈં શ્રીજિનમતિમાની
 પૂજામધ્યે ફૂલ પૂજાની શંકા કરે તેહને કહીયે જે શ્રીરાયપસેનીસૂત્રે ૧૭ મેઘી પૂજાનો પાઠછે પુષ્કારુરૂણ ૧ માલા
 રૂરૂણ ૨ તહ ધક્ષારુરૂણ ૩ તથા પુષ્કગિહ ૪ પુષ્કપગરં ૫ પતલી પૂજા ફૂલની છે તેમટે પૂજા ફૂલની તે પ્રમાણ છે,
 તથા શ્રીમગધતીસૂત્રે પળ સૂરીઆમની પેરે પૂજાની મલામળના પાઠ અનેક છે તથા જ્ઞાતાસૂત્રે ટ્રીપવીને અધિકારે
 ૧૭ પ્રકારી પૂજાનો પાઠ છે સમવાયાગસૂત્રે ચૌતીસ અતિશયને અધિકારે જલયયલય માસુરદસચ્ચવક્ષેણ જાણુ
 સ્નેહપ્પમાળમિત્તેણં પુષ્કપુજોવયાર ક્ષેઈં ઇત્યાદિ પાઠ છે ઇહાં સમધાર્યાગસૂત્રમેં દેવતા મનુષ્યનો નામ કચ્છો નથી તથા
 શ્રીવયયાર્શસૂત્રે કોણિકને અધિકારે શ્રીધીર સમોસર્યા તેયારે અનેકજન ધપાથી નિક્કસ્યા જે અપ્પેગઈયા વંદળ ધચ્ચિયાપ
 મપ્પેગઈયા પૂયળવચ્ચિયાપ અપ્પેગઈયાઅસુયં સુયસ્સામો અપ્પેગઈયાવિલાર્શઅઠ્ઠાઓ હેઓઆઈ ય પસિણાઈ ગહિસ્સામો,
 ઇત્યાદિ પાઠ છે તિહાં પૂયળવચ્ચીયાપ ૫ પાઠનો અર્થટીકા મચ્ચે પૂજન પુણ્પમાલાવિના ઇમ કચ્છો છે ઇહા શ્રી તીર્થકરને

पुष्पनी पूजादीसे छे एपाठ श्रीभगवतीसूत्रेपणछे तथा नवीसूत्रे श्रुतज्ञानने पाठे से इमं अरिहतेहि मगयंतैहि चव्यम-
 नाणदंशण धरेहि तिसुक्क निरक्खीय महीअ पूर्णपहि पाठनो अयं टीकाकारे पिणमहीयथाब्बे चंदनादि पूरुपहि पुष्फमा
 छादिके करीने ए पाठ अनुयोगद्वारमध्ये पण छे इम पुष्फपूजाना अनेक पाठ छे ते माटे छंका न करवी वली केइक
 इम कहे छे जे फूल वेघाता जठे से चढावथा पण पोते चूटी चढावथा नही तेपण अच्चाण्यु कहे छे जे श्रीजीवाग्नि
 गमसूत्रे तवेणं से विजयदेवे पोत्थयरयणगिह्ण पो० रयणं गिह्णो० पोत्थयरयण मुवति पो० २ सा पोत्थयरयणं विहा
 रेति पो० २ सा पोत्थय रयण वापइ पो० २ सा घम्मियं धवसायगेह्णतिघ० २ सापोत्थयरयण पठिनिक्खमति पो० २
 सा सीहासणाओ अभ्मुहंति सी० २ सा धयसायसमातो पुरत्थिमिह्ण दारेणं पठिनिक्खमइपु० २ सा लेणेयनंदा पुक्ख
 रणी तेणेव चवागच्छतिव० २ सा णवापुक्खरिणीं अणुप्पयाणिण करेमाणे पुरत्थिमिह्णं तोरणेणं अणुपविसतिअ० २
 सा पुरत्थिमिह्णेणं तिसोपाणपडिस्स्येण पच्चोरुहतिप० २ सा हत्थपावं फक्खालेतिइ० २ सा एग मइ सेतं रज्जवामय
 थिमलसलित्तपुष्ण मत्तगयमहामुहागिइसमाणं भिंगारं पगिह्णतिप० २ सा जाइ तत्थ चप्पलाइ आवसत्तपचाइं सहस्सप
 चाइं चाइं गेह्णति २ चाणंदातो पुक्खरिणिओ पुत्तुचरेइप० २ चाजेणेव सिञ्जायत्तणे तेणेव पाहारेत्यगमणाइ सपुणं
 तंपिजयं देयं चचारी सामाणिय साहस्सीओ, जाव अण्णेइहवे थाणमंतरा देवा देवीओ अय्येगतिया चप्पलहत्थ
 गता जाव सत सहस्स पणहत्थगया विजय देवं पिठिओ अणुगच्छइअ० सा इहां फूल चूटी कीघां छे एखाजावे
 विजयदेवे पोते थायवीसे चवरीने फूल चूटी लीघां तथा सामानिक देवता तथा बीजे देवताये पिण कूळ पोठाना हाथबी

लीषां छे इहां कोईं पूछस्ये से तिहीं कोइ माली नयी ते माटे पोते छिषा तेहनो उत्तर जे माली नयी पिण देयता चाकर
 उोक घणाछे तेहनेज पासे का न मंगावे, जो पुस्य आप्यनो विधि होवे तो पण पोसाना हाययी लीषानो विधि छे ते
 माटे पोते घायडी मध्ये उतरी लीषाछे तथा श्रीरायपसेनी सूत्रे सूरियाभ अधिकारे ततेणं से सूरियाभेदेवे पोत्थपररणं
 गिहृइपो० गिहृत्ता पोत्थय रयण मुयइपोत्थय रयणं विहादेइवि० चा पोत्थयररणं वायति वा० चा घन्मिय धवसायं गिहृ
 इगि० चि पोत्थय रयण पडिणिक्समति० चा २ सिहासणओ अग्मुट्टे २ चा धवसाय समाओ पुरत्थिमिलेण वारेणं पडिनि
 पक्षप्रइय० चा जेणेय नंदापोक्खरणी तेणेव च्यागच्छइ ४० चा नंदापोक्खरणी पुरच्छिमिलेणं तोरणेणं तिसोपाणपडि
 रुवेण - पद्योरुइति० २ चाहत्थपायं पक्खालेइ २ चा आर्यते चोक्खे परमसुइभूप पणं सेयमहं रययामय विमल
 छल्लिउपुण्णं मत्तगयमुहागितिसमाण भगारं पगिहृत्ति चा आइ तत्थत्तप्पलाइं आयसयसहस्स पचाइं गिहृत्ति णंदाओ
 पुक्खरिणीओ पचोरुहई० २ चा जेणेव सिद्धायतणे तेणेव पद्दारेत्थ गमणाप तपणं ठ सूरियाभ वेधं चत्तारि सामा
 णिय साहस्सीओ जाय सोत्तस आयरक्ख देय साहस्सीओअणेय बहवे सूरियाभविमाणे जावदेवा वेधीओ अर्ये-
 गईया तप्पलहत्थगया जाव सत्त सहस्स पत्तहत्थगया सूरियाभ देवं पिठुओ समणुगण्ठंति ततेण सूरियाभेवेवं
 पद्दये आमिओगिय देवाय देधीओय अर्येगइया कलसहत्थगयाओ जाव अर्येगइया धूसकडुच्छहत्थगया इठु
 तुठ्ठा जाय सूरियामं देवपिठुओसमणुगण्ठंति ततेणसे सूरियाभेवेवे चवहिं सामाणियसाहस्सीहिं जाय अण्णेहिं-
 य य-इहिं सूरियाभविमाण वासीहिं देवेहिं देवीहिंसद्धिं संपरिखुटे सवढीप जावणाइयरवेणं जेणेव सिद्धाययणे तेणेव

त्रागाञ्चर गिजायन पुगण्डिमिाल शोरेण अणुपयिमति० २ सा नेणय जिणपडिमात्र तेणेय त्रयागञ्चइ जिणपट्टि
 नाना भागेण पमानं करेतिक० सा २ उमद-रथगं गिहइगि० सा २ जिणपडिमाणं लोमहृत्थएण पमज्जइय० २
 णा जिणपडिमाभा युगभिजागंपादपणसुजेति ह्यजिजा मरसेण गोभीसचदणेणं गायानं अणुलिप्पइ २ सा जिण
 गटिमानं मइयोई दयदूगार उपगार नियमेइ० २ सा पुक्ककरुणं मत्ताकरुणं नूण्णाकरुणं गघारुइणं घण्णाकरुण
 सुत्ताकरुणं पत्थारुइणं भ्रामरनारुइण करेइ करेणा आमत्ता सत्त पिउत्थयधारियमाइदामकळायं करेइ० सा करगगइ
 गदिण करएणरगभट्टपिण्णमुइणं दमच्चरणं कुमुमणं मुक्क पुण्ठ पुजोययारकळिय करेति करेसा जिणपडिमाण पुरत्तो
 मत्तएई मइइई मेणई रयणामयई अच्चरमनमुळदि मट्टइ मगळे आलिइइ तंजहा तरियय जावदप्पण तयानंतर च णं
 पदएइ रएणारएणगठियविनउददकंपामनिरयणमसिपिचं काडागुठ पवर गुंदरुक्कुलुपूपूमथमपत गंपत्ता माणु
 थिंमि पूरादि थिंमुपेनं वेगुत्थयमयं पूरुठुएण पगादिय पयसेण पूयं दावुण जिणयरारणं अट्टसयथिसुद्ध गथ सुचंदि
 ममुत्तगइ मइरिणदि गंपुणइ मगदुपयादि पपोरुइइ० सा याम जाणु अयेइ दादिण जाणुं घरणिताइसि निद इ
 णिरगुणो मुजानो पग्गिात्तनिणोदेति २ सा इमिं पयुण्णमइ इमिं पयुण्णमिचा करयत्तपरिगदियं सि-रसायत्तं मरथप
 मत्तत्तइइपं पयामी गवाणुण मरि-इत्तानं वायमंपत्तान थंदति पमंमइ० २ सा परायपसेणी सुत्रे पाठे छरियामे
 नेण हाप द्दुत्तं पूंणी मीपा ए गामानिक ममुग पागे मंगप्पा नथी तथा जउद्वीपयत्तमीमे जग्गामिंयक जेणेय मीरोद
 प्पुइ तेनेर मागञ्चइ० सा मीरोदगं गिहसि २ सा जाइं तएत्तएत्तइं पत्तमाइ जायसदसए पगाइं तापगिहसि० सा

इत्यादि सूत्रने पाठ हाथना चूट्या फूल छेयाना छे तथा कोइक कहसे जे एतो चूट्या नयी सहेजे पख्या लीषां छे तेहने
 कहीये छे जेह हज्जार गमे सहेजे पख्या धावडी मध्ये हवेज नही तथा नगइने अधिकारे नगइ राजाप आंघानी मांज
 रीयो पोते चूटी लीषी तेयारे कटक घघे चूटी लीषी ते पाठ लवयायी मध्ये जोजो अक्षयाणु जुलनिगओपेच्छइ कुसुमा
 चूय-राइणापगा मजरी गहीया एवंलघावारेण तेणं मजरीपच पवाल लयाइ गहियाइ कट्टाधिसेसोकओ पठिनियचओ
 पुच्छइ कहे सोरुख्लो जमचेणा दंसीओ कह एसअवत्योभणइ तुम्हेहि एगामजरी गहीया पच्छा सखणं गहेतेणं एवं
 कयो इहा गहीय शक्ये चूट्यानो अर्थ छे तथा कोइ कहेस्ये जे एतो देवताये कयो छे ते भावके कखानो किहां पाठ नयी
 तेहने कहीये जे ओ देवतानी करणी ताहरे न करवीतो शक्य छे तथा खात्र केम मानो छो खात्रनो कल्लस
 होलोछो ते देवतानी करणी छे तथा सूरियामनी पूजानी भलामण त्रौपवीने पाठे छे देवतानी पूजा करणी तथा मनु
 व्यनो पाठ एकज छे ते मांटे देवतानी पूजा करणी श्रावक करे ए भद्धा प्रमाण छे तथा जे फूल चूटवानी ना कहे ते
 वीटना जीयनि कीलामना मांटे तेयारे फूलनी पूजा किम करी शके अने फूलनी पूजानो तो सूत्रे पाठ छे तथा जे
 पूजाने हिसामे गणे तेहने कहीये जे श्रीप्रभब्याकरण सूत्रे प्रथम संवरद्वारे अहिसा ना १० नाम कखा छे तिहां पूजा
 ते दया कही छे ते पाठ लिखीये छे अमठ सब्यस्सधि अनाथाओ सुक्खपवणी पूया धिमलप्पझा निम्मल करती एव
 माइणि नियगुण निम्मीयाइ पज्जाय नामाणि हुंति अहिसाप भगवइए इत्यादि पाठे पूजा ते अहिसामे गणी छे तो
 तुम्हे हिसामे किम गणोछो तथा भगवती सूत्रे सुमयोगं पडुच्च अणारमी ए पाठ शुभयोग प्रवृत्तिने आरमनी ना कही

છે ધિનય તયા વેયાવઘ તે તપના મેદ છે તપ તે મોશ્વ માર્ગ મધ્યે શ્રીવત્સરાષ્ટ્રયને ૨૮ મે અલ્પયને કમ્પો તે તુમે
 હિસામે કેમ કહોછો તયા ચિવશાર સૂત્રે સિદ્ધ વેયાવઘેણ મહાનિષ્ઠરા મહાપજ્જવસાણ ભવતિ તે માટે સિદ્ધ વેયાવઘ તે
 પૂજા છે તયા કોઈ પૂછે જેઆવકે પ્રતિમા કિહાં પુશ્ચી છે તેહને કહેવો જે શ્રીમગવત્તી સૂત્રે તુંગીયાનગરીને શ્રાવકે પૂજા
 કરી છે ઘાંશ પુવ્કલી ચે પૂજા કરી છે તયા સમપાંગ સૂત્રે દ્વાપદ્ધાંગીની હુંહીને અધિકારે સપાસક દશાની હુંહી
 મયે વશ શ્રાવકનાં વૈત્ય પહવો પાઠ છે વૈત્ય તો સાશુ ધાય નહી જ્ઞાન ધાય નહી તે સર્થના પાઠ શુવા છે તયા નવી
 સૂત્રે પિણ પાઠ છે તયા નવી મધ્યે જે આગમ કહ્યા તે સર્વ માને વેજ સમક્કિતિ જાણવો શ્રીશ્વયુગોદ્ધાર સૂત્રે નિર્યુ
 કિની શા કહી છે તે નિર્યુક્તિમધ્યે પૂજાના અનેક અધિકાર છે તયા તેંદુલ્લેયાલીયપપ્પાની ટીકામધ્યે સમવસરણના
 ફૂલ સચિષ તે કપર સાધુ સાષ્થી થાહે પ્રવચનસારોદ્ધારની ટીકામે પળ ૫ સમઠ છે તયા કોઈ કહત્યે જે ફૂલને પ્રોહ
 પરોપયા નહી તેહને કહીમે જે હીર પ્રભમધ્યે પાઠ છે તયા વશ્વગંધોવમેહેવતિ શ્લોક વ્યાસ્થાયતે શ્રાવધિન કૂત્યે પ્રોત
 પૂજાશ્વરાણી વર્ષતે તયા આષ પયેતુ શ્રીચિનયહ્મ સ્વરિ કૃત પૂજા ફૂલકેડપિ પ્રોત પુવ્પાશ્વરાણિ સતિ તયા હરિમદ્ર
 સ્વરિ કૃત પૂજા પશ્વત્કે અશરેશ્વ તદ્ કીર ૫ ગાયાના આસયથી પિણ પ્રોયા ફૂલની શા જ્ઞાપ છે તયા સમાસ્થાતિ
 વાવક કૃત પૂજા પટલર્મા પિણ પ્મસજ જ્ઞાપય છે



इम आणी शासनरुचि । करजो शुतभम्यास ॥ पामी चारित्रसपदा । छेहेसो छीलियिछास ॥ १३ ॥
 दीपचन्द्रगुरुआत्ने । सुपसार्ये चह्लास ॥ देवचंद्र भविद्वितभणी । कीचो प्रथमकाश ॥ १४ ॥
 सुणसे भणसे जे भविक । एह प्रथ मनरग ॥ ज्ञानक्रियाअम्यासतां । छेहेसो तस्यतरग ॥ १५ ॥
 द्वादशसार नयचक्र छे । महवायिकृत पृढ ॥ सप्तशतिनय षाचना । कीची सिद्धा प्रसिद्ध ॥ १६ ॥
 मल्पमतिना चिसमे । नावे ते विस्तार ॥ मुख्यपूलनयमेवनो । भाव्यो अल्पविचार ॥ १७ ॥
 खरतरसुनिपति गच्छपति । श्रीजिनचंद्रसरीश ॥ तास शीस पाठकप्रवर । पुन्यप्रधान मुनीश ॥ १८ ॥
 तसु चिनथी पाठकप्रपर । सुमतिसागर सुसहाय ॥ सापुरग गुणरत्ननिधि । राजसार स्वजाय ॥ १९ ॥
 पाठक ज्ञानधर्म गुणी । पाठक भीदीपचंद ॥ तास सीस देवचंद्रकृत ॥ भणता परमानंद ॥ २० ॥

इति श्रीनयचक्रवियरण समाप्तम् ॥

भाषार्य श्री विमलचन्द्र शान मठकार जयपुर

इति जीवविचारादिप्रकरणसंग्रहः तथा

आगमसार-नयचक्रसारः समाप्तः ।

